नदेज्दा क्रूप्स्काया

श्रम-शिक्षा और चरित्र-निर्माण

प्रगति प्रकाशन

मास्को

पीपुल्स पब्लिशिंग हाउस (प्रा.) लिमिटेड

५ ई. रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-११००५५

विषय-सूची

परिच्छेद २। पोलीटेक्निकल शिक्षा

क्रूप्स्काया ने ही लेनिन की पहली और सबसे अच्छी जीवनी लि
लेनिन के बारे मे उनके सस्मरण महान नेता के जीवन और कार्यक
की जानकारी का समृद्ध स्रोत हैं।

"इल्यीच के निधन के पश्चात मै बारबार वह सब पढ़ने ल
जो उन्होंने सस्कृति के बारे मे लिखा था, और तब से मै अनका
सभी लेखो को इल्यीच के शब्दो के प्रसग में देखती हूं," क्रूप्
ने लिखा था।

शिक्षा, चरित्र-निर्माण, सस्कृति और कला के प्रश्नो पर लेनि
के कथनो के सकलन, अध्ययन और प्रचार का काम क्रूप्स्काया ने
शुरू किया था।

नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया का जन्म १४ (२६) फरव
१८६६ को पीटर्सबर्ग मे हुआ था। उनका परिवार अपने युग के अ
सामाजिक विचारो से प्रभावित था। उनके पिता कोन्स्तान्तीन इग्ना
तिच क्रूप्स्की का सैनिक सेवा के दिनो मे रूसी अफसरों के प्रगति
सगठन के साथ सपर्क बना था। सैनिक-विधिक अकादमी में शिक्षा प
के पश्चात उन्हे उयेज्द के प्रधान के पद पर पोलैंड मे नियुक्त कि
गया। यहा कोन्स्तान्तीन क्रूप्स्की इस बात का भरसक प्रयत्न करते
कि जारशाही अधिकारी अत्याचार न कर पाये, स्थानीय जातियो
उत्पीड़ित न कर पायें। प्रवासियो के जरिए उनका प्रथम इंटरनेशन
के साथ सबध था। उन पर क्रांतिकारी विचार रखने का सदेह कि
गया और अराजभक्त घोषित करके राजकीय सेवा से हटाकर उन
मुकदमा चलाया गया। छह साल बाद (१८८० मे) सीनेट (तत्का
रूस के सर्वोच्च अपील न्यायालय) ने उन्हें निर्दोष घोषित कि

माता-पिता बेटी की शिक्षा-दीक्षा की ओर बहुत ध्यान देते
सामाजिक जीवन के अधेरे पहलू कभी नहीं छिपाते थे, विभिन्न सा
जिक स्तरों और जातियो के बच्चो के साथ मिलने-जुलने, खेलने
लिए उसे प्रोत्साहित करते थे।

नदेज्दा की चेतना का निर्माण बचपन की छापो तथा कठिना
और खतरो के सम्मुख माता पिता के साहस के उदाहरण के प्र
से हुआ।

बचपन से ही शिक्षा-कार्य विशेषकर देहाती इलाको मे शि

कार्य मे नदेज्दा की रुचि जाग गई थी। ग्रामीण अध्यापिका और क्रातिकारी अ० त० यावोर्स्काया ने तथा जिस प्राइवेट स्कूल मे नदेज्दा पढती थी, उसके अग्रणी शिक्षको ने उनकी इस रुचि को बढाया।

१४ वर्ष की आयु मे नदेज्दा पितृ-सुख से वचित हो गई। अब पढने के साथ-साथ ट्यूशने भी करनी पडीं।

वयस्क होकर नदेज्दा क्रूप्स्काया जनता की खुशहाली के लिए सघर्ष का अपना रास्ता खोजने लगी। १८८६ मे क्रूप्स्काया पीटर्सबर्ग मे गणित की उच्च शिक्षा पाने लगी और शीघ्र ही विद्यार्थी मडली मे शामिल होकर मार्क्स-एगेल्स की रचनाओ का गहन अध्ययन करने लगी। वह इस विश्वास पर पहुची कि " न तो इक्के-दुक्के लोगो के आतक मे और न ही तोलस्तोय के आत्म-परिष्कार मे रास्ता खोजना चाहिए। शक्तिशाली मजदूर आदोलन ही असल रास्ता है। मनुष्य जिस बडे से बडे सुख की कामना कर सकता है, वही मुझे मार्क्सवाद ने दिया है। यह है इस बात का ज्ञान कि किधर जाना चाहिए और उस ध्येय की अतिम विजय मे निश्चिततापूर्ण विश्वास, जिससे अपना जीवन जोडा है।"

मजदूरो के निकट आ पाने के लिए, उनका कुछ हित कर पाने के लिए १८६१ से क्रूप्स्काया पीटर्सबर्ग के एक मजदूर इलाके मे रवि-वारीय सध्या मजदूर पाठशालाओ मे पढाने लगी। यहा मजदूरो के साथ उनका घनिष्ठ सपर्क बना। १८६६ मे गिरफ्तार होने तक वह यहा सक्रिय शिक्षा-कार्य और राजनीतिक कार्य करती रही। अपने क्रातिकारी कार्य को क्रूप्स्काया ने कभी भी शिक्षा-कार्य से अलग नही किया, इस कार्य को वह पेशेवर क्रातिकारी के अपने जीवन का एक अभिन्न अग मानती थी।

१८६३ मे जब लेनिन पीटर्सबर्ग आ गये तो क्रूप्स्काया उनके द्वारा सचालित मार्क्सवादी मडलियो और उनके द्वारा स्थापित 'मजदूर वर्ग की मुक्ति के लिए सघर्ष करनेवाली लीग' मे सक्रिय भाग लेने लगी। उन्होंने लिखा है "व्लादीमिर इल्यीच से मुलाकात होने से पहले ही हम दोनो क्रातिकारी मार्क्सवादी बन चुके थे, इस बात की हमारे सयुक्त जीवन एव कार्य पर छाप पडी।"

क्रूप्स्काया अपने छात्रो के जरिए मजदूरो के साथ लेनिन का सपर्क

ो सकते है। उन्होंने लिखा : " रास्ता सदा आसान नहीं था, लेकिन
स बात पर कभी कोई सदेह नही हुआ कि रास्ता सही है। सभवत,
लत कदम उठाये गये, ऐसा होना ही था, लेकिन गलतियां ठीक की
ाती थी और आंदोलन की विशाल लहर लक्ष्य की ओर बढती रहती
ी। " सोवियत शिक्षाविज्ञान मे एक भी ऐसी बडी समस्या नहीं
ी, जिसके हल पर क्रूप्स्काया ने उल्लेखनीय प्रभाव न डाला हो।
शिक्षा सबधी उनके विचार अपने समय से बहुत आगे थे और उनका
हत्व आज भी बना हुआ है।

चरित्र-निर्माण का सार, जीवन के साथ स्कूल का सबध, बौद्धिक
शिक्षा का श्रम शिक्षा और पोलीटेक्निकल शिक्षा के साथ सबध, शिक्षा
ा अंतर्य और उसके सगठनात्मक रूप, वैज्ञानिक विश्वदृष्टिकोण का
निरूपण, बाल कम्युनिस्ट आदोलन के अतर्य एव सगठनात्मक रूपो
े आधारभूत सिद्धांत, स्वप्रबध के प्रश्न, स्कूल और परिवार के परस्पर
बध, शिक्षक की भूमिका और स्थान, उसका प्रशिक्षण आदि प्रश्नों पर
उनके विचार ही सर्वप्रथम ऐसे विचार हैं।

क्रूप्स्काया के शिक्षा सबधी बहुपक्षीय कार्यों मे एक आतरिक एकता
, वे सब प्रमुख सामाजिक-शैक्षिक समस्या – नव मानव के चरित्र-
निर्माण पर केंद्रित हैं।

क्रूप्स्काया उच्चत: शिक्षित व्यक्ति थी, उन्हे कई विदेशी भाषाओ
ा ज्ञान था। वे उन लोगो की सख्त भर्त्सना करती थी, जो अतीत की
शिक्षा संबंधी धरोहर से इन्कार करते थे, साथ ही उन लोगो की भी,
ो बुर्जुआ शिक्षाशास्त्र के विचारो को यत्रवत ग्रहण करते थे। वैज्ञानिक
कम्युनिज्म के विचारो को सृजनात्मक ढग से प्रयुक्त करते हुए उन्होंने
आश्वस्तकारी ढंग से यह दिखाया कि नई सस्कृति, नई शिक्षा-पद्धति,
नये स्कूल का निर्माण अतीत की धरोहर को आलोचनात्मक दृष्टि से
ग्रहण करके और मानवजाति द्वारा सचित ज्ञान को सुदृढ आधार बनाकर
ही किया जा सकता है।

सैद्धांतिक प्रस्थापनाओ को जीवन के साथ, स्कूलों के व्यावहारिक
कार्य के साथ घनिष्ठ रूप से जोडते हुए क्रूप्स्काया ने सोवियत स्कूली
शिक्षा पद्धति के विकास की वस्तुगत नियमसगतियो का पता लगाया।
समाजवादी समाज मे स्कूली शिक्षा और चरित्र-निर्माण के लक्ष्यों एव

नीति और प्रतिगामी शिक्षा सिद्धांतों व स्कूली शिक्षा के बीच गहरा संबंध उघाड़ा। उन्होंने लिखा "बुर्जुआ वर्ग के हाथों में स्कूल अधिकाधिक हद तक उसके वर्ग-प्रभुत्व को सुदृढ़ करने का साधन बनता जाता है। बुर्जुआ वर्ग इस साधन को यथासंभव परिष्कृत करने, उसे अधिक सूक्ष्म अधिक कारगर बनाने 'शिक्षा-दीक्षा की नयी विधियां लागू करने नयी परिस्थितियों के अनुकूल बनने, उन पर नियंत्रण पाने' के यथासंभव प्रयास करता है।"

अपनी शिक्षकों को सोवियत सत्ता के गिर्द एकजुट करने के काम में भी क्रुप्स्काया ने बहुत परिश्रम किया। पायोनियरों, कोमसोमोल (युवा कम्युनिस्ट संघ) के सदस्यों के साथ उनका घनिष्ठ संपर्क था, हजारों मेहनतकशों के साथ उनका पत्र-व्यवहार चलता था। आत्मा की सच्ची महानता और उच्च संस्कृति के साथ जो विनम्रता और सादगी पायी जाती है वह क्रुप्स्काया के चरित्र का अभिन्न लक्षण थी। यह सब लोगों को उनकी ओर आकर्षित करता था, उनके साथ दुख-सुख बांटने की प्रेरणा देता था। क्रुप्स्काया असाधारण इच्छा बल और सहनशक्ति की धनी थी। लेनिन की मृत्यु पर गहरे सदमे में भी उन्होंने बहुत ही सादगी भरा वह भाषण दिया कि किस प्रकार लेनिन का कार्य जारी रखा जाना चाहिए। अपने एक निकट मित्र के नाम पत्र में उन्होंने लिखा कि अब वह ब्लादीमिर इल्यीच के बारे में, उनके काम के बारे में ही सबसे अधिक सोचना चाहती हैं, उनकी रचनाएं ही पढ़ना चाहती हैं। "लेकिन दूसरा काम भी करना होगा।" और वह पूरे तन-मन से काम करती रही।

कम्युनिज्म के निर्माण में स्कूल की भूमिका और स्थान के बारे में क्रुप्स्काया के प्रमुख विचारों पर हमारे देश में सफलतापूर्वक अमल हो रहा है। पोलीटेक्निकल शिक्षा की ऐसी पद्धति बनायी गयी है जिसके मूलभूत सिद्धांत लेनिन की रचनाओं में निरूपित हैं। आधुनिक सोवियत स्कूल युवा पीढ़ी को बुनियादी ज्ञान देता है, उसे मानसिक और शारीरिक श्रम के लिए तैयार करता है, उसके लिए अपनी इच्छानुसार और विवेकसंगत ढंग से व्यवसाय चुनने के अवसर सुनिश्चित करता है। स्कूल में जीवन के प्रति सचेतन रुख अपनाना, नये समाज के निर्माण में सक्रिय भाग लेना सिखाया जाता है।

और व्यायाम के साथ जोड़ना न केवल सामाजिक उत्पादन बढ़ाने का एक नितान्त महत्त्वपूर्ण ढंग होगा, बल्कि नये समाजवादी समाज के सर्वतः विकसित सृजनात्मक श्रम के लिए बहुमुखी प्रशिक्षित लोगों को शिक्षित करने की विधि भी होगा, शारीरिक और मानसिक श्रम की प्रतिस्पर्धता खत्म करने का एक रास्ता होगा। क्रूप्स्काया मार्क्स के इस विचार पर खास तौर से जोर देती थी कि मजदूर वर्ग द्वारा राजनीतिक सत्ता ले लेने पर ही उदीयमान पीढ़ियों को पोलीटेक्निकल शिक्षा के द्वार खुलेंगे।

पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के गठन में प्रमुखतम प्रश्नों के हल में लेनिन की असाधारण भूमिका पर भी क्रूप्स्काया ने अनेक ज्वलन्त पृष्ठ लिखे हैं। क्रूप्स्काया इस बात पर जोर देती थी कि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा को नये समाज के निर्माण का राजकीय-राजनीतिक कार्यभार मानते थे और उसे शिक्षण के ऐसे मार्क्सिक सिद्धात के रूप में देखते थे, जो शिक्षा का ध्येय और स्वरूप निर्धारित करता है। उनके शब्दों में लेनिन यह आवश्यक समझते थे कि "श्रम सभी किशोरों के लिए अनिवार्य हो और शिक्षा के साथ उसका घनिष्ठ संबंध हो"। अपने कार्यकलापों में क्रूप्स्काया लेनिन के इन निर्देशों का पालन करती थी कि कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा का ध्येय है "बहुमुखी विकसित और बहुमुखी प्रशिक्षित लोगों को" तैयार करना, "ऐसे लोगों को, जिन्हें सब कुछ करना आता हो।"

महान अक्तूबर समाजवादी क्राति के बाद नई सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियों में पोलीटेक्निकल और श्रम-शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण के सिद्धात तैयार करते हुए क्रूप्स्काया ने पोलीटेक्निकल शिक्षा की मार्क्सवादी-लेनिनवादी समझ की शुद्धता बनाये रखने के लिए संघर्ष किया। उन्होंने शिक्षा-दीक्षा के बुर्जुआ सिद्धातों का, श्रम-शिक्षा के बारे में महान चिंतकों के जनवादी विचारों का अपने वर्ग-हितों में उपयोग करने के बुर्जुआ शिक्षाशास्त्रियों के प्रयासों का आलोचनात्मक विश्लेषण किया।

प्रस्तुत पुस्तक में क्रूप्स्काया के वे लेख, आदि संकलित हैं, जिनमें पोलीटेक्निकल शिक्षा और चरित्र-निर्माण की उनकी पद्धति की तस्वीर हम पाते हैं।

आवश्यकता, श्रम से लगाव और आदर की भावनाएं, सामूहिकतावाद और अपने काम के प्रति दायित्व की भावना विकसित होती है, जिससे वे श्रम सबधी क्रूप्स्काया के विचार विशेषत: तात्कालिक महत्व के हो गये है।

श्रम-कार्य के दौरान चरित्र-निर्माण की समस्याओं पर सामाजिक दृष्टि से उपयोगी कार्य के सदर्भ मे भी क्रूप्स्काया ने गहराई से विचार किया। प्रस्तुत सग्रह मे उनके वे लेख दिये गये है, जिनमें सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम के शिक्षा सबधी सिद्धात और शैक्षिक मूल्य निर्धारित किये गये है। क्रूप्स्काया के मत मे सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम बहुत हद तक जीवन के साथ सबद्ध तथा उन्नत उत्पादनशील श्रम के लिए स्कूल छात्रो की नैतिक-मानसिक तैयारी सुनिश्चित करता है।

चौथे परिच्छेद मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के एक अग के रूप में व्यवसाय के चयन की समस्या को समर्पित क्रूप्स्काया की रचनाएं दी गयी हैं। व्यवसायो के चयन का कार्य सगठित करने के बारे मे क्रूप्स्काया के व्यावहारिक परामर्श आज भी स्वय छात्रो व देश की अर्थव्यवस्था के विकास – दोनो के लिए बहुत रोचक हैं।

सोवियत शिक्षाशास्त्र की सस्थापक क्रूप्स्काया की शिक्षा सबधी धरोहर नव मानव के विकास के सिद्धात एवं व्यवहार मे अमूल्य योगदान है। अपने जीवन के अतिम दिन तक वह पोलीटेक्निकल शिक्षा के मार्क्स-वादी-लेनिनवादी विचारो के लिए सघर्ष करती रही। उनका यह दृढ विश्वास था कि "अंततः हमारे यहा स्कूल श्रम-स्कूल, पोलीटेक्निकल स्कूल होगा।"

क्रूप्स्काया के शिक्षा सबधी विचारों, शिक्षा विधि पर परामर्शों और टिप्पणियो का सृजनात्मक दृष्टि से, वैज्ञानिक-तकनीकी प्रगति की उपलब्धियो और आधुनिक स्कूल की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उपयोग किया जाना छात्रो को जीवन के लिए और सामाजिक दृष्टि से उपयोगी श्रम के लिए तैयार करने मे बहुत सहायक होगा।

यह ध्यान मे रखना चाहिए कि क्रूप्स्काया मार्क्सवादी द्वद्वात्मक विधि के अनुसार शिक्षा और चरित्र-निर्माण की अलग-अलग समस्याओ को उनकी समग्रता, उनके आतरिक सबधो और विकास को ध्यान मे रखकर गौर करती थी। इसलिए अपनी रुचि के किसी प्रश्न का

नदेज्दा क्रूप्स्काया—पोलीटेक्निकल तथा श्रम-शिक्षा के सिद्धांत की प्रवर्तक

म० म० स्कात्किन, सह-सदस्य, सोवियत शिक्षाविज्ञान अकादमी

विज्ञान और संस्कृति के इतिहास में नदेज्दा क्रूप्स्काया ने प्रथम रूसी मार्क्सवादी शिक्षक, समाजवादी जनशिक्षा की विलक्षण सिद्धांतकार और संगठनकर्ता तथा सोवियत शिक्षाविज्ञान की एक संस्थापक के नाते स्थान पाया है। श्रम-शिक्षा के सिद्धांत के निरूपण में उनका योगदान अमूल्य है।

क्रांति से पहले ही क्रूप्स्काया ने शिक्षण कार्य को उत्पादक श्रम और पोलीटेक्निकल शिक्षा के साथ जोड़ने के विषय पर वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों के विचारों का गहन अध्ययन कर लिया था। महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की विजय के बाद उन्होंने इस दिशा में अपने सैद्धांतिक कार्य को, इन विचारों को मूर्त रूप देने के ठोस रास्तों की खोज के साथ जोड़ा।

पोलीटेक्निकल शिक्षा

पोलीटेक्निकल शिक्षा का विचार समाज के विकास के वस्तुगत नियमों के परिणामस्वरूप, निरंतर बदलती और जटिल होती तकनीक की अनिवार्य अपेक्षा के रूप में प्रकट हुआ। अपनी कालजयी रचना '... और जनवाद' में क्रूप्स्काया ने मार्क्स-एंगेल्स की रचनाओं

नदेज्दा क्रूप्स्काया – पोलीटेक्निकल तथा श्रम-शिक्षा के सिद्धांत की प्रवर्तक

म० न० स्कात्किन, सह-सदस्य, सोवियत
शिक्षाविज्ञान अकादमी

विज्ञान और संस्कृति के इतिहास में नदेज्दा क्रूप्स्काया ने प्रथम रूसी मार्क्सवादी शिक्षक, समाजवादी जनशिक्षा की विलक्षण सिद्धांतकार और संगठनकर्ता तथा सोवियत शिक्षाविज्ञान की एक संस्थापक के नाते स्थान पाया है। श्रम-शिक्षा के सिद्धांत के निरूपण में उनका योगदान अमूल्य है।

क्रांति से पहले ही क्रूप्स्काया ने शिक्षण कार्य को उत्पादक श्रम और पोलीटेक्निकल शिक्षा के साथ जोड़ने के विषय पर वैज्ञानिक कम्युनिज्म के संस्थापकों के विचारों का गहन अध्ययन कर लिया था। महान अक्तूबर समाजवादी क्रांति की विजय के बाद उन्होंने इस दिशा में अपने सैद्धांतिक कार्य को, इन विचारों को मूर्त रूप देने के ठोस रास्तों की खोज के साथ जोड़ा।

पोलीटेक्निकल शिक्षा

पोलीटेक्निकल शिक्षा का विचार समाज के विकास के वस्तुगत नियमों के परिणामस्वरूप निरन्तर बढ़ती और जटिल होती मानवीय की अनिवार्य अपेक्षा के रूप में प्रकट हुआ। अपनी [illegible] रचना 'जनशिक्षा और जनवाद' में क्रूप्स्काया ने मार्क्स-एंगेल्स की रचनाओं

भिन्नता पर प्रकाश डाला। उनके विचार में पोलीटेक्निकल शिक्षा का सबसे महत्वपूर्ण कार्यभार है छात्रों को प्रविधि के मूलभूत नियमों से परिचित कराना, जो प्रविधि की सारी विविधता के बावजूद इसकी हर शाखा में पाये जाते हैं। आधुनिक प्रविधि को प्रकृति की शक्तियों पर विजय के बारे में सामान्य वैज्ञानिक जानकारी के साथ तथा श्रम के व सारे सामाजिक जीवन के संगठन के प्रश्नों के साथ उसके सारे संबंधों के प्रसंग में देखा जाना चाहिए। इस सबका ज्ञान छात्रों को सिद्धान्त में और व्यवहार में मूलभूत सामान्य श्रम-प्रक्रियाओं से परिचित कराकर देना चाहिए और छात्रों को इन प्रक्रियाओं में भाग लेते हुए इनसे परिचित होना चाहिए। शिक्षा के साथ उत्पादक श्रम का संबंध जोडने से ही उदीयमान पीढी को समग्र अर्थव्यवस्था को समझने में मदद मिल सकती है और इस समझ के बिना तो समाजवाद का सच्चा निर्माता नही बना जा सकता।

१६३० में हुई पोलीटेक्निकल शिक्षा पर पहली अखिल रूसी कांग्रेस की तैयारी के दिनों में क्रूप्स्काया ने 'स्कूली शिक्षा पोलीटेक्निकल होनी चाहिए' शीर्षक से एक लेख छपवाया था, जो बाद में अलग पुस्तिका के रूप में प्रकाशित हुआ। इस लेख में पोलीटेक्निकल शिक्षा के सार और इसकी आवश्यकता को बडी स्पष्टता से समझाया गया है। आधुनिक प्रविधि एक स्थान पर नही खडी है, वह बडी तेज़ी से विकसित हो रही है। पुरानी मशीनों के स्थान पर नई लगती हैं, जो अधिक अच्छी तरह और अधिक तेज़ी से काम करती हैं। आधुनिक मशीनों की बनावट और कार्यविधि में बहुत-सी बातें एक-सी हैं। इन मशीनों की बनावट अच्छी तरह समझनी चाहिए, सामान्य श्रम-अभ्यास होना चाहिए, मशीन पर काम करना आना चाहिए—तब नगर और देहात में श्रम की विभिन्न शाखाओं में काम का आदी हो पाना आसान है। स्कूलों में ऐसी वर्कशापें बनानी चाहिए, जो उत्पादन के विभिन्न रूपों के साथ घनिष्ठ रूप से संबंधित हों।

अपने अनेक लेखों व भाषणों में क्रूप्स्काया ने कार्यशालाओं में श्रम की शिक्षा देने के प्रति पोलीटेक्निकल रुख का सार उजागर किया, व्यावसायिक रुख से इसकी भिन्नता समझायी। इस सिलसिले में १६२६ में लिखे उनके 'पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में' शीर्षक लेख में दिया

फैक्टरी मे श्रम का दूसरा रूप होना चाहिए, ताकि हर किशोर वहा शिक्षा पाने के कुछ वर्षों के दौरान कोई एक यत्रवत कार्य नही, बल्कि एक के बाद एक कई तरह के, सरल से जटिल होते हुए कार्य करे, इसके साथ वह फैक्टरी या कारखाने के एक खाते से दूसरे मे जाता रहे और सारी उत्पादन प्रक्रिया का अध्ययन करे। इसके साथ-साथ छात्रो को स्कूल मे गणित, भौतिकी, यात्रिकी, मैकेनिकल ड्राइग और सामान्य शिक्षा के दूसरे विषय भी पढाये जाने चाहिए। ऐसा काम नौजवानो को मदबुद्धि नही बनाता, बल्कि उनका विकास करता है।

सोवियत सत्ता के पहले वर्षों मे स्कूल अपने साधनो से उत्पादक श्रम का प्रबध करने मे अक्षम थे। क्रूप्स्काया यह समझती थी कि यह जरूरी नही कि छात्र स्कूल की चहारदीवारी मे ही श्रम-कार्य करें। उन दिनो बच्चे, विशेषत गावो के बच्चे छोटी आयु मे ही वयस्को के श्रम-जीवन मे भाग लेने लगते थे। क्रूप्स्काया का कहना था कि बच्चो के इस असली श्रम-कार्य को ही प्रस्थान-बिंदु मानना चाहिए और इसके साथ शिक्षा को सलग्न करना चाहिए।

कालातर मे जब स्कूलो मे कार्यशालाए बनने लगी, तो क्रूप्स्काया ने परामर्श दिया कि तीसरी-चौथी कक्षाओ मे ही बच्चो के श्रम को उत्पादक श्रम बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करने चाहिए। ऐसा करते हुए यह बात विशेषत ध्यान मे रखनी चाहिए कि स्कूलो की कार्यशालाओ मे काम का उत्पादन के साथ अटूट सबध हो· "कार्यशालाए ऐसा स्थान नही होनी चाहिए, जहा बच्चे 'श्रम सुलेख' का अभ्यास करते है, बल्कि ऐसा करना आवश्यक है कि कार्यशालाओ मे जो कुछ किया जाता है, उसका वास्तव मे उत्पादन के साथ कोई सबध हो।"

क्रूप्स्काया ने बच्चो के उत्पादक श्रम की कारगरता की शैक्षिक शर्तो से सबधित नियमसगतियो का पता लगाया। यह श्रम वास्तव मे गभीर और यथासभव मशीनीकृत श्रम होना चाहिए, अलग-अलग आयु के बच्चो के लिए उनकी क्षमता के अनुरूप होना चाहिए। बच्चो की भूमिका, उन्हे जो कहा जाये, वही काम करने तक सीमित नही होनी चाहिए, बल्कि उन्हे सारे आर्थिक कार्यकलाप के सगठन मे भी सक्रिय भाग लेना चाहिए। ऐसा होने पर वे उत्पादन प्रक्रिया के तर्क द्वारा निर्धारित होने वाली मागो को समझने लगते हैं। ऐसा श्रम बच्चो मे

क्रुप्स्काया ने स्कूल छात्रों के उत्पादक श्रम के संगठन के नियमों और विधियों का पता लगाया, उन्हें स० शात्स्की, अ० मकारेंको और व० सुखोम्लीन्स्की ने व्यवहार में उतारा।

कालान्तर में उद्योग और कृषि में स्कूल छात्रों के उत्पादक श्रम के संगठन के कई रूप बने — प्रतिष्ठानों में शैक्षिक खाने, शिक्षा-उत्पादन उद्यम, सामूहिक और राजकीय फार्मों में छात्रों की टोलियां, स्कूलों के वन-खंड, श्रम एवं विश्राम कैम्प, निर्माण टोलियां, इत्यादि। यहां हम एक बार फिर यह देखते हैं कि श्रम के संगठन का अंतर्य और रूप समय के साथ बदलते जाते हैं, लेकिन नई परिस्थितियों में भी शैक्षिक प्रक्रिया की वे वस्तुगत नियमसंगतियां क्रियाशील रहती हैं, जो इस प्रक्रिया की कारगरता निर्धारित करती हैं: श्रम के रूपों की विविधता, औद्योगिक और कृषि श्रम का प्रत्यावर्तन, छात्रों का बड़ों के साथ काम करना, उत्पादन के अंगों — मशीनों, कच्चे माल, उत्पादन और समस्त उत्पादन क्रिया — का अध्ययन, श्रम से संबंधित अनुसंधान कार्य।

समाजोपयोगी श्रम

श्रम-शिक्षा और चरित्र-निर्माण कार्य स्कूलों और प्रतिष्ठानों में छात्रों के उत्पादक श्रम के संगठन तक ही सीमित नहीं है। सोवियत स्कूली शिक्षा-पद्धति के गठन के पहले वर्षों में ही समाजोपयोगी श्रम का व्यापक प्रचलन हुआ। समाजवादी समाज के निर्माण में छात्रों का भाग लेना ही इस श्रम का अंतर्य था।

स्कूल छात्रों को समाजोपयोगी कार्य में प्रवृत्त करने का विचार मानव के सामाजिक गठन के उस वस्तुगत नियम पर आधारित है, जिसे मार्क्स और एंगेल्स ने 'जर्मन विचारधारा' नामक रचना में इस संक्षिप्त सूत्र में अभिव्यक्त किया: "व्यक्तियों की जीवंत गतिविधियां जैसी होती हैं वैसे ही वे स्वयं होते हैं।"

कोमसोमोल की तीसरी कांग्रेस में दिये गये भाषण में लेनिन ने समाजवादी समाज के निर्माण में युवाजन और किशोरों की सक्रिय शिरकत का कार्यक्रम रेखांकित किया: "उन्हें शिक्षा संबंधी अपने तमाम कार्यों की ओर इस तरह का रवैया अपनाना चाहिए कि प्रति दिन हर

बच्चो के समाजोपयोगी कार्य का संचालन शिक्षकों को बहुत सोच समझकर और नाप-तोलकर करना चाहिए, ताकि वे आवश्यकता से अधिक संरक्षण देकर बच्चों की पहलकदमी, उनका स्वावलंबन न दबाये।

व्यवसाय का चयन

क्रूप्स्काया व्यवसाय के चयन को अपार महत्व की बात मानती थी। व्यवसाय के चयन का न केवल व्यक्ति के, बल्कि समाज के हितो पर भी प्रभाव पडता है—यह एक विशाल सामाजिक समस्या है। एक मार्क्सवादी शिक्षाशास्त्री होने के नाते क्रूप्स्काया अपने भाषणो और लेखो मे सामंतवादी और पूजीवादी समाजो मे तथा समाज के समाजवादी पुनर्गठन के काल मे व्यवसाय के चयन की ओर बहुत ध्यान देती थी।

सोवियत सत्ता अपने पहले कदमो के साथ ही जनशिक्षा-पद्धति का पुनर्गठन करने लगी, शिक्षा के द्वार सबके लिए खोल दिये गये। सोवियत संघ मे बडे पैमाने के उद्योग के विकास, कृषि के सामूहिकीकरण और मशीनीकरण के फलस्वरूप कालातर मे नगर और देहात के निकट आने का आधार बना। शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच संबंध बढा, वे पुरानी दीवारे ढह गयी, जो जनसाधारण के लिए शिक्षा का मार्ग रोके खडी थी। इस सबके फलस्वरूप व्यवसाय के स्वतत्र चयन का आधार बना। लेकिन इसका अर्थ यह नही कि व्यवसाय के चयन के कार्य को स्वत.स्फूर्त ढग से होने दिया जा सकता है। ऐसे कदमो की एक पूरी पद्धति सोच-समझकर तैयार की जानी चाहिए, जो व्यक्ति और समाज के हितो की पूर्ति समान रूप से सुनिश्चित करे।

अपने देश के और विदेशो के तत्संबंधी अनुभव तथा विशेष शोध कार्यो के परिणामो के आधार पर क्रूप्स्काया ने अपनी रचनाओ में व्यवसायो के चयन के क्षेत्र मे कदमो की ऐसी पद्धति पर प्रकाश डाला, उसका विज्ञानसम्मत आधार पेश किया और साथ ही कुछ ऐसे दूरगामी प्रश्न निरूपित किये, जिन पर अनुसधान किया जाना चाहिए। इन प्रश्नो मे एक है व्यवसायो के मेल का प्रश्न। शारीरिक श्रम के व्यवसायो

बच्चों के समाजोपयोगी कार्य का संचालन शिक्षकों को बहुत सोच-समझकर और सावधानीकर करना चाहिए, ताकि वे आवश्यकता से अधिक संरक्षण देकर बच्चों की पहलकदमी, उनका स्वावलंबन न दबायें।

व्यवसाय का चयन

क्रूप्स्काया व्यवसाय के चयन को अपार महत्व की बात मानती थीं। व्यवसाय के चयन का न केवल व्यक्ति के, बल्कि समाज के हितों पर भी प्रभाव पड़ता है – यह एक विशाल सामाजिक समस्या है। एक मार्क्सवादी शिक्षाशास्त्री होने के नाते क्रूप्स्काया अपने भाषणों और लेखों में सामंतवादी और पूंजीवादी समाजों में तथा समाज के समाजवादी पुनर्गठन के काल में व्यवसाय के चयन की ओर बहुत ध्यान देती थीं।

सोवियत सत्ता अपने पहले कदमों के साथ ही जनशिक्षा-पद्धति का पुनर्गठन करने लगी, शिक्षा के द्वार सबके लिए खोल दिये गये। सोवियत संघ में बड़े पैमाने के उद्योग के विकास, कृषि के सामूहिकीकरण और मशीनीकरण के फलस्वरूप कालांतर में नगर और देहात के निकट आने का आधार बना। शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच संबंध बढ़ा, वे पुरानी दीवारें ढह गयीं, जो जनसाधारण के लिए शिक्षा का मार्ग रोके खड़ी थीं। इस सबके फलस्वरूप व्यवसाय के स्वतंत्र चयन का आधार बना। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं कि व्यवसाय के चयन के कार्य को स्वतःस्फूर्त ढंग से होने दिया जा सकता है। ऐसे कदमों की एक पूरी पद्धति सोच-समझकर तैयार की जानी चाहिए, जो व्यक्ति और समाज के हितों की पूर्ति समान रूप से सुनिश्चित करे।

अपने देश के और विदेशों के तत्संबंधी अनुभव तथा विशेष शोध कार्यों के परिणामों के आधार पर क्रूप्स्काया ने अपनी रचनाओं में व्यवसायों के चयन के क्षेत्र में कदमों की ऐसी पद्धति पर प्रकाश डाला, उसका विज्ञानसम्मत आधार पेश [illegible] ही कुछ ऐसे दूरगामी प्रश्न निरूपित किये, जिन [illegible]। इन प्रश्नों में एक है

प्रति स्कूल छात्रों के हितावह और दृष्टिकोण से भी समय [illegible]

जीवन पथ के चयन में स्कूल छात्रों की सहायता व्यवसायों की विविधता के बारे में सूचना तक ही सीमित नहीं होनी चाहिए। छात्रों की योग्यता का भी अध्ययन करना चाहिए। लेकिन साथ ही व्यवसायों के चयन के प्रति इस कुछ गुणों (शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण दृष्टि, हाज़िरजवाबी, आदि) के टेस्टों के परिणामों पर आधारित भाग्यवादी रुख नहीं होना चाहिए। छात्रों को अपना रुझान प्रकट करने, भांति भांति के कार्यकलापों में अपनी शक्ति परखने और अभ्यास करने के अवसर देने चाहिए।

स्कूलों में विभिन्न मंडलियां बनाना इस काम में बहुत सहायक हो सकता है। मंडलियों में भाग लेते हुए किशोर शीघ्र ही यह समझ जायेगा कि इस काम में उसकी कितनी दिलचस्पी है। मंडली में भाग लेना अनिवार्य नहीं हो सकता, क्योंकि ऐसा होने पर उनका कोई अर्थ ही नहीं रहता। नाटक, साहित्यिक, क्रीड़ा मंडलियों के अलावा विज्ञान, प्रकृतिप्रेमियों की, कृषि, विद्युततकनीकी, रेडियो, शिक्षण कार्य, आदि की मंडलियां होनी चाहिए। मंडलियां जितनी अधिक विविध होंगी, उतना ही किशोर-किशोरियों के लिए अपना मनपसंद काम ढूंढ पाना आसान होगा।

व्यवसाय की शिक्षा संबंधी धरोहर के इस भाग में भी हम अनूठे विचार पाते हैं, जो व्यवसाय के स्वतंत्र चयन की वस्तुगत सामाजिक-आर्थिक शर्तों को प्रतिबिंबित करते हैं। ये शर्तें हैं समाजवादी व्यवस्था, जो व्यवसाय का स्वतंत्र चयन सुनिश्चित करती है, व्यापक सामान्य और पॉलीटेक्निकल शिक्षा, जो व्यवसाय के स्वतंत्र चयन का शिक्षा-शास्त्रीय आधार है, समाज के लिए आवश्यक व्यवसायों के व्यापक दायरे के बारे में सूचना, स्कूल छात्रों की अभिरुचियों, रुझानों और क्षमताओं का अध्ययन, उन्हें श्रम के विभिन्न रूपों में अपनी शक्ति आजमाने के अवसर प्रदान करना।

आधुनिक [illegible] स्कूलों में छात्रों का अपना भावी व्यवसाय चुनने की ओर उन्मुख करने का कार्य [illegible] द्वारा [illegible] है। लेकिन यह समझना होगा कि उनके सभी विचारों पर पूरी तरह से और आवश्यक स्तर पर अमल नहीं हो रहा है। इसके

भानो और योग्यताओ का अध्ययन करने, उन्हे व्यवसायो की
ारी देने का कार्य अभी सभी स्कूलो मे नही होता है। ऐसी परि-
या बनाने की ओर भी पर्याप्त ध्यान नही दिया जाता है, जिनमे
विविध कार्यो मे अपनी शक्ति और क्षमता व्यावहारिक रूप मे
ा सके। सोवियत कम्युनिस्ट पार्टी की २६वी काग्रेस मे निर्धारित
ारों के अनुसार, समसामयिक जीवन की मागो के अनुसार व्यव-
के चयन का कार्य करने के लिए अभी बहुत कुछ किया जाना है।

* * *

कहना न होगा कि हम यहा श्रम-शिक्षा और चरित्र-निर्माण की
ाओ पर ऋूम्काया के सभी विचारो का विवेचन नही कर पाये
स्तुत सग्रह मे मकलित लेखो और भाषणो से पाठक इन विचारो
रे में अधिक पूर्ण जानकारी पा सकेगे। हमारा ध्येय श्रम-शिक्षा
उन वस्तुगत नियमसगतियो की उत्पत्ति, विकास और कार्य की
पाठको का ध्यान दिलाना था, जो ऋूप्स्काया के विचारो मे प्रत्यक्ष
रोक्ष रूप से प्रतिबिंबित हुई और जिनकी बदौलत ये विचार शैक्षिक
र्र के सज्ञान एव पुनर्गठन का चिर स्रोत बन गये हैं। इन विचारो
सृजनात्मक ढग से उपयोग करते हुए हम कम्युनिस्ट समाज के
ाण की समसामयिक मजिल मे स्कूल के सम्मुख उपस्थित श्रम-
ा और चरित्र-निर्माण के जटिल कार्यभार सफलतापूर्वक पूरे कर
ा।

यह शिक्षा, जिसके विनाश के बारे में वह इतना रोना-धोना
है, अधिकांश जनता के लिए महज मशीन की तरह काम करने की
प्रशिक्षा मात्र है।"[1]

शिक्षा का वर्ग-स्वरूप इंगित करते हुए 'घोषणापत्र' के रचयि
इस बात पर जोर देते है कि बड़े पैमाने का उद्योग बच्चों का अमा
शोषण करता है, मजदूरों को अपने बच्चों का शोषण करने के लि
मजबूर करता है, पुराने पारिवारिक संबंध नष्ट करता है, पारिवारि
शिक्षा-दीक्षा की जड़ खोदता है। पूंजीवादी समाज में सारी शिक्षा पूं
तरह से वर्गाधारित होती है। कम्युनिस्ट लोग शिक्षा का स्वरूप बदलना
चाहते है। इसके बारे में घोषणापत्र में कहा गया है:

'क्या आप हमारे ऊपर यह आरोप लगाते हैं कि हम बच्चों
का उनके माता-पिता द्वारा शोषण किया जाना बन्द कर देना चाहते है
इस अपराध को हम स्वीकार करते हैं। लेकिन आप कहेंगे कि घरे
शिक्षा की जगह पर सामाजिक शिक्षा कायम करके हम एक अत्यन
पवित्र संबंध को नष्ट कर देते हैं।

"और आपकी शिक्षा! क्या वह भी सामाजिक नहीं है औ
उन सामाजिक संबंधों से निर्धारित नहीं होती है, जिनमें आप समा
के प्रत्यक्ष या परोक्ष हस्तक्षेप से स्कूलों, आदि के जरिए शिक्षा दे
हैं? शिक्षा में समाज का हस्तक्षेप कम्युनिस्टों की ईजाद नहीं है
कम्युनिस्ट तो केवल इस हस्तक्षेप के स्वरूप को बदल देना चाहते
और शासक वर्ग के प्रभाव से शिक्षा का उद्धार करना चाहते हैं।

"जैसे-जैसे आधुनिक उद्योग के विकास द्वारा सर्वहारा वर्ग
समस्त पारिवारिक संबंधों की धज्जियां उड़ती जा रही हैं और मजदू
के बच्चे तिजारत के मामूली सामान और श्रम के औजार बनते
रहे हैं, वैसे-वैसे परिवार और शिक्षा तथा माता-पिता और बच
के पुनीत अन्योन्य संबंधों के बारे में बुर्जुआजी की बकवास और
घिनौनी बन जाती है।"[2]

'घोषणापत्र' में ऐसे कुछ कदम इंगित किये गये हैं, जो सर्वहा
वर्ग को सत्ता पा लेने पर उठाने होंगे। इनके अंतर्गत दसवें मुद्दे
शिक्षा संबंधी कदम भी दिये गये हैं। ये हैं: "सार्वजनिक पाठशाला
में तमाम बच्चों के लिए मुफ्त शिक्षा की व्यवस्था। वर्तमान रूप

ो हम अधिक से अधिक केवल चिन्तन में ही एक दूसरे से अलग कर
कते हैं। वास्तव मे उन्हे अलग करना असम्भव है। अत इच्छा की
वतंत्रता का अर्थ विषय के ज्ञान के आधार पर निर्णय करने की सामर्थ्य
सिवा और कुछ नही है। इसलिए किसी खास प्रश्न के संबंध मे किसी
ादमी का मत जितना अधिक स्वतंत्र है, इस मत के सार को उतनी ही
धिक आवश्यकता के साथ निर्धारित किया जायेगा; जबकि दूसरी
ौर अज्ञान पर आधारित वह अनिश्चितता, जो बहुत-से भिन्न-भिन्न
कार के तथा परस्पर विरोधी सभव निर्णयो से किसी एक को मनमाने
ग से चुनती प्रतीत होती है, ठीक अपने इस कार्य से ही यह सद
र देती है कि वह स्वतत्र नही है, बल्कि वह स्वय उसी वस्तु
नियत्रण मे है, जिसका उसे खुद नियत्रण करना चाहिए था। अ
वतत्रता अपने ऊपर तथा बाह्य प्रकृति के ऊपर नियंत्रण मे निहि
ोती है और नियंत्रण प्राकृतिक आवश्यकता के ज्ञान पर आधारि
ोता है। इसलिए स्वतंत्रता लाजिमी तौर पर ऐतिहासिक विकास
ल होती है।"[7]

यदि हम उपरोक्त शब्दों—"तब वर्गों और वर्ग-विरोधो मे वि
ुराने बुर्जुआ समाज के स्थान पर एक ऐसे सघ की स्थापना होगी
जिसमे व्यष्टि का स्वतत्र विकास समष्टि के स्वतत्र विकास की श
ोगा"—को इस दृष्टिकोण से देखे, तो हम समझ जायेंगे कि पूंजीवा
कुश से पूरी तरह मुक्त समाज मे, जिसमे न वर्ग रहेंगे, न व
ंघर्ष, विज्ञान की ऐसी प्रगति होगी, प्रकृति के नियमो और मान
ाति के विकास के नियमो का इतना गहरा ज्ञान पाया जायेगा।
इसके फलस्वरूप प्रत्येक व्यक्ति का अधिकतम पूर्ण, बहुमुखी वि
होगा, और इस सघ का, इस सम्बध का प्रत्येक सदस्य सारे सघ
साथ और उसकी कुल प्रगति के साथ इतने घनिष्ठ एव अभिन्न
से सबद्ध होगा कि उसके सारे कार्यकलाप, सारा जीवन इस
वर्गहीन समाज का और आगे विकास करने को ही अर्पित होंगे।

'कम्युनिस्ट घोषणापत्र' मे बारबार इस विचार पर जोर ि
गया है कि विचारधारा का आधार अर्थव्यवस्था ही है। "क्या
समझने के लिए गहरी अन्तर्दृष्टि की जरूरत है कि मनुष्य के विच
मत और उसकी धारणाए—एक शब्द मे उसकी चेतना—उसके औ

भी हुआ है? और क्या श्रम विभाजन में परिवर्तन होने पर इस मात्रा में भी परिवर्तन होना अनिवार्य नहीं है?

"भी पूरे में श्रम विभाजन की समस्या को इतना कम समझा है कि वह शहर और देहात के विलगाव को (उदाहरणार्थ, जर्मनी में ९वीं से १२वीं शताब्दी के बीच ऐसा विलगाव हुआ था) वर्ग तक नहीं मानते। अब यह विलगाव भी पूंजी के लिए, जो उसकी उत्पत्ति और विकास दोनों ही से सापेक्षिक है, नित्य नियम है।"[11]

१८४७ में लिखी 'दर्शन की दरिद्रता' नामक रचना में मार्क्स ने इस बात का शानदार उदाहरण दिया कि किस प्रकार निरन्तर बढ़ते जा रहे श्रम-विभाजन से इस प्रवृत्ति के सकारात्मक पहलू उजागर होने चाहिए। मार्क्स ने लिखा कि "आधुनिक समाज के अंदर श्रम विभाजन का लक्षण यह है कि यह विशेषज्ञताओं, अलग-थलग व्यवसायों और उनके साथ ही व्यावसायिक मूढ़ता को जन्म देता है" (शब्दों पर जोर लेखक द्वारा)।[13]

व्यावसायिक मूढ़ता का तथ्य उद्घृत करते हुए मार्क्स ने साथ ही यह भी इंगित किया कि किस प्रकार श्रम-विभाजन का और अपने विकास इस मूढ़ता के उन्मूलन में सहायक होता है। 'दर्शन की दरिद्रता' में उन्होंने मजदूरों के विकास पर **स्वचालित कारखाने** (किसी भी तरह के कारखाने के नहीं, बल्कि केवल स्वचालित कारखाने) के प्रभाव के बारे में लिखा है:

"कारखाने में श्रम-विभाजन की विशेषता यह है कि यहां श्रम एक व्यवसाय का अपना स्वरूप बिल्कुल खो बैठता है। लेकिन जैसे ही विशेषीकृत विकास रुक जाता है, तत्क्षण सर्वोन्मुखता की आवश्यकता, व्यक्ति के बहुमुखी विकास की चेष्टा महसूस होने लगती है। कारखाना अलग-थलग व्यवसायों और व्यावसायिक मूढ़ता का उन्मूलन करता है।"[14]

मार्क्स को बच्चों से बहुत प्यार था। १८५९ में पहली बार प्रकाशित पुस्तक 'राजनीतिक अर्थशास्त्र की समीक्षा का एक प्रयास' में बच्चों के बारे में एक बड़ी शानदार बात कही गई है। वैसे तो मार्क्स ने यह बात "चलते-चलते" कही है, लेकिन इससे यह पता चलता है कि मार्क्स को बच्चों से इतना प्यार क्यों था और वह बच्चों में क्या

सारी प्रवृत्ति ही प्रतिबिंबित होती थी।

एक ओर, उद्योग के विकास का, उसमें किन्हीं परिवर्तनों का मजदूर जनसमूह पर प्रभाव का तथा दूसरी ओर, उत्पादन स्थलियों पर बच्चों-किशोरों की स्थिति का अध्ययन करते हुए मार्क्स ने उन आधारभूत सिद्धान्तों को खोजने की चेष्टा की, जिनसे सामाजिक शिक्षा-दीक्षा का काम इस तरह सगठित करने में मदद मिले, जिससे कि उदीयमान पीढ़ी पूंजीवादी समाज का आमूल पुनर्गठन करने में सक्षम हो।

हम यहा *'मशीने और बड़े पैमाने का उद्योग'* अध्याय से दो उद्धरण दे रहे हैं, जिनमें यह कहा गया है कि आधुनिक उद्योग के लिए चहुमुखी विकसित मजदूर की आवश्यकता है

"आधुनिक उद्योग ने हर क्रिया को उसकी सघटक गतियों में बाट देने के सिद्धात का अनुसरण किया और ऐसा करते हुए इस बात का कोई *ख्याल नही किया कि मनुष्य का हाथ इन गतियों को कैसे* सम्पन्न कर पायेगा। इस सिद्धान्त ने प्रौद्योगिकी के नये आधुनिक विज्ञान को जन्म दिया। औद्योगिक प्रक्रियाओं के नाना प्रकार के, प्रकटत: असम्बद्ध प्रतीत होनेवाले और पथराये हुए रूप निश्चित ढंग के उपयोगी प्रभाव पैदा करने के लिए प्राकृतिक विज्ञान को सचेतन और सुनियोजित ढंग से प्रयोग करने के तरीकों में परिणत हो गये। प्रौद्योगिकी ने *गति के उन थोड़े-से मौलिक रूपों* का भी पता लगाया, जिनमें से किसी न किसी रूप में ही मानव-शरीर की प्रत्येक उत्पादक कार्रवाई व्यक्त होती है, हालांकि मानव-शरीर नाना प्रकार के औज़ारों को इस्तेमाल करता है। यह उसी तरह की बात है, जैसे यांत्रिकी का विज्ञान अधिक से अधिक सश्लिष्ट मशीनों में भी सरल यांत्रिक शक्तियों की निरन्तर पुनरावृत्ति के सिवा और कुछ नहीं देखता।

"*आधुनिक उद्योग किसी भी प्रक्रिया के वर्तमान रूप को कभी उसका अन्तिम रूप नही समझता और न ही व्यवहार में उसे ऐसा मानता* है। इसलिए इस उद्योग का प्राविधिक आधार *क्रान्तिकारी ढंग का है*, जब कि इसके पहले वाली उत्पादन की तमाम प्रणालियां बुनियादी तौर पर रूढ़िवादी थीं। आधुनिक उद्योग मशीनों, रासायनिक क्रियाओं तथा

मजदूर के कार्यों मे और श्रम-प्रक्रिया के सामाजिक सयोजनो मे भी लगातार तबदीलिया कर रहा है। साथ ही वह इस तरह **समाज में पाये जानेवाले श्रम-विभाजन में भी क्रांति पैदा कर देता है** और पूजी की राशियो को तथा मजदूरो के समूहो को उत्पादन की एक शाखा से दूसरी शाखा मे निरन्तर स्थानातरित करता रहता है। इसलिए आधुनिक **उद्योग खुद अपने स्वरूप के कारण श्रम के निरन्तर परिवर्तन, काम के रूप में लगातार तबदीली और मजदूरों में सार्वत्रिक गतिशीलता को जरूरी बना देता है।**"[16]

"आधुनिक उद्योग जिन विपत्तियो को ढाता है, उनके द्वारा वह सबसे यह मनवा लेता है कि काम मे बराबर परिवर्तन होते रहना और इसलिए मजदूर मे विविध प्रकार के काम करने की योग्यता का होना तथा इस कारण उसकी विभिन्न प्रकार की क्षमताओ का अधिक से अधिक विकास होना सामाजिक उत्पादन का एक मौलिक नियम है। उत्पादन की प्रणाली को इस नियम के सामान्य कार्य के अनुकूल बनाने का सवाल समाज की जिन्दगी और मौत का सवाल बन जाता है। वस्तुत आधुनिक उद्योग समाज को मौत की धमकी देकर इसके लिए मजबूर करता है कि आजकल के तफसीली काम करने वाले मजदूर को, जो जीवन भर एक ही, बहुत तुच्छ क्रिया को दुहरा-दुहराकर पगु हो गया है और इस प्रकार इन्सान का एक अश भर रह गया है, एक पूर्णतया विकसित ऐसे व्यक्ति मे बदल दे, जो अनेक प्रकार का श्रम करने की योग्यता रखता हो, जो उत्पादन मे होनेवाले किसी भी परिवर्तन के लिए तैयार हो और जिसके लिए उसके द्वारा सम्पन्न किये जाने वाले विभिन्न सामाजिक कार्य केवल अपनी प्राकृतिक एव उपार्जित क्षमताओ को स्वतत्रतापूर्वक व्यवहार मे लाने की प्रणालिया भर हो।

"इस क्राति को पैदा करने के लिए एक कदम पहले ही से स्वयस्फूर्त ढग से उठाया जा चुका है। वह है प्राविधिक एव कृषि स्कूलो और "écoles d'enseignement professionnel" (व्यावसायिक स्कूलो) की स्थापना, जिनमे मजदूरों के बच्चो को प्रौद्योगिकी की, और श्रम के विभिन्न औजारो का व्यावहारिक उपयोग करने की थोडी-बहुत शिक्षा मिल जाती है। फैक्टरी-कानून के रूप मे पूजी से जो पहली और

बहुत तुच्छ रियायत छीनी गयी है, उसमें फैक्टरी के नाम के साथ-साथ केवल प्राथमिक शिक्षा देने की बात है। परन्तु इसमें कोई संदेह नहीं किया जा सकता कि जब मजदूर-वर्ग सत्ता पर अधिकार कर लेगा, जो कि अनिवार्य है, तब सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दोनों ढंग की प्राविधिक शिक्षा मजदूरों के स्कूलों में अपना उचित स्थान प्राप्त करेगी। इसमें भी कोई संदेह नहीं है कि इस तरह की क्रान्तिकारी उथल-पुथल, जिसके अन्तिम परिणाम के रूप में पुराना श्रम-विभाजन खतम हो जायेगा, उत्पादन के पूंजीवादी रूप के और इस रूप में मजदूर की जो आर्थिक हैसियत है, उसके बिलकुल खिलाफ पडती है।"[17]

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि मार्क्स की दृष्टि में पूंजीवादी समाज के पुनर्निर्माण में, समाजवादी पुनर्गठन में उदीयमान पीढ़ी की सामाजिक शिक्षा की भूमिका कितनी विशाल है। इस सामाजिक शिक्षा से चहुमुखी विकसित लोग बनने चाहिए। बडे पैमाने के उद्योग के स्वरूप की ही यह मांग है। किशोरों को काफी बडे परिमाण में ज्ञान प्राप्त करना चाहिए, काम करना सीखना चाहिए। इंगलैंड में बाल-श्रम के प्रश्न पर कारखानों संबंधी कानूनों के इतिहास का अध्ययन करते हुए मार्क्स इसी निष्कर्ष पर पहुंचे।

'पूंजी' के पहले खंड में मार्क्स लिखते हैं: "संसद ने बच्चों के श्रम के बारे में जांच करने के लिए १८४० में ही एक आयोग नियुक्त कर दिया था। एन० डब्ल्यू० सीनियर[18] के शब्दों में, इस आयोग की १८४२ की रिपोर्ट से:

> "मालिकों और मां-बापों के लोभ, स्वार्थ और निर्दयता का और लडके-लडकियों तथा बच्चों के कष्ट, पतन और विनाश का एक ऐसा भयानक चित्र सामने आया, जैसा इसके पहले कभी नहीं आया था .. यह रिपोर्ट २० वर्ष तक यों ही पडी रही और किसी ने उसकी ओर ध्यान नहीं दिया, और इस बीच वे बच्चे, जिनको इस बात का तनिक भी आभास नहीं दिया गया था कि नैतिकता शब्द का क्या अर्थ होता है, और जिनमें न तो ज्ञान था, न धर्म और न ही स्वाभाविक पारिवारिक स्नेह, वे मौजूदा पीढ़ी के मां-बाप बन गये।"[19]

राहत का रूप धारण कर लेते हैं। इसका नतीजा यह होता है कि दोनो काम बच्चे के लिए अधिक सुखकर बन जाते हैं। यदि बच्चे से लगातार श्रम या पढाई कराई जाती, तो ऐसा न होता। यह बात बिल्कुल साफ है कि जो लडका (खास तौर पर गरमियो के मौसम मे) सुबह से स्कूल मे पढ रहा है, वह उस लडके का मुकाबला नही कर सकता, जो अपने काम से ताज़ा और उल्लासपूर्ण दिमाग लिए हुए लौटता है।'

"इस विषय मे और अधिक जानकारी सीनियर के उस भाषण से मिल सकती है, जो उन्होंने १८६३ मे एडिनबर्ग मे समाज-विज्ञान कांग्रेस मे दिया था। उसमे सीनियर ने अन्य बातो के अलावा यह भी बताया है कि उच्च और मध्य श्रेणियो के बच्चो को स्कूलो मे जो नीरस और व्यर्थ के लिए लम्बा समय बिताना पडता है, उससे शिक्षक का श्रम किस तरह फिजूल ही बढ जाता है, और शिक्षक किस तरह "न केवल अनुपयोगी ढग से, बल्कि सर्वथा हानिकारक ढग से बच्चो के समय, स्वास्थ्य और शक्ति का अपव्यय करता है।" जैसा कि रोबर्ट ओवेन[21] ने विस्तार के साथ हमे बताया है, फैक्टरी-व्यवस्था मे से भावी शिक्षा की कली फूटती है, – उस शिक्षा की, जो एक निश्चित आयु से ऊपर के प्रत्येक बच्चे के लिए शिक्षा और व्यायाम के साथ-साथ उससे कोई उत्पादक श्रम कराने का भी प्रबध करेगी, और यह केवल इसलिए नही किया जायेगा कि यह उत्पादन की कार्य-क्षमता को बढाने का एक तरीका है, बल्कि इसलिए भी कि पूरी तरह विकसित मानव के उत्पादन का यह एकमात्र तरीका है।"[22]

क्या मार्क्स यह मानते थे कि श्रम की शिक्षा फैक्टरी के बजाय स्कूल की चहारदीवारी मे दी जानी चाहिए ? कतई नही। पॉलिटेक्निकल स्कूल की आवश्यकता स्वीकार करते हुए भी वे फैक्टरी मे बच्चो के काम करने का समर्थन करते थे।

"पूजीवादी व्यवस्था मे पुराने पारिवारिक बधनो का टूटना चाहे जितना भयकर और घृणित क्यो न प्रतीत होता हो, परन्तु आधुनिक उद्योग स्त्रियों, लड़के-लड़कियों और बच्चे-बच्चियों को घरेलू क्षेत्र के बाहर उत्पादन की क्रिया मे एक महत्वपूर्ण भूमिका देकर (शब्दो पर

है, उसके अलावा अधिकतर उद्योगों में महज सामाजिक सम्पर्क एक ऐसा स्पर्द्धा पैदा कर देता है और तबीयत के जोश (ani spirit) को इतना बढ़ा देता है कि हर मजदूर की व्यक्तिगत कुशलता पहले से बढ़ जाती है।"[26]

सितंबर १८६६ मे जेनेवा में हुई प्रथम इंटरनेशनल की क मे मार्क्स द्वारा लिखा गया निम्न प्रस्ताव स्वीकृत हुआ था:

"बच्चे-बच्चियों और किशोर-किशोरियों को सामाजिक उत्प के काम में लगाने की आधुनिक उद्योग की प्रवृत्ति को हम प्र शाली, हितकर और नियमसंगत मानते हैं, हालांकि पूंजीवाद के प्र मे यह प्रवृत्ति घिनौने रूप ग्रहण कर लेती है। विवेकसंगत सामा व्यवस्था मे बिना किसी अपवाद के सभी बच्चों को नौ वर्ष की अ से उत्पादक श्रम मे भाग लेना होगा, ठीक ऐसे ही किसी भी वय को प्रकृति के इस सामान्य नियम से छूट नहीं मिल सकती कि मनु को भोजन पाने के लिए काम करना चाहिए, और केवल दिम से नही, बल्कि हाथो से भी। इस दृष्टिकोण को मानते हुए हम कहते है कि माता-पिता को भी, और मालिको को भी बच्चो के श्र का उपयोग करने की इजाजत समाज से तब तक नही मिलेगी, ज तक कि उनका उत्पादक श्रम शिक्षा से सलग्न न हो।

"शिक्षा से हमारा अभिप्राय तीन बातों से है: १) बौद्धिक शिक्षा २) शारीरिक विकास, जैसा कि जिम्नास्टिक और फौजी कवाय से होता है; ३) पोलीटेक्निकल शिक्षा, जो सभी उत्पादन प्रक्रिया के सामान्य वैज्ञानिक सिद्धातो से परिचित कराती है और साथ बच्चे व किशोर को सभी उत्पादन कार्यों के बुनियादी औजारों से का लेना सिखाती है।"[27]

आइये, मार्क्स की दो और रचनाओ पर गौर करें: 'फ्रांस गृहयुद्ध' (१८७१) तथा 'गोथा कार्यक्रम की आलोचना' (१८७५) जिनमें स्कूल के प्रति मार्क्स के रुख के दूसरे पहलुओं पर प्रकाश पड़ा है

'फ्रांस में गृहयुद्ध' मे मार्क्स लिखते हैं.

"पुरानी सरकार की भौतिक शक्ति के मुख्य अवयव स्थाय सेना और पुलिस से छुटकारा पाने के बाद कम्यून दमन की आध्यात्मि शक्ति, यानी "पादरी-शक्ति" को राज्य से चर्चों का सबंध सम

मुद्दे की आलोचना करते हुए उन्होंने लिखा : "'बाल-श्रम की मनाही!' यहां आयुसीमा का उल्लेख एकदम अनिवार्य था।

"बाल-श्रम की पूर्ण मनाही बड़े पैमाने के उद्योग के अस्तित्व के साथ असंगत है और इसलिए एक थोथी सदिच्छा मात्र है।

"इसकी पूर्ति – यदि वह संभव हो, तो – प्रतिक्रियावादी होगी, क्योंकि विभिन्न आयु-समुदायों के अनुसार कार्य-काल के कड़े *नियमन* तथा बालकों के संरक्षण के लिए अन्य सुरक्षा-उपायों द्वारा उत्पादक श्रम का शिक्षा के साथ यथाशीघ्र संयोग वर्तमान समाज के रूपांतरण के सबसे प्रभावी साधनों में एक है।"[30]

उस मुद्दे पर गौर करते हुए, जिसमें जर्मन मजदूर पार्टी की ओर से मांग की गई थी कि : "सार्विक और सबके लिए *समान जनशिक्षा हो,* जो राज्य के हाथों में हो। स्कूल जाना अनिवार्य हो। शिक्षा निश्शुल्क हो।" मार्क्स ने लिखा :

"समान सार्वजनिक शिक्षा? इन शब्दों में क्या भाव है? क्या यह खयाल किया जाता है कि वर्तमान समाज में (और वास्ता सिर्फ इसी से ही है) *शिक्षा सभी वर्गों के लिए समान* हो सकती है? या यह मांग की जाती है कि उच्च वर्ग भी शिक्षा के न्यूनतम स्तर – प्राथमिक स्कूल – पर बलात् ले आये जायेंगे, एकमात्र वह स्तर जो *न केवल* मजदूरों, बल्कि किसानों की भी आर्थिक स्थितियों के अनुरूप है?

"'सार्विक अनिवार्य स्कूली हाजिरी। निश्शुल्क शिक्षण।' प्रथमोक्त जर्मनी तक में विद्यमान है, दूसरा स्विट्ज़रलैंड में और प्राथमिक स्कूलों के मामले में संयुक्त राज्य अमरीका में है। अमरीका के कुछ राज्यों में अगर *उच्च शिक्षा संस्थाएं भी "निश्शुल्क"* हैं, तो वास्तव में इसका अर्थ केवल सामान्य करों की प्राप्तियों से उच्च वर्गों की शिक्षा का खर्च अदा करना ही है। [.]

"स्कूल संबंधी पैराग्राफ में प्राथमिक स्कूल के साथ-साथ कम से कम तकनीकी स्कूलों (सैद्धांतिक तथा व्यावहारिक) की मांग की जानी चाहिए थी।

"'राज्य द्वारा सार्वजनिक शिक्षा' की बात एकदम आपत्तिजनक है। *सामान्य कानून द्वारा प्राथमिक स्कूलों पर व्यय,* शिक्षकों की योग्यता, शिक्षा विषयों, आदि का निर्धारण और, जैसा कि संयुक्त राज्य

पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के लिए संघर्ष में लेनिन की भूमिका

लेनिन सदा उदीयमान पीढ़ी की शिक्षा एवं चरित्र-निर्माण को असाधारण महत्व का कार्य समझते थे। स्कूल को वह वर्गहीन समाज *की तैयारी का, सारी उदीयमान पीढ़ी को कम्युनिज़्म की भावना में* शिक्षित करने का साधन समझते थे। लेनिन के पिता एक मेधावी अध्यापक थे, उन्होंने आम प्राथमिक शिक्षा की ओर बहुत ध्यान दिया था और जीवनपर्यंत इस शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने के लिए काम करते रहे थे। ऐसे पिता के पुत्र व्लादीमिर इल्यीच ने बड़े ध्यान से वह सब पढ़ा, जो मार्क्स और एंगेल्स ने स्कूली शिक्षा के बारे में, शिक्षा को उत्पादक श्रम से जोड़ने के बारे मे लिखा था। १८९७ मे जब हमारे देश मे लोगों का ध्यान मार्क्सवाद की ओर आकर्षित हो ही रहा था और नरोदवादियों[1] के साथ, जो समाजवाद की ओर पथ की एकदम ग़लत कल्पना करते थे, संघर्ष चल रहा था, उन्ही दिनो लेनिन ने 'नरोदवादियो की मनसूबेबाज़ी के कमाल' नामक लेख लिखा था। नरोदवादी युझाकोव[2] ने यह योजना बनायी थी कि कैसे किसानो के बेटे-बेटियों को ज्ञान पाने का अवसर प्रदान किया जाये। इसके लिए उन्होंने गावों में हानि-लाभ के आधार पर काम करनेवाले ऐसे स्कूल खोलने का प्रस्ताव रखा, जिनके अधीन बड़े-बड़े फ़ार्म हों। अमीर किसान अपने बच्चों के लिए फीस देंगे, जबकि गरीबों के बच्चे अपने रहन-सहन के खर्चे और फीस के बदले काम करेंगे। ऐसे स्कूलों का

उन्होंने वर्ग संघर्ष में, गृहयुद्ध में युवाजन के भाग लेने की आवश्यकता के बारे में लिखा, यह भी लिखा कि १५ वर्ष की आयु में किशोरों को सर्वहारा मिलीशिया के सार्वजनिक कार्य में भाग लेना चाहिए।

१९१८ में पार्टी के कार्यक्रम का मसविदा तैयार करते हुए लेनिन ने स्कूली शिक्षा के बारे में अनुच्छेद इस तरह निरूपित किया: यह सुनिश्चित करना चाहिए कि "१६ साल तक के सभी लड़के-लड़कियों को निःशुल्क और अनिवार्य सामान्य एवं पोलीटेक्निकल (यानी उत्पादन की सभी प्रमुख शाखाओं से सिद्धांत और व्यवहार में परिचित कराने-वाली) शिक्षा उपलब्ध हो; शिक्षा का बच्चों के सामाजिक-उत्पादक श्रम के साथ घनिष्ठ संबंध हो।"[4] इस मसविदे में लेनिन ने बच्चों के सामाजिक उत्पादक श्रम की अनिवार्यता पर खास तौर से ज़ोर दिया था।

सत्ता हाथ में लेने के क्षण से इल्यीच इस बात पर ज़ोर देने लगे थे कि शिक्षा की जन-कमिसारियत पोलीटेक्निकल शिक्षा-पद्धति को लागू करने का काम शुरू करे। बिना किसी अनुभव के, अपार आर्थिक तबाही के हालात में यह काम करना पड़ा। शुरू में यह काम मुख्यतः प्रायोगिक स्कूलों में ही किया गया। अपने आरंभिक चरण में "पोली-टेक्निकल" शिक्षा काफी दयनीय थी, यह मुख्यतः स्वयंसेवा, बढ़ईगिरी, कपड़े सीने और जिल्दसाज़ी के काम में भाग लेने तक ही सीमित थी। लेनिन चाहते थे कि सभी शिक्षा संस्थाओं में विद्युतीकरण की शिक्षा गंभीर रूप से दी जाये, इसके लिए उन्होंने काम की रूपरेखा भी तैयार कर दी थी। यह दिसंबर १९२० की बात है।

व्लादीमिर इल्यीच का खयाल था कि हमारे यहां स्कूलों में पोली-टेक्निकल शिक्षा लागू करने का काम बहुत ही धीमी गति से हो रहा है। शिक्षा जन-कमिसारियत में एक मत यह था कि स्कूलों में छोटी कक्षाओं से ही व्यावसायिक शिक्षा दी जानी चाहिए। इस मत के समर्थकों का कहना था कि पोलीटेक्निकल शिक्षा की कोई ज़रूरत नहीं, मोनो-टेक्निकल शिक्षा की ज़रूरत है। ऐसी बातें भी सुनने में आती थीं कि पोलीटेक्निकल शिक्षा सभी जगह लागू करना असंभव है, कि इसे केवल बड़े नगरों में ही लागू किया जाना चाहिए, गांवों में ऐसा करने की कोई आवश्यकता नहीं है। उक्राइना में तो पोलीटेक्निकल शिक्षा के

पड़ रही है, तो आयु सीमा में इस कमी को "पार्टी को" "केवल" (केंद्रीय समिति के निर्देशों का मुद्दा १) व्यावहारिक आवश्यकता के रूप में अस्थाई कदम के तौर पर "देखना चाहिए", जो "देश की गरीबी और तबाहहाली" के कारण उठाना पड़ा है।[8]

इल्यीच ने आगे व्यावसायिक स्कूलों के बारे में, जिनमें स्कूल के द्वितीय चरण की बड़ी कक्षाओं का विलय होना था, जो कुछ लिखा है, उसे प्राय. सातवीं कक्षा तक के स्कूलों पर लागू किया जाता है। लेनिन ने *व्यावसायिक स्कूलों के बारे में लिखा है कि उन्हें* कारीगरों के स्कूल न बनकर पोलीटेक्निकल शिक्षा के केंद्र बनना चाहिए, कि इनमें सामान्य शिक्षा विषयों को काफ़ी स्थान दिया जाना चाहिए, उन्हें पोलीटेक्निकल रंग देना चाहिए। यह बात फ़ैक्टरी-कारखाना शागिर्दी स्कूलों[9] और तकनीकी विद्यालयों पर लागू होती है। और यह बात भूलनी नहीं चाहिए। आगे लेनिन ने इस बात के ठोस निर्देश तैयार करने की ज़रूरत की चर्चा की है कि किस तरह हमारी परि-*स्थितियों में स्कूलों में पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू की जाये।* लेनिन संस्थान के अभिलेखागार में क्रमांक ३८४६ की लेनिन की एक और टिप्पणी है, जिसका संबंध पोलीटेक्निकल शिक्षा से है। वह लिखते हैं "जोड़ा जाये : १) नौजवानों और वयस्कों के लिए पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में, २) स्कूल में (बच्चों द्वारा) स्वयंसेवा और पहलकदमी।

"वयस्कों के लिए – व्यावसायिक शिक्षा का विकास और पोली-टेक्निकल शिक्षा में उसका रूपांतरण।"[10]

यह टिप्पणी कब और किस सिलसिले में लिखी गई इसका कोई *संकेत अभिलेखागार में नहीं है। लेकिन यह टिप्पणी हमारे लिए* नितांत महत्वपूर्ण है।

फ़रवरी १९२१ में प्रकाशित लेनिन के लेख 'शिक्षा जन-कमिसारियत के काम बारे में' तथा उनके द्वारा लिखे गये 'शिक्षा जन-कमिसारियत के कम्युनिस्ट सदस्यों के नाम केंद्रीय समिति के निर्देश' हमें बहुत कुछ देते हैं। 'निर्देशों' में स्कूलों में पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने की आवश्यकता और व्यावसायिक शिक्षा को पोली-टेक्निकल शिक्षा के साथ संलग्न करने की अनिवार्यता की चर्चा की

नहीं हुआ है, स्कूली शिक्षा के कार्य में लेनिन के निर्देशों के पालन के लिए आगे भी संघर्ष की जरूरत है। हम जो रास्ता तय कर चुके है, उससे हमें बहुत-सी गलतियों से बचने में मदद मिलेगी। हम जानते है कि किस स्वयंसेवा से पोलीटेक्निकल स्कूल का गठन शुरू हुआ था, उससे कितना कम हाथ लगता है, लेकिन हम जानते हैं कि सम्पन्नतर रहन-सहन के लिए, रहन-सहन को उच्च स्तर पर उठाने के लिए संघर्ष चल रहा है, और स्कूल इस काम से दरकिनार नहीं रह सकता, उसे बच्चों को वह ज्ञान और कौशल सिखाना चाहिए, जिसकी उन्हें रहन-सहन को विवेकसंगत बनाने के लिए आवश्यकता है; हम जानते है कि हमारी पोलीटेक्निकल शिक्षा को शिल्पों की शिक्षा बनकर नहीं रह जाना चाहिए, लेकिन हम यह भी जानते हैं कि कुछ बुनियादी शिल्प-कार्य करने आने चाहिए, ताकि आधुनिक मशीनों का गहराई से अध्ययन किया जा सके, हम बहुशिल्पी शिक्षा के भी विरुद्ध हैं, जो पोलीटेक्निकल शिक्षा के स्थान पर लागू की जाती रही है। हम बच्चों के उत्पादक श्रम का समर्थन करते है, लेकिन इस बात के विरुद्ध है कि उत्पादक श्रम शिक्षा का स्थान ले और शिक्षा की ओर न्यूनतम ध्यान दिया जाये।. इस विकृति के विरुद्ध पिछले सारे साल संघर्ष चलता रहा है। लेकिन हम उत्पादक श्रम के स्थान पर स्कूल में मात्र शैक्षिक श्रम कराने के भी विरुद्ध है। हम जानते हैं कि शिक्षा और उत्पादक श्रम का पास-पास विद्यमान होना ही काफी नहीं है–इनके बीच घनिष्ठतम संबंध होना चाहिए, लेकिन यह संबंध यंत्रवत नहीं होना चाहिए, वह बहुत सोच-समझकर बनाया गया होना चाहिए। लेनिन इस बात के खिलाफ थे कि लडके-लडकियां केवल स्कूल की चहारदीवारी में ही शिक्षा पायें, वह इस बात का समर्थन करते थे कि किशोर बड़ों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर काम करें, लेकिन हम जानते हैं कि प्रतिष्ठानों में छात्रों का श्रम शैक्षिक दृष्टि से संगठित होना चाहिए, उसपर पोलीटेक्निकल शिक्षा के दृष्टिकोण से विचार किया गया होना चाहिए और इस श्रम के ध्येय शैक्षिक व चरित्र-निर्माणात्मक होने चाहिए।

पोलीटेक्निकल शिक्षा-पद्धति के गठन का जो मार्ग हमने तय किया है, उससे हम बहुत कुछ सीख पाये हैं। सच्चे अर्थों में पोलीटेक्निकल

स्कूल बना पाने के लिए हमें और बहुत कुछ सीखना है, हम
ज़ोरों से निर्माण कर रहे हैं और इसे वैसा बनाकर रहेंगे, जैसा
इसे देखना चाहते थे।

१९३२

उदीयमान पीढ़ी की सार्विक शिक्षा और पोलीटेक्निकल श्रम के वारे में लेनिन के विचार

('युवाजन के वारे में लेनिन के विचार' लेख से उद्धृत)

किशोरो और युवाजन के श्रम के प्रश्न को व्लादीमिर इल्यीच उनकी शिक्षा और श्रम को नये ढग से संगठित करने के प्रश्न के साथ जोड़ते थे। १८९७ मे ही 'नरोदवादी मनसूबेबाजी के कमाल' नामक लेख मे उन्होंने लिखा था " युवा पीढ़ी के शिक्षण को उत्पादक श्रम से सलग्न किये बिना भावी समाज के आदर्श की कल्पना नही की जा सकती न तो उत्पादक श्रम के बिना शिक्षण और शिक्षा को, न ही समानर शिक्षण और शिक्षा के बिना उत्पादक श्रम को उस उच्च स्तर पर पहुचाया जा सकता है, जो प्रविधि के आधुनिक स्तर तथा वैज्ञानिक ज्ञान की आधुनिक स्थिति के लिए अपेक्षित है।" आगे इसी रचना में उन्होंने लिखा "सार्विक उत्पादक श्रम को सार्विक शिक्षा के साथ सयुक्त करने के लिए प्रत्यक्षत सबका यह दायित्व बनाना होगा कि वे उत्पादक श्रम मे भाग ले।"[1]

सो, शिक्षा पाना स्कूल जाना भी सभी के लिए अनिवार्य होना चाहिए और सामाजिक उत्पादक श्रम भी सभी के लिए अनिवार्य होना चाहिए। पार्टी की दूसरी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम मे, एक ओर, १६ वर्ष की आयु तक सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा की तथा, दूसरी ओर, १६ वर्ष तक किशोरो के श्रम की मनाही तथा १६ से १८ वर्ष तक के युवाजन के श्रम को छह घटों तक सीमित करने की मांग की गई थी। १९१७ मे जब पुराने कार्यक्रम के स्थान पर नया कार्यक्रम स्वीकृत करने की आवश्यकता का प्रश्न उठा, तो इल्यीच ने

इस प्रश्न पर आगे काम किया था।

'पार्टी कार्यक्रम पर पुनर्विचार की सामग्री' मे, जो उन्होंने लिखी थी, तत्संबंधी मुद्दे इस प्रकार निरूपित किये गये 'उद्योगपतियो पर स्कूल आयु मे (१६ वर्ष तक) बच्चो के श्रम का उपयोग करने का प्रतिबंध, युवाजन (१६ से २० वर्ष) के श्रम-दिवस की अवधि चार घंटे तक सीमित करना और उन्हें रात को काम करने, स्वास्थ्य के लिए हानिकर प्रतिष्ठानों और खानों मे काम की मनाही"। "१६ वर्ष की आयु तक सभी लड़के-लड़कियों के लिए निश्शुल्क और अनिवार्य सामान्य एव पोलीटेक्निकल (सिद्धांत और व्यवहार मे उत्पादन की सभी प्रमुख शाखाओ से परिचित कराने वाली) शिक्षा; शिक्षा का बच्चों के सामाजिक-उत्पादक श्रम के साथ घनिष्ठ संबंध"।[2] (शब्दो पर जोर लेखक द्वारा)।

यहा अंतिम वाक्यांश पर खास तौर से ध्यान देना चाहिए। इसका मर्म यह है कि स्कूल को न केवल पोलीटेक्निकल ज्ञान और कौशल प्रदान करना चाहिए, बल्कि इस ज्ञान और कौशल का किशोरो के सामाजिक उत्पादक श्रम के साथ घनिष्ठ संबंध होना चाहिए यह श्रम मजबूरन नहीं किया जायेगा, उलटे सबके लिए अनिवार्य होगा इसका संगठन नये ढंग से होगा इस तरह कि यह श्रम-शिक्षा के साथ विज्ञान और प्रविधि के बहुमुखी अध्ययन के साथ घनिष्ठ रूप से संबद्ध हो।

मजदूरों को उत्पादन का संचालन करना सीखना चाहिए – यह कार्यभार १९२० मे विशेषत स्पष्ट रूप से हमारे सामने आया जब गृहयुद्ध पृष्ठभूमि में जा रहा था और आर्थिक कार्यभार अग्रभूमि मे आ रहे थे। मार्च १९२० मे जल-परिवहन के कर्मियो की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस मे लेनिन ने कहा था "लेकिन वह व्यक्ति जो व्यावहारिक जीवन पर नजर रखता है और जिसे जीवन का अनुभव है वह जानता है कि संचालन करने के लिए इसके योग्य होना चाहिए, उत्पादन की सभी परिस्थितिया पूरी तरह से और बारीकी से मालूम होनी चाहिए, इस उत्पादन-कार्य की तकनीक का उसके आधुनिक स्तर पर ज्ञान होना चाहिए, निश्चित वैज्ञानिक शिक्षा प्राप्त होनी चाहिए।[3]

श्रम के प्रश्न अग्रभूमि में आ गये। अप्रैल १९२० में लेनिन ने

उदीयमान पीढ़ी की सार्विक शिक्षा और पोलीटेक्निकल श्रम के बारे में लेनिन के विचार

('युवाजन के बारे में लेनिन के विचार' लेख से उद्धृत)

किशोरों और युवाजन के श्रम के प्रश्न को व्लादीमिर इल्यीच उनकी शिक्षा और श्रम को नये ढंग से संगठित करने के प्रश्न के साथ जोड़ते थे। १८९७ में ही 'नरोदवादी मनसूबेबाज़ी के कमाल' नामक लेख में उन्होंने लिखा था "... युवा पीढ़ी के शिक्षण को उत्पादक श्रम से संलग्न किये बिना भावी समाज के आदर्श की कल्पना नहीं की जा सकती: न तो उत्पादक श्रम के बिना शिक्षण और शिक्षा को, न ही समानांतर शिक्षण और शिक्षा के बिना उत्पादक श्रम को उस उच्च स्तर पर पहुंचाया जा सकता है, जो प्रविधि के आधुनिक स्तर तथा वैज्ञानिक ज्ञान की आधुनिक स्थिति के लिए अपेक्षित है।" आगे इसी रचना में उन्होंने लिखा "सार्विक उत्पादक श्रम को सार्विक शिक्षा के साथ संयुक्त करने के लिए आवश्यक सबका यह दायित्व बनाना होगा कि वे उत्पादक श्रम में भाग लें।"[1]

जो शिक्षा पाना, स्कूल जाना भी सभी के लिए अनिवार्य होना चाहिए और सार्वजनिक उत्पादक श्रम भी सभी के लिए अनिवार्य होना चाहिए। पार्टी की दूसरी कांग्रेस द्वारा स्वीकृत कार्यक्रम में, एक ओर १६ वर्ष की आयु तक सामान्य और व्यावसायिक शिक्षा की व्यवस्था ... १६ वर्ष तक किशोरों के श्रम की मनाही तथा १६ से ... तक के युवाजन के श्रम को छह घंटे तक सीमित करने की ... गयी थी। १९१९ में जब पुराने कार्यक्रम के स्थान पर नया ... करने की आवश्यकता का प्रश्न उठा, तो इल्यीच ने

एकदिवसीय समाचारपत्र 'कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक' के लिए 'पुरानी व्यवस्था के विध्वंस से नई व्यवस्था के सृजन की ओर' विषय पर लेख लिखा था, जिसमे उन्होंने यह समझाया था कि कम्युनिस्ट श्रम क्या है। पहली मई को अखिल रूसी सुब्बोत्निक होने जा रहा था, जिसके सिलसिले में लेनिन ने लिखा "हम... काम को मात्र कर्तव्य समझने और उसी काम को उचित समझने की आदत को, जिसके लिए एक खास दर पर उजरत दी जाती हो, समाप्त करने की चेष्टा करेंगे। हम इस नियम को 'समष्टि व्यक्ति के लिए तथा व्यक्ति समष्टि के लिए', और इस नियम को 'प्रत्येक से उसकी क्षमतानुसार, प्रत्येक को उसकी आवश्यकतानुसार' लोगो के मन मे अच्छी तरह बैठा देने, उसकी आदत बना देने तथा जनसाधारण के दैनंदिन के जीवन में उसे लागू करने की चेष्टा करेंगे। हम कम्युनिस्ट अनुशासन तथा कम्युनिस्ट श्रम को क्रमिक परंतु दृढ रूप से लागू करने की चेष्टा करेंगे।"[4]

२ अक्तूबर १९२० को रूसी कम्युनिस्ट युवा संघ की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस में दिया गया लेनिन का भाषण बिल्कुल विशेष महत्त्व रखता है। यह भाषण लेनिन ने युवाजन को दिया था, जिनसे उन्हें बहुत आशाएं थी। यह भाषण उन्होंने बडी बरीकी से तैयार किया था। उन्होंने कहा था "हम नौजवानो को क्या सिखायें और वे, यदि वास्तव मे कम्युनिस्ट युवक का नाम सार्थक करना चाहते हैं, तो वे किस प्रकार सीखे और उन्हे किस तरह प्रशिक्षित किया जाए, ताकि जो काम हमने आरम्भ किया है, वे उसे पूरा करने और उत्कृष्ट बनाने के योग्य बन सकें।"[5] युवाजन को कम्युनिज्म की शिक्षा पानी चाहिए। लेकिन यह अध्ययन कम्युनिज्म के बारे में जो कुछ लिखा गया है, उसे आत्मसात करने तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। इस सारे ज्ञान को इस तरह जोडना आना चाहिए, जिससे एक समग्र सोच-समझकर तैयार की गई प्रणाली बने, जो कि दैनंदिन और बहुमुखी कार्य में मार्गदर्शन करे। मार्क्सवाद का, उन सब तथ्यों का अध्ययन करना चाहिए जो मानव समाज के विकास के नियमों पर प्रकाश डालते हैं, जो यह दिखाते हैं कि सामाजिक विकास किधर जा रहा है, पूंजीवादी समाज का भी और हमारे समसामयिक यथार्थ

का भी गहराई से अध्ययन करना चाहिए। पुरानी स्कूली शिक्षा, जो ज्ञान देती थी, उसमें से वह अंश चुनना चाहिए, जो कम्युनिज्म के लिए आवश्यक है।

लेनिन इस बात की आवश्यकता पर खास तौर से जोर देते थे कि युवाजन ज्ञान से लैस हों, मानवजाति द्वारा संचित सारा ज्ञान पायें। युवा पीढ़ी को पूर्ववर्ती पीढ़ी से, जिसके सम्मुख सर्वप्रथम बुर्जुआ वर्ग का तख्ता पलटने का कार्यभार था, अधिक ज्ञान पाने की आवश्यकता है। आज के युवाजन को कम्युनिस्ट समाज का निर्माण करना है – इसके लिए व्यापक ज्ञान चाहिए। इल्यीच ने इस बात की चर्चा की कि युवाजन को अपनी नई कम्युनिस्ट नैतिकता बनाने के लिए किस बात की आवश्यकता है, ऐसी नैतिकता बनाने के लिए, जो निजी हितों को सामान्य हितों के अधीन रखे, जो सेनानी और निर्माता के सचेतन अनुशासन का विकास करे, कि युवाजन को संघर्ष में एकजुट होकर काम करने के लिए, अपने सामूहिक श्रम को नये ढंग से संगठित करते हुए काम करना सीखने के लिए क्या चाहिए

"हमें ऐसी पढ़ाई, तरबियत और शिक्षा में विश्वास नहीं है जो जीवन के बावंडरों से अलग-थलग केवल स्कूलों तक सीमित होती है। [. .] हमारे स्कूलों में नौजवानों को मूलभूत ज्ञान प्राप्त होना चाहिए, कम्युनिस्ट विचार स्वयं निश्चित कर लेने की योग्यता प्राप्त होनी चाहिए, उन्हें शिक्षित बनाया जाना चाहिए। स्कूल में विद्याभ्यास के साथ-साथ उन्हें शोषकों से मुक्ति पाने के संघर्ष में भाग लेनेवाला बनना चाहिए।"[6]

"युवक संघ का सदस्य होने का अर्थ है अपने प्रयास और अपनी मेहनत को साझे ध्येय की पूर्ति में लगाना। कम्युनिस्ट तरबियत का यही मतलब है। [..]

"कम्युनिस्ट युवक संघ को चाहिए कि हर काम में सहायता देते हुए, पहलकदमी और उपक्रम का परिचय देते हुए वह तूफानी दल की तरह काम करे। [.]

"अतः कम्युनिस्ट युवक संघ को अपनी शिक्षा, अपनी पढ़ाई और अपनी तरबियत को मजदूरों और किसानों के परिश्रम के साथ जोड़ देना चाहिए, ताकि उसके सदस्य अपने को स्कूलों और केवल कम्युनिस्ट

पुस्तक-पुस्तिकाओं को पढ़ने तक ही सीमित न रखें। मजदूरों और किसानों के साथ कधे से कधा मिलाकर काम करने पर ही वे असली कम्युनिस्ट बन सकते हैं। लोगों को यह दिखा देना चाहिए कि जो लोग युवक सघ से सबधित हैं, वे साक्षर होने के साथ-साथ मेहनत भी कर सकते है। [ ]

"हमें सारे श्रम को, चाहे वह कितना गदा और कष्टसाध्य क्यों न हो, इस प्रकार सगठित करना चाहिए कि हर मजदूर और किसान कहे मैं स्वाधीन श्रम की महान सेना का एक अग हू और ज़मींदारों और पूजीपतियों के बगैर मैं अपने जीवन का निर्माण कर सकता हू, मैं कम्युनिस्ट व्यवस्था क़ायम कर सकता हू। कम्युनिस्ट युवक सघ को चाहिए कि वह हर आदमी को बचपन से ही सचेत तथा अनुशासित श्रम की तरबियत दे। तभी हमें विश्वास होगा कि हमारे सामने जो समस्याएं हैं, वे हल हो जायेंगी।"[7]

युवाजन को "शिक्षा सबधी अपने तमाम कार्यों के प्रति यह रवैया अपनाना चाहिए कि प्रति दिन हर गाव में तथा हर शहर में नौजवान लोग सामूहिक श्रम की किसी एक समस्या को व्यावहारिक रूप से हल करने के लिए काम करें, चाहे वह कितनी ही छोटी, कितनी ही सीधी-सादी समस्या क्यों न हो। जिस हद तक यह काम हर गाव में किया जायेगा, जिस हद तक कम्युनिस्ट प्रतियोगिता का विकास होगा, जिस हद तक नवयुवक अपने श्रम को सगठित करने की क्षमता का परिचय देंगे, उसी हद तक कम्युनिस्ट निर्माण की सफलता सुनिश्चित होती जायेगी।"[8]

दिसबर १९२० में सोवियतों की आठवीं काग्रेस हुई थी, जिसमें विद्युतीकरण की योजना प्रस्तुत की गयी। साथी क्रजीजानोव्स्की[9] ने इस योजना के बारे में रिपोर्ट पेश की। सुविदित है कि लेनिन ने इस अवसर पर कैसा ओजमय भाषण दिया था। उन्होंने कहा था कि विद्युतीकरण की राजकीय योजना हमारा दूसरा पार्टी कार्यक्रम है। हमारा राजनीतिक कार्यक्रम हमारे ध्येय-लक्ष्य गिनाता है, वर्गों और जनसमूह के बीच सबधों की व्याख्या करता है। इसकी पूर्ति आर्थिक निर्माण के कार्यक्रम में की जानी चाहिए। "विद्युतीकरण की योजना के बिना हम वास्तविक निर्माण-कार्य का बीड़ा नहीं उठा सकते। जब हम कृषि, उद्योग और

परिवहन के पुनरुत्थान की, उनके सामजस्यपूर्ण समन्वय की बात कर
है, तो हम व्यापक आर्थिक योजना की चर्चा किये बिना नही रह सकते
यह देखना होगा कि हम एक निश्चित योजना स्वीकार करे बेश
यह पहले कदम के रूप मे स्वीकृत योजना ही होगी। पार्टी का य
कार्यक्रम इतना अपरिवर्तनीय नही होगा, जितना कि हमारा वर्तमा
कार्यक्रम है, जिसमे कोई परिवर्तन केवल पार्टी काग्रेसो मे ही कि
जा सकता है। नही, इस कार्यक्रम को तो हर दिन, हर वर्कशाप मे
हर तहसील मे सुधारा जायेगा, इसे ठोस, ब्योरेवार रूप दिया जायेगा
इसे परिष्कृत किया जायेगा और इसका रूप बदला जायेगा। यह ह
पहले खाके के तौर पर चाहिए, जो सारे रूस के सामने पेश होगा
एक महान आर्थिक योजना के तौर पर चाहिए, जो कम से कम द
साल के लिए हो और यह दिखाती हो कि किस तरह रूस को कम्युनिज
के लिए आवश्यक सच्चे आधार पर लाया जाये।"[10]

सोवियतो की आठवी काग्रेस मे कहे गये लेनिन के ये शब्द
हर कोई जानता है कि "**कम्युनिज्म का अर्थ है सोवियत सत्ता ज**
सारे देश का विद्युतीकरण"।[11] लेकिन बहुत कम लोग यह जान
है कि उन्होंने यह भी कहा था कि जनसमूह के बिना विद्युतीकर
की योजना पर अमल नही किया जा सकता, कि केवल मजदूरो
ही नही, अधिसख्य किसानो को भी देश के सम्मुख प्रस्तुत कार्यभ
की समझ होनी चाहिए। लेनिन ने कहा था कि जनसाधारण
सांस्कृतिक स्तर ऊचा उठाया जाना चाहिए ताकि हर नया बना बिजल
घर "जनता को विद्युत ज्ञान" दे। विद्युतीकरण की योजना स
पाठ्यपुस्तक मे समझाई जानी चाहिए और सभी स्कूलो मे पढाई ज
चाहिए।

विद्युतीकरण सबधी रिपोर्ट पर सोवियतो की आठवी काग्रेस
निर्णय के मसविदे मे, जो लेनिन ने लिखा था कहा गया है

"काग्रेस अपने सरकार को यह काम सौपती है और ट्रेड-यूनिय
के अखिल रूसी केंद्रीय सघ व अखिल रूसी ट्रेड-यूनियन काग्रेस
अनुरोध करती है कि वे इस योजना के व्यापकतम प्रचार के लिए
नगर व देहात के व्यापकतम जनसमूह को इससे परिचित कराने
लिए सभी आवश्यक कदम उठाये। इस योजना का अध्ययन बिना कि

अपवाद के जनतत्र के सभी शिक्षा-सस्थानो में किया जाना चाहिए। हर बिजलीघर और कमोबेश ढग से काम कर रहा हर कारखाना और राजकीय फार्म विद्युत से, आधुनिक उद्योग से परिचय का केंद्र और विद्युतीकरण योजना के प्रचार तथा उसके नियमित शिक्षण का केंद्र बन जाना चाहिए। सभी लोगो को, जिन्हें पर्याप्त वैज्ञानिक या व्यावहारिक अनुभव प्राप्त हो, उन्हें विद्युतीकरण योजना के प्रचार के काम मे तथा इस योजना को समझने के लिए आवश्यक ज्ञान लोगों को प्रदान करने के काम में लगाया जाना चाहिए।"[12]

इस काग्रेस के एक साल बाद 'रूस का विद्युतीकरण' नामक पुस्तक स्कूलो के लिए लिखी गई। लेनिन इस पुस्तक से बहुत सतुष्ट थे। वह चाहते थे कि हर ज़िला पुस्तकालय मे इस पुस्तक की कुछ प्रतिया हो, कि हर बिजलीघर मे यह पुस्तक हो, कि हर जनशिक्षक इस पुस्तक को पढ़े और हृदयगम करे और केवल पढ़े ही नही, न केवल स्वय समझे और आत्मसात करे, बल्कि अपने छात्रो को भी उसे सरल और सुबोध ढंग से समझा सके।

साल भर बाद, २८ दिसबर १९२१ को सोवियतो की अखिल रूसी नौवी काग्रेस मे स्वीकृत 'आर्थिक कार्य के प्रश्नो पर अनुदेशो' मे लेनिन ने लिखा

"नौवी काग्रेस यह मानती है कि नये काल में शिक्षा जन-कमिसारियत का कार्यभार यह है कि वह कम से कम समय मे किसानो और मजदूरो के बीच से सभी क्षेत्रो के विशेषज्ञ तैयार करे, और यह प्रस्ताव रखती है कि स्कूल मे तथा स्कूल के बाहर शिक्षा-कार्य का सारे जनतत्र के भी और अपने-अपने प्रदेश व अपने-अपने इलाके के भी तात्कालिक आर्थिक कार्यभारो के साथ सबध को और भी अधिक मजबूत बनाया जाये।"[13]

सोवियतो की आठवी काग्रेस के साथ-साथ जनशिक्षा के प्रश्नो पर पार्टी सम्मेलन हुआ। सारे काम को नये ढग से सगठित किया जाना था, देश के सम्मुख प्रस्तुत कार्यभारो को ध्यान मे रखा जाना था। स्कूली शिक्षा-पद्धति को सच्चे अर्थों मे पोलीटेक्निकल बनाना था, उत्पादन के साथ उसका घनिष्ठ सबध जोड़ना था। पोलीटेक्निकल पद्धति के सिद्धातो का अनुसरण करते हुए उदीयमान पीढ़ी

प्रशिक्षण को आगे बढ़ाना है, मगर किस ध्येय की ओर? इसका उत्तर हम रूसी युवा कम्युनिस्ट संघ की पांचवीं कांग्रेस के नाम लेनिन के अभिवादन संदेश में पायेंगे। यह कांग्रेस युवा कम्युनिस्ट इंटरनेशनल की कांग्रेस से दो महीने पहले हुई थी। लेनिन ने लिखा था: "मुझे विश्वास है कि युवाजन अपना विकास इतनी सफलतापूर्वक कर पायेंगे कि विश्व क्रांति का अगला क्षण परिपक्व होने के समय तक अपने कार्यभार की पूर्ति के लिए पूरी तरह तैयार सिद्ध हों।"[17]

१६३२

कमरा अलग आरामदेह और विज्ञान की नवीनतम अपेक्षाओं के अनुरूप होती है। धनवान और ऊंचे ओहदोंवाले लोग यहां अपनी सन्तानों को शिक्षित करते हैं। इन जिम्नेजियमों की फीस बहुत अधिक होती है। यहां बच्चों को लाड़-प्यार मिलता है — उनका बहुत ध्यान रखा जाता है। उन्हें बहुत-से मामलों में आजादी मिली होती है, बहुत-सा प्रबंध कार्य वे स्वयं करते हैं, अध्यापक उन पर भरोसा करते हैं। श्रेष्ठतम अध्यापक उन्हें प्रकृति का, कला का सौंदर्य देखना सिखाते हैं, उन्हें विज्ञान के मर्म में पैठना सिखाते हैं। उन्हें स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट और स्फूर्तिमान बनाने की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। साथ ही बच्चों में इच्छा-बल, निर्धारित लक्ष्य को प्राप्त करने में अध्यवसाय, कर्मठता, अपना और दूसरों का संचालन करने की योग्यता, आदि गुण विकसित करने की चेष्टा की जाती है। दूसरी ओर, अध्यापक बच्चों के मस्तिष्क में बुर्जुआ विश्वदृष्टिकोण की सुदृढ़ जड़ें जमाने, इस दृष्टिकोण को इतिहास, नैतिकता और दर्शन के लिहाज से उचित ठहराने का भी प्रयत्न करते हैं। ऐसा करना इसलिए और भी अधिक आसान होता है कि "ग्राम जिम्नेजियमों" में बच्चे जीवन से, उसके दुखों-कठिनाइयों और संघर्ष से कटे होते हैं। ऐसे स्कूल में शिक्षा पा रहे बालक का साथी कोई मजदूर का बेटा कभी नहीं हो सकता, जिसका परिवार बेरोजगारी के कारण भूखों मर रहा हो। उसके मन में स्वामित्व के प्रति जो दृष्टिकोण बिठाया जाता है, वह उसकी उस प्यारी धाय की कहानियों से नहीं बदल सकता, जो उसकी हर इच्छा को पहचानती थी और ऐसी-ऐसी मजेदार कहानियां सुनाती थी कि जब गांव से थोड़ी दूर चाय से भरा वैगन पटरी से उतर गया, तो गांववाले कितने खुश हुए थे, जो जितनी उठा सकता था, उठा लाया। ऐसे बालक की बचपन की छापें उसे लोगों का दुख दूर करने, कठिन क्षण में उनकी मदद करने की प्रेरणा नहीं देतीं।

यदि स्कूल टुटपुंजिया वर्ग के बच्चों के लिए होता है, तो उसका ध्येय नौकरशाही के कर्मचारी, ऐसे "बौद्धिक" कर्मचारी तैयार करना होता है, जो समाज के फल का निश्चित अंश पाने के अधिकार के बदले जनता पर शासन करने में प्रभुत्वशाली वर्ग की सहायता करेंगे। यही अधिसंख्य माध्यमिक और उच्च विद्यालयों का ध्येय है, जो हर

श्रेष्ठ व्यक्ति हैं, उनके आदेशों का पालन करना चाहिए। स्कूल में छात्र हर दिन, हर घंटे, हर पल आदेश-पालन की, बड़ों के प्रति आदर की मश्क करता है। छोटी उम्र से ही छात्रों में शक्ति, साथ ही बुर्जुआ शिक्षा के प्रति श्रद्धामिश्रित भय की भावना विकसित की जाती है। मातृभाषा, भूगोल, इतिहास के पाठ बच्चों में बिल्कुल बेतुकी अंधराष्ट्रवादी भावना विकसित करने का साधन होते हैं। स्कूल छात्रों में साथियों के भाईचारे की भावना का हनन करने का प्रयत्न करता है। प्रोत्साहनों, पुरस्कारों, सज़ाओं और अंकों की सारी व्यवस्था का ध्येय ही यह होता है कि छात्रों के बीच मुकाबला हो, स्पर्द्धा हो। संक्षेप में जनसाधारण के लिए बुर्जुआ स्कूलों का कार्यभार है छात्रों को बुर्जुआ नैतिकता में पगाना, उनमें वर्गपरक आत्मचेतना पुष्ट करना, उन्हें ऐसा रेवड़ बनाना, जिस पर हुक्म चलाना आसान हो।

कहना न होगा कि देश के औद्योगिक और ऐतिहासिक विकास के स्तर के अनुसार वर्गपरक स्कूल के रूप भी बदलते हैं। अग्रणी देशों में स्कूल अधिक परिष्कृत, उनकी विधियां अधिक सूक्ष्म, पाठ्यक्रम अधिक व्यापक तथा स्कूली शिक्षा के ध्येय अधिक प्रच्छन्न होते हैं - किंतु सार वही रहता है। उदाहरण के लिए मज़दूरों के बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा के प्रश्न को लें। हमारे यहां, रूस में अभी कुछ साल पहले तक "बावर्चिनों की औलादों" को माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश ही नहीं मिलता था। जर्मनी में माध्यमिक विद्यालय का मार्ग सीधे-सीधे नहीं – प्रच्छन्न रूप से कठिन बनाया गया है प्राइमरी और मिडल स्कूलों के पाठ्यक्रम इस तरह बनाये गये हैं कि प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर चुका छात्र कुछ विषयों के लिहाज से तो जिम्नेज़ियम की चौथी कक्षा में प्रवेश पा सकता है और कुछ विषयों के लिहाज से जिम्नेज़ियम की "तैयारी" कक्षा में ही। सो प्राइमरी स्कूल के छात्र को जिम्नेज़ियम में दाखिला पाने में २-३ साल फालतू खर्च होते हैं। इंगलैंड में प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय में जाने में कोई कठिनाई नहीं है। इसके विपरीत इंगलैंड में बहुत सी छात्रवृत्तियां दी जाती हैं जिनसे प्राथमिक विद्यालय के आज्ञाकारी और कर्तव्यपरायण छात्र माध्यमिक और उच्च विद्यालय में शिक्षा जारी रख सकते हैं। इंगलैंड का बुर्जुआ वर्ग कुछ इस तरह सोचता है माध्यमिक

श्रेष्ठ व्यक्ति हैं, उनके आदेशों का पालन करना चाहिए। स्कूल में छात्र हर दिन, हर घंटे, हर पल आदेश-पालन की, बड़ों के प्रति आदर की मश्क करता है। छोटी उम्र में ही छात्रों में शक्ति, संपन्नता, बुर्जुआ *शिक्षा के प्रति श्रद्धामिश्रित भय* की भावना विकसित की जाती है। मातृभाषा, भूगोल, इतिहास के पाठ बच्चों में बिल्कुल बेलगाम अंधराष्ट्रवादी भावना विकसित करने का साधन होते हैं। स्कूल छात्रों में साथियों के भाईचारे की भावना का हनन करने का प्रयत्न करता है। प्रोत्साहनों, पुरस्कारों, सजाओं और अंकों की सारी व्यवस्था का ध्येय ही यह होता है कि छात्रों के बीच मुकाबला हो, स्पर्द्धा हो। संक्षेप में जनसाधारण के लिए बुर्जुआ स्कूलों का कार्यभार है छात्रों को बुर्जुआ नैतिकता में पगाना, उनमें वर्गपरक आत्मचेतना कुंठित करना, उन्हें ऐसा रेवड़ बनाना, जिस पर हुक्म चलाना आसान हो।

कहना न होगा कि देश के औद्योगिक और ऐतिहासिक विकास के स्तर के अनुसार वर्गपरक स्कूल के रूप भी बदलते हैं। अग्रणी देशों में स्कूल अधिक परिष्कृत, उनकी विधियां अधिक सूक्ष्म, पाठ्यक्रम अधिक व्यापक तथा स्कूली शिक्षा के ध्येय अधिक प्रच्छन्न होते हैं—किंतु सार वही रहता है। उदाहरण के लिए मजदूरों के बच्चों के लिए माध्यमिक शिक्षा के प्रश्न को लें। हमारे यहां, रूस में अभी कुछ साल पहले तक "बावर्चिनों की औलादों" को माध्यमिक विद्यालयों में प्रवेश ही नहीं मिलता था। जर्मनी में माध्यमिक विद्यालय का मार्ग सीधे-सीधे नहीं—प्रच्छन्न रूप से कठिन बनाया गया है प्राइमरी और मिडल स्कूलों के पाठ्यक्रम इस तरह बनाये गये हैं कि प्राइमरी स्कूल की पढ़ाई पूरी कर चुका छात्र कुछ विषयों के लिहाज से तो जिम्नेज़ियम की चौथी कक्षा में प्रवेश पा सकता है और कुछ विषयों के लिहाज से जिम्नेज़ियम की "तैयारी" कक्षा में ही। सो प्राइमरी स्कूल के छात्र को जिम्नेज़ियम में दाखिला पाने में २-३ साल फालतू लगाने ने हैं। इंगलैंड में प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक विद्यालय में जाने कोई कठिनाई नहीं है। इसके विपरीत, इंगलैंड में बहुत-सी छात्र- [illegible] दी जाती हैं, जिनमें प्राथमिक विद्यालय के आज्ञाकारी और [illegible] छात्र माध्यमिक और उच्च विद्यालय में शिक्षा जारी रख [illegible]। इंगलैंड का बुर्जुआ वर्ग कुछ इस तरह सोचता है: माध्यमिक

गिर्द प्रकृति और सामाजिक जीवन में होनेवाली घटनाओं को स्पष्ट समझते हों, ऐसे लोग, जो हर तरह के, शारीरिक भी और मानसिक भी श्रम के लिए सिद्धात और व्यवहार में तैयार हों, जिन्हें विवेकसम्मत, सारगर्भित, सुदर और हर्षमय सामाजिक जीवन का निर्माण करना आता हो। समाजवादी समाज को ऐसे लोगों की आवश्यकता है, उनके बिना समाजवाद की पूर्ण सिद्धि नहीं हो सकती।

ऐसे लोगों को विकसित कर पाने में सक्षम होने के लिए स्कूल कैसा होना चाहिए?

सर्वप्रथम, स्कूल को इस बात का भरसक प्रयत्न करना चाहिए कि उदीयमान पीढ़ी का स्वास्थ्य सुदृढ़ हो, वह बलशाली बने। उसे बच्चों को पौष्टिक आहार, आरामदेह और गरम वस्त्र दिलाने चाहिए, इस बात की चिंता करनी चाहिए कि बच्चे अच्छी नींद सोयें, उनमें अपने शरीर की देख-रेख करने की आदत पड़े, वे ताजी, साफ़ हवा में काफी समय रहें, पर्याप्त गतिशील हों। प्रभुत्वशाली वर्ग अपने बच्चों को यह सब प्रदान करते हैं, लेकिन आवश्यकता इस बात की है कि यह सब सभी बच्चों को उनके माता-पिता की आर्थिक स्थिति कैसी भी क्यों न हो, उपलब्ध हों। गर्मियों में स्कूलों को देहात में स्थानान्तरित करना चाहिए। स्कूल में बिल्कुल छोटी उम्र से ही बच्चे की बाह्य इंद्रियां – दृष्टि, श्रवण और स्पर्श शक्ति, आदि – विकसित करनी चाहिए, क्योंकि इन इंद्रियों की मदद से ही मनुष्य बाह्य जगत का ज्ञान पाता है। इन इंद्रियों की संवेदनशीलता और विकास पर ही बोध की शक्ति और विविधता निर्भर होती है। शिक्षाशास्त्री, विशेषतः फ्रेबेल,[1] बहुत पहले से यह इंगित करते आये हैं कि छोटी उम्र से ही बच्चों को [illegible] आदि ग्रहण करने का, उन्हें सुव्यवस्थित करने का अवसर देना चाहिए। बच्चे को अपनी बाह्य इंद्रियों से काम लेना सिखाना चाहिए। बच्चा बिल्कुल छोटी उम्र में ही प्रेक्षण करने की चेष्टा करता है। उसे ऐसा करना सिखाना चाहिए। मॉन्टेसरी के शिक्षण की पद्धति इसी बात की ओर लक्षित है कि शब्दों में नहीं [illegible] में सब कुछ बच्चों को प्रेक्षण करना और अपनी बाह्य इंद्रियों से काम लेना सिखाया जाये। बहुत छोटी उम्र में ही बच्चा [illegible] को [illegible] से – अपनी [illegible], [illegible] और [illegible]

वृत्तियों को सुदृढ और गहन करे, उसे यह दिखाये कि मानव समाज
का आधार श्रम है, उसे सृजनशील उत्पादक श्रम से खुशी पाना सिखाये
उसे यह अनुभव कराये कि वह भी इस समाज का अंश है, उसका
उपयोगी सदस्य है। अनुकरण की प्रबल प्रवृत्ति के फलस्वरूप श्रम संबंधी
विभिन्न दक्षताए पाना आसान होता है, बच्चे को ये दक्षताए देनी
चाहिए, उसे काम करना सिखाना चाहिए। यह बात नितांत महत्वपूर्ण
है कि काम का स्वरूप सामूहिक हो, क्योकि इस तरह बच्चे मिल
जुलकर काम करना और जीना सीखते हैं। काम से ही अपनी शक्ति
अपनी क्षमता का सही मूल्याकन करना आता है, आदमी उसे न बढ़ा
चढाकर और न ही घटाकर देखना सीखता है। हमउम्रों के साथ सयुक्त
कार्य और सयुक्त खेलो से, बडो के श्रम एव जीवन मे विभिन्न रूपों
मे भाग लेने से बच्चे को सामाजिक आचार-व्यवहार के नियम सिखाने
के लिए प्रचुर सामग्री मिलती है।

बच्चे के विकास के इस काल मे स्कूल को शिशु विहार का काम
जारी रखते हुए बच्चे की सृजन-प्रेरणा को उत्पादक, दूसरो के लिए
आवश्यक श्रम का रूप ग्रहण करने मे मदद करनी चाहिए। स्कूल
मे बच्चो को श्रम सबधी कुछ सामान्य आदते सिखाई जानी चाहिए,
उन्हे सामाजिक सबधो का प्रेक्षण करने का अवसर देना चाहिए, एक
दूसरे की मदद करते हुए और अनेक छापो की सह-अनुभूति पाते हुए
दूसरों के साथ रहना सीखने का अवसर देना चाहिए। ७ मे १२ वर्ष
की आयु वह आयु है, जब बच्चे प्राथमिक विद्यालय मे जाते हैं। प्रा-
थमिक विद्यालय, निस्सदेह, सबके लिए एक-सा होना चाहिए। यह
मुख्यतः व्यावहारिक होना चाहिए, इसमे श्रम-सिद्धात का व्यापक उपयोग
होना चाहिए और सामाजिक वृत्तिया सुदृढ की जानी चाहिए।

स्कूल का दूसरा चरण उस आयु से सबद्ध है, जिसमे आत्म-
विश्लेषण, प्राप्त छापो का समाधन और व्यवस्थापन होता है। यह अध्ययन
का काल है, किशोर-किशोरिया स्वय अपना, समाज का, ज्ञान-शाखाओं
और विभिन्न कौशलो का अध्ययन करते है। यहा आलोचनात्मक
चिन्तन विशेषत सक्रिय होता है। इस काल मे व्यक्तित्व का निर्माण
होता है। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि इस समय तक छात्र के पास
मन पर पड़ी छापो और तथ्यो का काफी बड़ा भडार हो। इन तथ्यों

को वह निश्चित परिप्रेक्ष्य मे व्यवस्थित करता है उसे इन पर चारो ओर मे प्रकाश डालने की आवश्यकता अनुभव होती है यह विश्व-दृष्टिकोण के निरूपण का काल है। यह वह काल है, जिसमे छात्र को एक विधि, प्राप्त ज्ञान को व्यवस्थित करने का सूत्र दिया जाना विशेषत महत्वपूर्ण है। ये वे वर्ष है, जब छात्रो का इच्छाबल कुछ हद तक क्षीण पडता है, निर्माणाधीन व्यक्तित्व अपने आप मे सिमटता है, उसका बाह्य जीवन किसी निश्चित क्रमानुसार चलता है। यह बात नितात महत्वपूर्ण है कि इस समय तक किशोर-किशोरियो को श्रम की और सामाजिक जीवन की पक्की आदत पड चुकी हो। इस काल मे ही, जबकि अपने अह की सृजनात्मक अभिव्यक्ति कुछ क्षीण पडती है, विभिन्न उत्पादन शाखाओ मे कार्य-विधि सिखाई जानी चाहिए।

उच्च विद्यालय विशेषीकृत शिक्षा प्रदान करना है अत वह सारत सभी के लिए नही हो सकता। हम यहा इसकी चर्चा नही करेगे।

सो, शिशु विहार, प्राथमिक विद्यालय और माध्यमिक विद्यालय – ये सब सामान्य विकास की परस्पर सबद्ध कडिया है। समाजवादी शिक्षा-पद्धति अब तक की सारी शिक्षा पद्धति से मुख्यत इस बात मे भिन्न होनी चाहिए कि इसका एकमात्र ध्येय है छात्र का यथासभव पूर्ण बहुमुखी विकास, इस शिक्षा-पद्धति को छात्र के व्यक्तित्व को दबाना नही चाहिए, बल्कि उसके निरूपण मे सहायता मात्र करनी चाहिए समाजवादी स्कूल स्वतत्र स्कूल है जिसमे कवायद रट्टबाजी का कोई स्थान नही है।

लेकिन व्यक्तित्व के निरूपण मे सहायता प्रदान करते हुए स्कूल को छात्र को इस बात के लिए भी तैयार करना चाहिए कि वह अपना व्यक्तित्व समाजोपयोगी श्रम मे प्रकट कर सके। अत समाजवादी शिक्षा-पद्धति की दूसरी विशिष्टता यह होनी चाहिए कि यह बच्चा के उत्पादक श्रम का व्यापक विकास करे। आजकल श्रम-विधि' की बहुत चर्चा हो रही है, लेकिन समाजवादी स्कूल मे केवल श्रम-विधि ही नही प्रयुक्त होनी चाहिए, बल्कि बच्चो द्वारा उत्पादक श्रम किए जाने का भी प्रबध होना चाहिए। समाजवादी बाल-श्रम के शोषण का विरोध करते है, लेकिन वे बच्चो द्वारा यथाशक्ति बहुमुखी विकास

कारी श्रम किये जाने के समर्थक हैं। उत्पादक श्रम बच्चो को न केवल भविष्य में समाज का उपयोगी सदस्य बनाता है, बल्कि वर्तमान में ही उन्हे ऐसा सदस्य बनाता है। इस बात की चेतना का बच्चो पर अपार शैक्षिक, चरित्र निर्माणकारी प्रभाव पड़ता है। बुर्जुआ स्कूल ने इस बात के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किये हैं कि बाल-श्रम को किस प्रकार सगठित किया जा सकता है। श्रम और बागबानी मंडलियां, सांख्यिकी के आकडे जमा करने में सहायता, पत्रों की छटाई और वितरण में मदद, सैनिकों के लिए गरम कपडे सीना और बुनना, अमरीकी स्कूल छात्रो द्वारा सडको की सफाई, खाना बनाना, हिसाब रखना, खाद्य पदार्थों मे मिलावट का पता लगाना, इश्तहार चिपकाना, अखबार, पर्चे, किताबें बाटना, इत्यादि – उत्पादक श्रम के सगठन करने के इन सभी अनुभवो को एकत्रित, वर्गीकृत, अनुपूर्त और विकसित करना चाहिए, जहा तक हो सके इनका स्वरूप चहुंमुखी बनाया जाना चाहिए। इस काम मे ट्रेडयूनियनो, सहकारी समितियों, किसानों के ग्रामीण संगठनों को शिक्षकों की मदद को आना चाहिए। यह काम महत्वपूर्ण है, इसे पूरा करना पूर्णत सम्भव है और इसे तुरत ही हाथ मे लेना चाहिए। कहना न होगा कि वह स्कूल, जो बच्चों के उत्पादक श्रम का सगठन करेगा, वह जीवन के साथ, वास्तविकता के साथ हजारों-हजार सूत्रों से जुड़ा होगा। शिक्षा के साथ घनिष्ठ रूप से सबधित उत्पादक श्रम स्कूल मे स्थान पा लेगा, तो शिक्षा भी सौ गुनी अधिक गहन और जीवनमय हो जायेगी। और ऐसे स्कूल में जो लोग प्रशिक्षित होंगे, वे श्रम के लिए हर दृष्टि से तैयार होंगे, कोई भी काम हाथ मे लेने की योग्यता उनमे होगी, किसी भी मशीन, उत्पादन की किन्हीं भी परिस्थितियों के अनुकूल वे अपने को बना सकेंगे। ये लोग वह मानसिक श्रम करने मे भी सक्षम होगे, जो अभी तक एक विशेषाधिकारसम्पन्न सम्तर की पहुच मे था और जिसे करना सारी आबादी को आना चाहिए, ताकि वह नौकरशाही पर निर्भरता से छुटकारा पा सके और स्वय अपने जीवन की कर्ता-धर्ता बन सके।

समाजवादी स्कूल की कल्पना केवल निश्चित सामाजिक परिस्थितियों मे ही की जा सकती है, क्योंकि वह समाजवादी इसलिए नहीं होता कि उसका सचालन समाजवादियों के हाथ में होता है, बल्कि इसलिए

निजी प्रयास हो सकता था, राजकीय नही, क्योकि राजकीय स्कूल का स्वरूप तो शासक वर्ग, बुर्जुआ वर्ग ही निर्धारित करता था और वह जो ध्येय रखता था, वे पूर्णत: भिन्न थे। बुर्जुआ वर्ग स्कूली शिक्षा-पद्धति बनाते समय अपने हितो को, अपना वर्ग-प्रभुत्व बनाये रखने की आवश्यकता को ही ध्यान मे रखता था, न कि व्यक्ति और समाज के हितो को।

केवल जन-सरकार ही स्कूली शिक्षा का प्रबध करते हुए व्यक्ति और समाज के हितो को प्रस्थान बिंदु मान सकती है। लेकिन जन-सरकार किस क्षण सत्ता मे आती है, इसके अनुसार व्यक्ति के हितो और समाज के हितो की समझ भिन्न-भिन्न होगी। यदि वह पूंजीवादी सबधो के प्रभुत्व के काल मे सत्ता ग्रहण करती है, तो जन-सरकार की रुचि केवल इस बात मे होती है कि स्कूली शिक्षा को यथासभव अधिक जनवादी बनाया जाये। स्कूल के जनवादीकरण से ज्ञान का जनवादीकरण होता है और वह केवल प्रभुत्वशाली वर्ग की थाती नही बन पाता है।

लेकिन जब जन-सरकार बढती सामाजिक क्राति के क्षण मे सत्ता पाती है, तो उसे व्यक्ति और समाज के हितों को ध्यान मे रखते हुए पुराने वर्गाधारित स्कूल को, जो घोर अन्याय बन गया होता है, नष्ट करना चाहिए और ऐसी स्कूली पद्धति का निर्माण करना चाहिए, जो दत्त क्षण की आवश्यकताओ के अनुरूप हो। उदीयमान समाजवादी व्यवस्था की आवश्यकता यह होती है कि इस व्यवस्था के काबिल लोग शिक्षित किये जाये। जहा पूजीवादी व्यवस्था का लक्षण श्रम-शक्ति की फिजूलखर्ची, कुछ लोगो द्वारा अत्यधिक श्रम और कुछ द्वारा मजबूरन निठल्लापन था, वही समाजवादी व्यवस्था का विशिष्ट लक्षण सभी लोगो के बीच श्रम का विवेकसगत, योजनाबद्ध, समुचित विभाजन होना चाहिए, इसमे श्रम विवश होकर नही, स्वेच्छा से किया जानेवाला हो जाना चाहिए। इसके लिए ऐसे लोगो की आवश्यकता है, जो मानसिक और शारीरिक दोनो तरह का श्रम समान रूप से कर सकते हो, जो उत्पादन की निरतर परिवर्तनशील परिस्थितियो के अनुकूल अपने को ढाल [illegible] हो, अपने काम पर अपने व्यक्तित्व की छाप छोड सकते [illegible], का स्वरूप स्वय ही लोगो को इस भावना मे शिक्षित इस दिशा मे ढालेगा, लेकिन मजबूरन श्रम से स्वैच्छिक

श्रम की ओर, सकीर्णविशेषज्ञतावाले नीरस श्रम से चहुमुखी श्रम की ओर सक्रमण एक लबी प्रक्रिया है, जो आरम्भ मे बहुत कठिन होगी है और बिल्कुल भिन्न परिस्थितियो मे विकसित नई पीढी के होने पर ही सारे समाज का पुनर्गठन कर सकती है। इस भावी पीढी को शिक्षित करना ही समाजवादी स्कूल का कार्यभार है।

१६१८

लेकिन बुर्जुआ वर्ग द्वारा मजदूरों को दी जानेवाली व्यावसायिक शिक्षा पर विशिष्ट छाप थी। कारखानेदार के लिए मजदूर, भले ही वह सुप्रशिक्षित मजदूर होता, "काम करनेवाले हाथ" ही बना रहता था। उद्योगपति को दक्ष हाथ चाहिए थे, लेकिन केवल "हाथ" ही। वह इन "हाथों" को प्रशिक्षित करने की चिंता करता था, क्योंकि यह उद्योग के विकास की मांग थी, लेकिन वह इस बात का जरा भी खयाल नहीं करता था कि मजदूर उद्योग की अपनी शाखा की आवश्यकताएं समझे, कि वह अपने उद्योग का संचालन करना सीख पाये – उत्पादन के संचालन की चिंता उद्योगपति महोदय करते थे, मजदूरों का कर्तव्य बस इस बात का ध्यान रखना था कि वे कारखाने के लिए जो काम करते हैं – वह अच्छी तरह से किया जाये।

अब व्यावसायिक शिक्षा का स्वरूप भिन्न होना चाहिए। बदल गई परिस्थितियों ने मजदूरों को एक साथ ही बड़े उत्पादन का स्वामी भी और कर्मी भी बना दिया है। इसलिए व्यावसायिक शिक्षा को मजदूर को यह सिखाना भी होना चाहिए कि वह कैसे काम करे और यह भी कि वह उत्पादन का प्रबंध कैसे करे, उस पर नियंत्रण कैसे रखे, कैसे हिसाब-किताब रखे। अब मजदूर को संकीर्ण व्यावसायिक शिक्षा नहीं, बल्कि व्यापकतम व्यावसायिक शिक्षा चाहिए। मजदूर को मशीन पर काम करना ही नहीं आना चाहिए, बल्कि यह भी पता होना चाहिए कि यह मशीन कैसे बनी हुई है, कि और कैसी-कैसी मशीनें हैं, किस काम के लिए कौन-सी मशीन चाहिए, कि अच्छी से अच्छी मशीनें कहां, किस कीमत पर खरीदी जा सकती हैं, कि उनका आयात करने की जरूरत है या नहीं, ऐसा करना लाभदायक होगा या नहीं.. उसे सारा हिसाब लगाना, हर बात का ध्यान रखना आना चाहिए। इसके लिए उसे यांत्रिक ड्राइंग आनी चाहिए, तरह-तरह की गणनाएं करनी आनी चाहिए, यांत्रिकी और उसके इतिहास का ज्ञान होना चाहिए, आर्थिक भूगोल का ज्ञान होना चाहिए। उसे संसाधित किये जानेवाले [illegible] के गुणों का भी ज्ञान होना चाहिए, यह पता होना चाहिए कि यह कहां और कैसे पैदा किया जाता है, इत्यादि। उसे यह पता होना चाहिए कि उसके अपने और दूसरे देशों में [illegible] की कितनी आवश्यकता है, किस चीज की अधिक मांग है, उत्पादन [illegible] कहां और कैसे [illegible]

जा सकता है, उसका मूल्य कैसे निर्धारित किया जाये, इत्यादि-इत्यादि। और इस सबके साथ उन परिस्थितियो की समझ भी घनिष्ठ रूप से सबद्ध है, जिनमे मजदूर एक साथ ही स्वामी भी हो सकता है, उसे पूजीवादी व्यवस्था और समाजवादी व्यवस्था के सार को समझना चाहिए। यदि मजदूर उत्पादन का स्वामी बनना चाहता है, तो उसे और भी बहुत कुछ जानना चाहिए।

हमारे यहा ऐसे मजदूर विश्वविद्यालय[1] बन गये है, जहा सकीर्ण व्यावसायिक प्रशिक्षण के साथ-साथ मजदूरो को वह व्यापक ज्ञान भी दिया जाता है, जो उन्हे उत्पादन का स्वामी बनाता है, यह अतोक्त नवजीवन के निर्माण के वर्तमान चरण मे विशेषत महत्वपूर्ण है। स्कूलेतर व्यावसायिक शिक्षा ऐसी ही होनी चाहिए।

जहा तक स्कूल आयु मे व्यावसायिक शिक्षा का सवाल है वह बहुत छोटी उम्र मे नही शुरू होनी चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि बहुत अच्छे सामान्य शिक्षा विद्यालय सर्वत्र खोले जाये, लेकिन वैसे नही जैसे अब हैं। ऐसे विद्यालयो मे बच्चो को केवल किताबी ज्ञान नही दिया जाना चाहिए, बल्कि यह भी सिखाया जाना चाहिए कि कोई भी काम कैसे सबसे अच्छी तरह शुरू किया जा सकता है, कैसे तरह-तरह के औजारो से काम लेना चाहिए, भाति-भाति के श्रम की सामान्य शिक्षा दी और बच्चो की दृष्टि व हाथो की गतिया विकसित की जानी चाहिए। ऐसे स्कूल मे बच्चे के रुझान और क्षमताए उभरेगे और वह स्कूल की शिक्षा पूरी करके उस श्रम मे प्रवृत्त हो सकेगा, जो उसे सबसे अधिक पसद है, जो उसकी शक्ति और योग्यता के अनुरूप है। तब वह अपना व्यवसाय आसानी से और जल्दी ही सीख जायेगा। औद्योगिक दृष्टि से सबसे अधिक विकसित देशो – जर्मनी और अमरीका – मे यह बात भली-भाति समझी जाती है और इसलिए वहा सामान्य प्रशिक्षण देनेवाले श्रम-विद्यालय के सही सगठन की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। बच्चे को आठ-नौ साल तक सामान्य शिक्षा विद्यालय मे पढ़ना चाहिए.. और इसके बाद ही कोई विशेषज्ञता पानी, कोई व्यवसाय-विशेष सीखना चाहिए। दूसरे शब्दो मे, व्यावसायिक विद्यालय छोटी उम्र के लिए नही होना चाहिए और १५-१६ वर्ष की आयु से पहले वहा बच्चो को लेना विवेकसगत नही है। व्यावसायिक स्कूल

न केवल व्यावहारिक प्रशिक्षण नहीं दिया जाना चाहिए, बल्कि व्यावसा
रूप से व्यवसाय से परिचित भी कराया जाना चाहिए। ऐसा कर
भी छोटी उम्र में असंभव है। छोटी उम्र से ही बच्चे को किसी ए
व्यवसाय की शिक्षा देने का अर्थ है उसकी सृजन क्षमता के विकसित और
सुरक्षित होने में बाधा डालना, उसमें निहित आत्मिक क्षमताओं क
रौंदना। स्पष्ट है कि नई किस्म का व्यावसायिक विद्यालय जीव
से घनिष्ठ जुड़ा होना चाहिए और आंशिक रूप से शिक्षा मिल मे
कारखाने में, उस वातावरण में दी जानी चाहिए, जिसमें छात्र क
कुशल मजदूर के नाते काम करना होगा। जर्मनी, इंगलैंड और अमरीक
के श्रेष्ठ व्यावसायिक स्कूलों में ऐसा ही किया जाता है। हर तरह क
स्कूल जीवन से सबद्ध होना चाहिए, व्यावसायिक स्कूल तो औरों
भी अधिक सबद्ध होना चाहिए।

मिलों-कारखानों के मजदूरों को प्रशिक्षित करने हेतु तकनीक
शिक्षा के साथ-साथ शिल्प-शिक्षा का भी प्रबंध करना चाहिए। आजक
शिल्प किसी उस्ताद से सीखा जाता है, लेकिन ऐसे मामलों में ती
चौथाई शिक्षा शागिर्द को "छोकरे" की तरह इस्तेमाल करने में ह
निहित होती है। विशेष व्यावसायिक शिल्प विद्यालयों में शिल्पों क
शिक्षा कहीं अधिक अच्छी तरह दी जा सकती है। लेकिन ऐसे विद्याल
केवल उन शाखाओं के लिए खोले जायें, जिन्हें विलुप्त होना नहीं बद
है। केवल उन्हीं शिल्पों के बने रहने की संभावना है, जिनमें किसी कला क
चरित्र है, जिनमें शिल्पी के लिए अपनी सृजन-क्षमता प्रकट करना आवश्य
है। औद्योगिक-कलात्मक विद्यालयों की भी उतनी ही सख्त जरूरत है, जितन
कि तकनीकी विद्यालयों की। दोनों की ही मजदूरों को बेहद जरूरत ह
और इसी क्षण जरूरत है। चूंकि व्यावसायिक शिक्षा मजदूरों का जीव
ध्येय है, इसलिए इसका प्रबंध इस तरह होना चाहिए कि मजदूरों क
मत इसमें निर्णायक हो।

१९१८

पोलीटेक्निकल शिक्षा संबंधी प्रस्थापनाएं

१ आगामी दशक सारे उद्योग और सारी कृषि के पुनर्गठन के वर्ष होगे, सारे उत्पादन के यौक्तिकीकरण, उसके मशीनीकरण के और विज्ञान की खोजो के ज़ोरो से उत्पादन मे लागू किये जाने के वर्ष होंगे।

२ सारे उत्पादन के क्रांतिकारी पुनर्गठन के आगामी काल मे बड़ी सख्या मे बहुमुखी प्रशिक्षित कर्मियो की ज़रूरत होगी, जो बदलती परिस्थितियो के अनुकूल बनने, उन्हे तेज़ी से समझने के योग्य होंगे, जिन्हे नई-नई मशीनो से काम लेना आता होगा, इत्यादि।

३ उपरोक्त बातों को देखते हुए हमारे यहा रूस मे वर्तमान समय मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के विकास का असाधारण महत्व है।

४ १३-१७ वर्ष की आयु मे पोलीटेक्निकल शिक्षा इस दृष्टि मे भी महत्वपूर्ण है कि वह किशोरो मे बुनियादी रचनात्मक क्षमताए विकसित करती है, जिनसे किसी भी विशेषज्ञता का अध्ययन सरल होता है। यह एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा किशोरो की शारीरिक और मानसिक क्षमताओ को सबमे अच्छी तरह उभारती है और इसकी बदौलत वे १६-१७ वर्ष की आयु मे सचेतन रूप मे अपनी विशेषज्ञता चुन पाते है।

५ पोलीटेक्निकल शिक्षा दूसरे चरण मे सबद्ध होनी चाहिए लेकिन यह दूसरा चरण एक ओर शिक्षा के पहले चरण मे तथा दूसरी

मे केवल व्यावहारिक प्रशिक्षण नही दिया जाना चाहिए, बल्कि व्याव
रूप से व्यवसाय से परिचित भी कराया जाना चाहिए। ऐसा क
भी छोटी उम्र मे असंभव है। छोटी उम्र से ही बच्चे को किसी
व्यवसाय की शिक्षा देने का अर्थ है उसकी सृजन क्षमता के विकसित
मुखरित होने मे बाधा डालना, उसमें निहित आत्मिक क्षमताओ
रौदना। स्वतोस्पष्ट है कि नई किस्म का व्यावसायिक विद्यालय
से घनिष्ठत जुडा होना चाहिए और आंशिक रूप से शिक्षा मिल
कारखाने मे, उस वातावरण मे दी जानी चाहिए, जिसमें छात्र
कुशल मजदूर के नाते काम करना होगा। जर्मनी, इगलैड और अमरी
के श्रेष्ठ व्यावसायिक स्कूलो मे ऐसा ही किया जाता है। हर तरह
स्कूल जीवन से सबद्ध होना चाहिए, व्यावसायिक स्कूल तो औरो
भी अधिक सबद्ध होना चाहिए।

मिलो-कारखानो के मजदूरो को प्रशिक्षित करने हेतु तकनी
शिक्षा के साथ-साथ शिल्प-शिक्षा का भी प्रबध करना चाहिए। आम
शिल्प किसी उस्ताद से सीखा जाता है, लेकिन ऐसे मामलो मे ती
चौथाई शिक्षा शागिर्द को "छोकरे" की तरह इस्तेमाल करने मे
निहित होती है। विशेष व्यावसायिक शिल्प विद्यालयो मे शिल्पो
शिक्षा कही अधिक अच्छी तरह दी जा सकती है। लेकिन ऐसे विद्या
केवल उन शाखाओ के लिए खोले जाये, जिन्हे विलुप्त होना नही
है। केवल उन्ही शिल्पो के बने रहने की सभावना है, जिनमे किसी कला
चरित्र है, जिनमे शिल्पी के लिए अपनी सृजन-क्षमता प्रकट करना आवश्य
है। औद्योगिक-कलात्मक विद्यालयो की भी उतनी ही सख्त जरूरत है, जि
कि तकनीकी विद्यालयो की। दोनो की ही मजदूरो को बेहद जरूरत
और इसी क्षण जरूरत है। चूकि व्यावसायिक शिक्षा मजदूरो का जीव
ध्येय है, इसलिए इसका प्रबध इस तरह होना चाहिए कि मजदूरो
मत इसमे निर्णायक हो।

पोलीटेक्निकल शिक्षा संबंधी प्रस्थापनाएं

१ आगामी दशक सारे उद्योग और सारी कृषि के पुनर्गठन के होगे, सारे उत्पादन के यौक्तिकीकरण, उसके मशीनीकरण के और विज्ञान की खोजो के जोरो से उत्पादन मे लागू किये जाने के वर्ष होगे।

२ सारे उत्पादन के क्रांतिकारी पुनर्गठन के आगामी काल मे बडी सख्या मे बहुमुखी प्रशिक्षित कर्मियो की जरूरत होगी, जो बदलती परिस्थितियो के अनुकूल बनने, उन्हे तेजी से समझने के योग्य होगे, जिन्हे नई-नई मशीनो से काम लेना आता होगा, इत्यादि।

३ उपरोक्त बातो को देखते हुए हमारे यहा रूस मे वर्तमान समय मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के विकास का असाधारण महत्व है।

४ १३-१७ वर्ष की आयु मे पोलीटेक्निकल शिक्षा इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है कि वह किशोरो मे बुनियादी रचनात्मक क्षमताए विकसित करती है, जिनसे किसी भी विशेषज्ञता का अध्ययन सरल होता है। यह एक पहलू है। दूसरा पहलू यह है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा किशोरो की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं को सबसे अच्छी तरह उभारती है और इसकी बदौलत वे १६-१७ वर्ष की आयु मे सचेतन रूप से अपनी विशेषज्ञता चुन पाते है।

५. पोलीटेक्निकल शिक्षा दूसरे चरण से सबद्ध होनी चाहिए लेकिन यह दूसरा चरण एक ओर शिक्षा के पहले चरण से तथा, दूसरी

और व्यावसायिक शिक्षा से अभिन्न रूप से जुड़ा होना चाहिए।

६ पहले चरण (७ से १३ वर्ष तक की आयु) में बच्चों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है, गणित का सामान्य ज्ञान दिया जाता है, उन्हें पुस्तक, गणित, रेखाचित्र से काम लेना, यानी इन्हें श्रम का औज़ार बनाना सिखाया जाता है, उन्हें प्रेक्षण करना, प्रेक्षणों से सामान्य निष्कर्ष निकालना और व्यवहार में उन्हें परखना सिखाया जाता है, उन्हें आत्मशिक्षा की बुनियादी विधियां सिखाई जाती हैं, विश्व (प्रकृति और समाज) का बुनियादी ज्ञान दिया जाता है। पहले चरण में ज्ञान श्रम-विधि द्वारा प्रदान किया जाता है; पहले चरण में श्रम अपनी आवश्यकताएं स्वयं पूरी करने तक कतई सीमित नहीं होता; पहले चरण में श्रम सामाजिक श्रम के बुनियादी रूप में मिल-जुलकर भाग लेने के रूप मे होना चाहिए और इससे बच्चों को श्रम संबंधी बुनियादी दक्षताएं पानी चाहिए।

७ पहले चरण में वह नींव बनती है, जिस पर दूसरे चरण की इमारत बन सकती है।

८. दूसरे चरण (१३ से १७ वर्ष तक की आयु) मे उत्पादन का समग्र रूप से अध्ययन किया जाता है। यह अध्ययन सैद्धांतिक भी और व्यावहारिक भी होता है। उत्पादन की प्रमुख शाखाओं का अध्ययन किया जाता है और व्यावहारिक कार्यकलाप पर सैद्धांतिक प्रकाश डालने की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके समानर श्रम के इतिहास और उसके प्रसंग में वर्ग संघर्ष के इतिहास का तथा फिर राजनीतिक इतिहास, धर्मों के इतिहास, क्रांतियों के इतिहास, १९१७ की क्रांति, आदि का अध्ययन किया जाता है।

९ जाड़ों में व्यावहारिक कार्य औद्योगिक होना चाहिए, यह बड़ी मिलों, कारखानों, बिजलीघरों, आदि मे काम से घनिष्ठत सबद्ध होना चाहिए, गर्मियों में राजकीय फार्मों मे होना चाहिए।

१० पोलीटेक्निकल स्कूल आर्थिक जन-कमिसारियतों तथा निकायों के कार्य के साथ घनिष्ठ संपर्क मे, ट्रेड-यूनियनों और कृषि व तकनीकी विद्यालयों के सहयोग से ही चल सकते हैं।

व्यावहारिक क़दम

११ तुरत ही पहले चरण के स्कूलो और दूसरे चरण के स्कूलो के भी पाठ्यक्रम तैयार करने चाहिए। इन पाठ्यक्रमो पर एक विशेष सम्मेलन मे कृषि और प्रविधि विशेषज्ञो के साथ, ट्रेड-यूनियनो के साथ विचार-विमर्श करना चाहिए, स्थानीय परिस्थितियो के अनुसार पाठ्यक्रमो के रूपातर भी तैयार करने चाहिए।

१२ कृषि जन-कमिसारियत के राजकीय फार्म विभाग के साथ और प्रायोगिक कृषि केद्रो के प्रधानो के साथ परामर्श करना चाहिए, ताकि यह पता लगाया जा सके कि किन फार्मों मे किस तरह किशोरो के श्रम का प्रबध किया जा सकता है, कहा कितने लोगो की आवश्यकता है। इस कार्य के प्रबध के लिए विशेष व्यक्ति भेजे जाये।

१३ कृषि विद्यालय ही प्रमुख आधार होने चाहिए। इनके छात्र दूसरे चरण के स्कूलो के छात्रो के प्रशिक्षक हो सकते है। इस सबके सिलसिले मे कृषि विद्यालयो से सलाह-मशविरा करना चाहिए।

१४ किशोरो का कार्य आदर्श अग्रणी प्रतिष्ठानो मे केद्रित होना चाहिए, इन प्रतिष्ठानो की ट्रेड-यूनियन समिति और विशेषज्ञो के साथ मिलकर यह तय करना चाहिए कि किशोर कौन-कौन-से कार्य कर सकते है। ट्रेड-यूनियनो को किशोरो को निर्देश देने के लिए खास लोग नियत करने चाहिए।

१५ ट्रेड-यूनियनो मे पोलीटेक्निकल स्कूलो का प्रचार करना चाहिए। उदीयमान पीढी के लिए पोलीटेक्निकल स्कूल सगठित करने मे उनकी शिरकत विशेषत मूल्यवान है।

१६ पोलीटेक्निकल शिक्षा का काम शिक्षको के कधो पर नही डाला जा सकता। इस काम मे सभी तरह के विशेषज्ञो को लगाना चाहिए।

१७ पोलीटेक्निकल स्कूलो के जरिए ही मेहनतकश जनता के साथ कामकाजी आधार पर वह सबध स्थापित होगा, जो युवा पीढी का भी चरित्र निर्माण करेगा और स्वय छात्र-प्रशिक्षकों का भी नवनिर्माण करेगा।

१९२०

श्रम शक्ति के प्रशिक्षण का प्रश्न

यह प्रश्न सभी का ध्यान आकर्षित करता है। यह स्वाभाविक ही है। हमारे सक्रमण काल मे, समाजवाद के निर्माण के काल मे श्रम-शक्ति के प्रशिक्षण का प्रश्न एकदम असाधारण महत्व रखता है। इसकी चर्चा मार्क्स ने अपनी लाक्षणिक पूर्वदृष्टि से, जो घटनाओं को उनके विकास मे देख पाने की क्षमता पर आधारित थी, 'पूजी' के पहले खड में की थी। इस बात का ज्वलत चित्र प्रस्तुत करके कि किस प्रकार पूजीवादी समाज मे हर तरह आर्थिक प्रगति सामाजिक विपदा बन जाती है, कि पूजीवाद "मजदूर के सबध में हर प्रकार की स्थिरता और निश्चितता को खत्म कर देता है और किस तरह वह सदा मजदूर को उसके श्रम के औजारो से वचित करके जीवन-निर्वाह के साधनो को उससे छीन लेने और उसके तफसीली काम को अनावश्यक बनाकर खुद उसको फालतू बना देने की धमकी दिया करता है..."[1] मार्क्स ने यह इगित किया कि इस स्थिति से बचने का उपाय है श्रम शक्ति के प्रशिक्षण का स्वरूप बदलना

"आधुनिक उद्योग किसी भी प्रक्रिया के वर्तमान रूप को कभी उसका अन्तिम रूप नही समझता और न ही व्यवहार मे उसे ऐसा मानता है। इसलिए इस उद्योग का प्राविधिक आधार क्रातिकारी ढग का है, जब कि इसके पहलेवाली उत्पादन की तमाम प्रणालिया बुनियादी तौर पर रूढ़िवादी थी। आधुनिक उद्योग मशीनों, रासायनिक क्रियाओं

तथा अन्य तरीकों के द्वारा न केवल उत्पादन के प्राविधिक आधार में, बल्कि मजदूर के कार्यों में और श्रम-प्रक्रिया के सामाजिक संयोजनों में भी लगातार तबदीलियां कर रहा है। साथ ही वह इस तरह समाज में पाये जानेवाले श्रम-विभाजन में भी क्रांति पैदा कर देता है और पूंजी की राशियों को तथा मजदूरों के समूहों को उत्पादन की एक शाखा से दूसरी शाखा में निरन्तर स्थानांतरित करता रहता है। इसलिए आधुनिक उद्योग खुद अपने स्वरूप के कारण श्रम के निरन्तर परिवर्तन, काम के रूप में लगातार तबदीली और मजदूरों में सार्वत्रिक गतिशीलता को जरूरी बना देता है।"[2]

आगे वह कहते हैं "आधुनिक उद्योग जिन विपत्तियों को ढाता है उनके द्वारा वह सबसे यह मनवा लेता है कि काम में बराबर परिवर्तन होते रहना और इसलिए मजदूर में विविध प्रकार के काम करने की योग्यता का होना तथा इस कारण उसकी विभिन्न प्रकार की क्षमताओं का अधिक से अधिक विकास होना सामाजिक उत्पादन का एक मौलिक नियम है। उत्पादन की प्रणाली को इस नियम के सामान्य कार्य के अनुकूल बनाने का सवाल समाज की जिंदगी और मौत का सवाल बन जाता है। वस्तुतः आधुनिक उद्योग समाज को मौत की धमकी देकर इसके लिए मजबूर करता है कि आजकल के तफसीली काम करनेवाले मजदूर को, जो जीवन भर एक ही, बहुत तुच्छ क्रिया को दुहरा-दुहराकर पंगु हो गया है और इस प्रकार इन्सान का एक अंश भर रह गया है, एक पूर्णतया विकसित ऐसे व्यक्ति में बदल दे, जो अनेक प्रकार का श्रम करने की योग्यता रखता हो, जो उत्पादन में होनेवाले किसी भी परिवर्तन के लिए तैयार हो और जिसके लिए उसके द्वारा सम्पन्न किये जानेवाले विभिन्न सामाजिक कार्य केवल अपनी प्राकृतिक एवं उपार्जित क्षमताओं को स्वतंत्रतापूर्वक व्यवहार में लाने की प्रणालियां भर हों।"[3]

मार्क्स का मत था कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के कुछ तत्व यद्यपि स्कूलों में स्वतोस्फूर्त ढंग से स्थान पा रहे हैं, तथापि मजदूरों की व्यापक पोलीटेक्निकल शिक्षा अपने ध्येयों और स्वरूप में पूंजीवादी उत्पादन विधि के सारे ढांचे के, उत्पादन में मजदूरों की स्थिति के इतने विपरीत बैठती है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करना तभी संभव होगा, जब

जदूर वर्ग सत्ता अपने हाथों मे ले लेगा।

"फैक्टरी-कानून के रूप मे पूंजी से जो पहली और बहुत तुच्छ रियायत छीनी गई है, उसमें फ़ैक्टरी के काम के साथ-साथ केवल प्रारंभिक शिक्षा देने की ही बात है। परन्तु इसमे कोई सन्देह नही किया जा सकता कि जब मजदूर-वर्ग सत्ता पर अधिकार कर लेगा, जो कि अनिवार्य है, तब सैद्धान्तिक और व्यवहारिक दोनो ढग की प्राविधिक शिक्षा मजदूरो के स्कूलो मे अपना उचित स्थान प्राप्त करेगी।"[1]

प्रौद्योगिकी पोलिटेक्निकल शिक्षा का आधार है।

"आधुनिक उद्योग ने हर क्रिया को उसकी संघटक गतियो मे बाट देने के सिद्धात का अनुसरण किया और ऐसा करते हुए इस बात का कोई खयाल नही किया कि मनुष्य का हाथ इन गतियो को कैसे सम्पन्न कर पायेगा। इस सिद्धात ने प्रौद्योगिकी के नये आधुनिक विज्ञान को जन्म दिया। औद्योगिक प्रक्रियाओ के नाना प्रकार के प्रकटत असबद्ध प्रतीत होनेवाले और पथराये हुए रूप निश्चित ढग के उपयोगी प्रभाव पैदा करने के लिए प्राकृतिक विज्ञान को सचेतन और सुनियोजित ढग से प्रयोग करने के तरीको मे परिणत हो गये। प्रौद्योगिकी ने गति के इन थोड़े से मौलिक रूपो का भी पता लगाया, जिनमे से किसी रूप मे ही मानव-शरीर की प्रत्येक उत्पादन कार्रवाई व्यक्त होती है, हालांकि मानव-शरीर नाना प्रकार के औजारो को इस्तेमाल करता है। यह इसी तरह की बात है, जैसे यांत्रिकी का विज्ञान अधिक से अधिक संश्लिष्ट मशीनों मे भी सरल यांत्रिक शक्तियो की निरतर पुनरावृत्ति के सिवा और कुछ नही देखता।"[2]

लेनिन बच्चो के लिए भी और वयस्को के लिए भी पोलीटेक्निकल शिक्षा के उत्साही समर्थक थे। उत्पादन सबधी प्रचार कार्य के बारे मे अपनी प्रस्थापनाओ मे उन्होंने इस बात की चर्चा की है कि किस प्रकार जनसाधारण मे पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रचार किया जाये। वयस्क मजदूरो और किसानो के बीच पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रसार को ही लेनिन उद्योग एव कृषि के परिष्कार का, उनकी कारगरता बढ़ाने का आवश्यक पूर्वाधार मानते थे।

हर पैमाने पर श्रम शक्ति के प्रशिक्षण के प्रश्न पर विचार करते समय हमें यह एकदम स्पष्ट कर लेना चाहिए कि क्या हम पुराने श्रम

विभाजन का ही अनुकरण करना चाहते है – सकीर्ण विशेषज्ञता के केवल अपना कार्य ही अच्छी तरह जाननेवाले, उसे करने का सुम्पष्ट अभ्यास और दक्षता रखनेवाले, लेकिन केवल उसे ही जाननेवाले औ इसलिए सदा-सदा के वास्ते उसी मे बधे मजदूर तैयार करना चाहा हैं, या कि हम मार्क्स और लेनिन की भावना मे विशेषज्ञ प्रशिक्षि करना चाहते है।

आज यह प्रश्न अपने पूर्ण विराट स्वरूप मे उभरा है।

हमारे उद्योग मे अभी भी शिल्प की, कारीगरी की भूमिका बहु बडी है। लेकिन मजदूरो को प्रशिक्षित करते समय उन्हे कारीगरी सिखाने अपने काम का अभ्यास कराने के अलावा उनकी पोलीटेक्निकल दृष्टि परिधि भी विकसित करनी चाहिए, उन्हे टेक्नोलोजी, यात्रिकी, रसायन शास्त्र, आदि का ज्ञान देना चाहिए, जिसके बिना मजदूर कभी भ औद्योगिक निर्माण मे सचेतन भाग नही ले सकेगा।

आज अनेक नये कारखानो, मिलो के निर्माण के फलस्वरूप उ मजदूरो की सख्या बहुत बढ गई है जो मशीनो पर काम करते है एक तरह से उनके सहायक अग हैं। मशीनो से काम लेना उ कुछ हफ्तो या महीनो मे ही सिखाया जा सकता है। लेकिन हमे इस सतोष नही हो सकता। हमारे यहा मजदूर महज कारकून नही है आज वह कारकून है, कल अन्वेषक हो सकता है और परसो अप उद्योग का प्रमुख सगठनकर्ता। हम क्षण भर के लिए भी यह नही भू सकते कि हमारे यहा निर्माण समाजवाद के मार्ग पर होना चाहिए औ व्यापक सामान्य शिक्षा, राजनीतिक व पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण प्रा मजदूर के बिना ऐसा नही हो सकता।

पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में

देश के औद्योगीकरण और कृषि के पुनर्गठन के प्रश्न के साथ श्रम शक्ति के प्रशिक्षण का और इसमें पोलीटेक्निकल शिक्षा की भूमिका का प्रश्न एक बार फिर पूरी उग्रता से उभरकर सामने आया है।

शिक्षाकर्मियों के बीच यह विवाद ठंडा पड़ता-पड़ता फिर से भड़क उठा है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा क्या है और यह कैसे दी जानी चाहिए।

हम भी इस प्रश्न पर गौर करें।

बेशक, पार्टी ने औद्योगीकरण का सवाल अकारण ही नहीं उठाया है। आबादी के अधिकाधिक व्यापक संस्तरों में यह चेतना फैलती जा रही है कि कृषि की और कृषि उत्पादों के संसाधन की पुरानी विधियों को अस्वीकार करना आवश्यक है। देश के औद्योगीकरण की आवश्यकता नितांत तात्कालिक हो गई है और हमारे द्वारा समझी जा रही मांग की ही अभिव्यक्ति है। २५ जनवरी १८६४ को ग० स्टार्कनबर्ग के नाम अपने पत्र में एंगेल्स ने लिखा था :

"यदि समाज में कोई तकनीकी आवश्यकता पैदा होती है, तो वह दसियों विश्वविद्यालयों की तुलना में विज्ञान को कहीं अधिक आगे बढ़ाती है। सारी जलस्थैतिकी (तोरींचेली, इत्यादि) १६वीं और १७वीं सदियों में इटली में पर्वतीय जलधाराओं को नियंत्रित करने की आवश्यकता के कारण ही प्रकट हुई थी। विद्युत ऊर्जा के बारे में हमने तभी कोई काम की बात सुनी, जब इसके तकनीकी उपयोग की संभावनाओं का पता चला है।"[1]

प्रविधि की आवश्यकता विज्ञान को आगे बढ़ाती है। प्रविधि की

सबंध सामग्री और औजार से जोडा जा सकता है, ताकि बच्चा यह समझ जाये कि किस प्रकार अलग-अलग तरह की सामग्री पर एक ही काम करने के लिए अलग-अलग औजार चाहिए. लट्ठा एक सुई से सीना चाहिए और मोटा ऊनी कपडा दूसरी सुई से, चमडे को सीने के लिए सुतारी चाहिए, कागज सीना नही चिपकाना चाहिए, लकडी सीते नही, उसमे कीले ठोकते है, इत्यादि। यह सिलाई के अध्ययन का पोलीटेक्निकल रुख होगा। अकेले बच्चे को नही, बल्कि दो, तीन या अधिक बच्चो को मिलकर करने के लिए काम दिया जा सकता है—काम को लयबद्ध किया जा सकता है, लय धीमी या तेज कर सकते है, फिर कई दूसरी गतिया भी लयबद्ध ढग से गीत गाते हुए की जा सकती है। मशीन पर कपडे सीना भी अलग-अलग ढग से सिखाया जा सकता है: केवल यह बता सकते है कि चक्का ऐसे चलाओ, फिरकी ऐसे बदलो, इत्यादि, या मशीन पर सिलाई सीखने का सबंध इस मशीन के और इसके जैसी दूसरी मशीनों के अध्ययन से जोडा जा सकता है। इस तरह सिलाई का काम एक शिल्प की तरह सिखाया जा सकता है या सिलाई सिखाने का सबंध सामग्री, औजार, मशीन, आदि के अध्ययन के साथ जोडा जा सकता है—यह पोलीटेक्निकल शिक्षा होगी।

स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रति रुख अध्यापक की पोलीटेक्निकल योग्यता पर, सरलतम श्रम क्रियाओ का अधिक जटिल क्रियाओ के साथ सबंध जोडने, श्रम प्रक्रियाओं के सभी तत्वों का विश्लेषण करने की उसकी योग्यता पर निर्भर करता है, न कि केवल साज़-सामान पर। जब केवल शिल्प थे, तब पोलीटेक्निकल शिक्षा नही हो सकती थी, क्योंकि शिल्पों के बीच दीवार थी, यह स्पष्ट नही था कि इन शिल्पों के बीच क्या समानता है, उनका विश्लेषण नही था। मशीन उत्पादन के विकास से ही शिल्पों को श्रम-प्रक्रियाओं को समझने, उनका विश्लेषण करने मे मदद मिली, यह समझने मे कि उनमे क्या समानता है। और प्रविधि का जितना आगे विकास हो रहा है उतनी ही अधिक गहराई मे हर श्रम-प्रक्रिया का सार देखा जा सकता है। लेकिन आधुनिक प्रविधि पर आधारित इस [illegible] का उपयोग करने के लिए यह कतई आवश्यक नही है कि हम [illegible] मे जाये। बच्चो को अच्छे से अच्छा कारखाना [illegible] जा सकता है, लेकिन यदि इससे पहले उनमे तकनीकी

सवाध सामग्री और औज़ार से जोड़ा जा सकता है, ताकि बच्चा यह समझ जाये कि किस प्रकार अलग-अलग तरह की सामग्री पर एक ही काम करने के लिए अलग-अलग औज़ार चाहिए, मोटा एक सुई से मोटा चाहिए और मोटा ऊनी कपड़ा दूसरी सुई से, चमड़े को सीने के लिए सुतारी चाहिए, कागज सीना नहीं सिखाना चाहिए, लकड़ी सीते नहीं उसमें कीलें ठोकते हैं इत्यादि। यह सिलाई के अध्ययन का पोलीटेक्निकल रुख होगा। अकेले बच्चे को नहीं, बल्कि दो, तीन या अधिक बच्चों को मिलकर करने के लिए काम दिया जा सकता है—काम को लयबद्ध किया जा सकता है, लय धीमी या तेज कर सकते हैं, फिर कई दूसरी गतियां भी लयबद्ध ढंग से गीत गाते हुए की जा सकती है। मशीन पर कपड़े सीना भी अलग-अलग ढंग से सिखाया जा सकता है केवल यह बता सकते हैं कि चक्का ऐसे चलाओ, फिरकी ऐसे बदलो, इत्यादि, या मशीन पर सिलाई सीखने का संबंध इस मशीन के और इसके जैसी दूसरी मशीनों के अध्ययन से जोड़ा जा सकता है। इस तरह सिलाई का काम एक शिल्प की तरह सिखाया जा सकता है या सिलाई सिखाने का संबंध सामग्री, औज़ार, मशीन, आदि के अध्ययन के साथ जोड़ा जा सकता है—यह पोलीटेक्निकल शिक्षा होगी।

स्पष्ट है कि शिक्षा के प्रति रुख अध्यापक की पोलीटेक्निकल योग्यता पर, सरलतम श्रम क्रियाओं का अधिक जटिल क्रियाओं के साथ संबंध जोड़ने, श्रम प्रक्रियाओं के सभी तत्वों का विश्लेषण करने की उसकी योग्यता पर निर्भर करता है, न कि केवल साज-सामान पर। जब केवल शिल्प थे, तब पोलीटेक्निकल शिक्षा नहीं हो सकती थी, क्योंकि शिल्पों के बीच दीवार थी, यह स्पष्ट नहीं था कि इन शिल्पों के बीच क्या समानता है, उनका विश्लेषण नहीं था। मशीन उत्पादन के विकास से ही शिल्पों की श्रम-प्रक्रियाओं को समझने, उनका विश्लेषण करने में मदद मिली, यह समझने में कि उनमें क्या समानता है। और प्रविधि का ...
आगे विकास हो रहा है, उतनी ही अधिक गहराई में हर ...
का सार देखा जा सकता है। लेकिन आधुनिक प्रविधि पर ...
विश्लेषण का उपयोग करने के लिए यह कतई आवश्यक ...
नवीनतम कारखाने में जायें। बच्चों को अच्छे से ...
दिखाने ले जाया जा सकता है, लेकिन यदि इससे

मैं सोचता हूं कि ऐसी 'योजना' – एक बार फिर दोहराता हूं: नौकरशाही नहीं, राजकीय योजना – योजना का मसौदा, अब दे सकते हैं।

इसे अभी तैयार करना चाहिए, यह दृष्टव्य हो, सुबोध हो, जनसमूह के लिए हो, सुस्पष्ट और ज्वलन्त (अपने आधार में पूर्ण वैज्ञानिक) परिप्रेक्ष्य से उत्प्रेरित करे: काम में जुटें और १०-२० वर्ष में हम सारे रूस का, उद्योग का भी और कृषि का भी विद्युतीकरण कर लेंगे।

मैं दोहराता हूं, हमें मजदूर जनसमूह और सचेतन किसानों को १०-२० वर्ष के महान कार्यक्रम से उत्प्रेरित करना चाहिए।"[1]

लेनिन को यह विचार चैन नहीं लेने देता था कि जनसमूह को कैसे उत्प्रेरित किया जाये। और उन्होंने साथी क्रजीजानोव्स्की को लिखा:

"ग० म०! मुझे एक विचार सूझा है।

"बिजली का प्रचार करना चाहिए। कैसे? कथनी से ही नहीं करनी से भी।

"इसका अर्थ क्या है? सबसे महत्वपूर्ण है – इसे लोकप्रिय बनाना। इसके लिए अभी तुरत ही रूस में हर घर में बिजली का प्रकाश लाने की योजना बनानी चाहिए।

"यह लंबी अवधि का काम है, क्योंकि न २,००,००,००० (–४,००,००,०००) बल्ब, न तार, इत्यादि हमारे पास लंबे समय तक नहीं होंगे।

"लेकिन योजना तुरंत चाहिए, कुछ साल के लिए ही सही।

"यह पहली बात है।

"दूसरी बात, संक्षिप्त योजना अविलंब तैयार करनी चाहिए और फिर, यह तीसरी बात है – और सबसे प्रमुख – लोगों को प्रतियोगिता, पहलकदमी और सक्रियता के लिए प्रेरित करनी चाहिए, ताकि वे तुरंत काम में जुट जायें।

"क्या इसके लिए ऐसी योजना नहीं बनाई जा सकती:

"१) सभी वोलोस्तों* (१०-१५ हजार) में एक साल के

---

* वोलोस्त – तहसील के समकक्ष प्रशासनिक इकाई। – सं०

अदर बिजली पहुचाई जायेगी,

"२) सभी बस्तियो (५-१० लाख, शायद, साढे सात लाख से ज्यादा नही) मे दो साल मे,

"३) सर्वप्रथम–देहात के वाचनालय और ग्राम सोवियत मे (२ बल्ब);

"४) खभे तुरत इस प्रकार बनाइये,

"५) इसुलेटर तुरत स्वयं बनाइये (चीनी मिट्टी की फैक्टरिया तो स्थानीय और छोटी हैं)। इस तरह बनाइये,

"६) तारो के लिए तांबा? स्वयं ही अपने उयेज्दो* और वोलोस्तो मे जमा कीजिये (घटो, आदि की ओर इशारा),

"७) बिजली के कामो की शिक्षा इस प्रकार दीजिये।

क्या ऐसी चीज सोच-समझकर तैयार करना और आज्ञप्ति जारी करना सभव नही है?"[3]

यह सब लेनिन ने १९२० मे लिखा था।

मैंने यहां यह लबा उद्धरण इसलिए दिया है, क्योकि यह जनसमूह के प्रति लेनिन का रुख बहुत अच्छी तरह दर्शाता है, दूसरे, इससे इस बात पर प्रकाश पडता है कि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा पर इतना जोर क्यो देते थे। १९२० मे अत मे लिखी उनकी 'नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना की प्रस्थापनाओ पर टिप्पणिया' भी पोलीटेक्निकल शिक्षा को समर्पित हैं। उन्होंने लिखा:

"पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे ऐसे नही लिखा जा सकता, यह अमूर्त बात बनती है–सुदूर भविष्य के लिए, तात्कालिक, वर्तमान, दुखद यथार्थ को ध्यान में नहीं रखा जाता...

"... साफ-साफ कहना चाहिए कि किसी भी हालत मे हम इस सिद्धात से और तुरत ही यथासभव हद तक पोलीटेक्निकल शिक्षा ही लागू करने से इन्कार नही कर सकते।"[4] और आगे लिखा " बिला शर्त यह कार्यभार रखा जाये कि पोलीटेक्निकल शिक्षा की ओर अविलब सक्रमण हो, या सही-सही कहा जाये तो, पोलिटेक्निकल शिक्षा की ओर तुरत ही जो कदम उठाये जा सकते हैं, उन्हे उठाया जाये।"[5]

---

* उयेज्द–जिला के समकक्ष प्रशासनिक इकाई।–स०

इसके आगे उन्होंने अपना यह मनतागद विचार व्यक्त किया है कि हमारे पास थोड़ा-बहुत जो कुछ है, उसका उपयोग कैसे किया जाये। उल्लेखनीय है कि इसमें उन्होंने सामग्री कार्य भी गिनाये हैं, क्योंकि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा में कृषि को भी शामिल करते थे।

मैं आगे उद्धरण नहीं दूँगी – अब हर कोई इच्छा होने पर लेनिन की यह टिप्पणियां पढ़ सकता है।

ये इस बात का ज्वलन्त प्रमाण है कि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा को कैसे समझते थे।

उन्हें "श्रम शक्ति", "श्रमिक हाथ" तैयार करने की ही चिंता नहीं थी, बल्कि उस नये तकनीकी आधार के सचेतन निर्माता तैयार करने की, जो हमारे देश को अजेय, खुशहाल, शिक्षित बना देगा। लेनिन के लिए श्रम-शक्ति का प्रशिक्षण नये तकनीकी आधार के सचेतन निर्माताओं के प्रशिक्षण से अलग नहीं था।

यही पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में वाद-विवाद का मर्म है और इसीलिए इस विषय पर विवाद इतने उग्र हैं।

लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा और चरित्र-निर्माण के प्रश्न को श्रम के प्रति, अनुशासन के प्रश्नों, आदि के प्रति नये रुख के साथ जोड़ते थे।

उसी वर्ष, १६२० में ही लेनिन ने सुब्बोत्निकों* के बारे में, नये, सचेतन अनुशासन के बारे में लिखा था।

'पुरानी समाज-व्यवस्था के विध्वंस से एक नई समाज-व्यवस्था के सृजन की ओर' शीर्षक लेख में लेनिन समाजवादी श्रम के बारे में कहते हैं "एक नये श्रम-अनुशासन के निर्माण का, मनुष्यों के बीच सामाजिक संबंधों के नये रूपों की रचना का, लोगों को श्रम के क्षेत्र में खींचकर लाने के नये रूपों तथा तरीकों की रचना का काम निश्चय ही अनेक वर्षों तथा दशाब्दियों में पूरा होगा।

"यह अत्यन्त श्रेयस्कर तथा उदात्त कोटि का काम है।

"यह हमारा सौभाग्य है कि बुर्जुआ वर्ग को सत्ताच्युत करके

---

* सुब्बोत्निक (यानी शनिवारीय काम) उस काम को कहते हैं, जो शहर के अपने लिए निर्दिष्ट काम के अतिरिक्त घंटों में मुफ्त करते हैं और जो किसी आवश्यकता की पूर्ति के लिए होता है। – सं०

और उसका प्रतिरोध कुचलकर हम वह जमीन जीत पाये हैं, जिस पर ऐसा काम करना सभव है।"[6]

इसी लेख मे लेनिन ने समाजवादी श्रम के उच्चतर चरण, **कम्युनिस्ट** श्रम के बारे मे लिखा है.

"शब्द के अधिक सकीर्ण तथा सही अर्थ मे कम्युनिस्ट श्रम वह श्रम होता है, जो समाज के हित के लिए बिना पारिश्रमिक लिये किया जाता है, वह ऐसा श्रम होता है, जो एक निश्चित कर्त्तव्य के रूप मे नही, कुछ चीजे पाने का अधिकार प्राप्त करने के उद्देश्य से नही, पहले से तय किये हुए तथा कानून द्वारा निर्धारित कोटे के अनुसार नही किया जाता, बल्कि कोटे की चिन्ता किये बिना ही स्वेच्छा-पूर्वक किया गया श्रम होता है, वह ऐसा श्रम होता है, जो पारिश्रमिक की आशा लगाये बिना, पारिश्रमिक की शर्त के बिना किया जाता है, जो सबके हित के लिए काम करने की आदत के वश और सबके हित के लिए काम करने की आवश्यकता की सचेत अनुभूति के वश (जो आदत बन जाती है) किया जाता है – वह श्रम एक स्वस्थ जीवी की आवश्यकता के समान होता है।"[7]

हमारे यहा श्रम-शिक्षा की एक ही पद्धति है। लेकिन यदि हम इसे वैसा बनाना चाहते है, जैसा लेनिन इसे देखना चाहते थे, तो हमे न केवल यह सोचना चाहिए कि हम कैसे बच्चों को श्रम सबधी कुछ आदते सिखा दे, निश्चित कार्य करने सिखा दे, बल्कि यह भी कि कैसे बच्चो को समाजवादी श्रम के, कम्युनिस्ट श्रम के योग्य बनाये।

इसके आगे उन्होंने अपना यह मनपसद विचार व्यक्त किया है कि हमारे पास थोड़ा-बहुत जो कुछ है, उसका उपयोग कैसे किया जाये। उल्लेखनीय है कि इसमे उन्होंने राजकीय फार्म भी गिनाये हैं, क्योंकि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा मे कृषि को भी शामिल करते थे।

मैं आगे उद्धरण नही दूगी – अब हर कोई इच्छा होने पर लेनिन की यह टिप्पणिया पढ सकता है।

ये इस बात का ज्वलत प्रमाण हैं कि लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा को कैसे समझते थे।

उन्हे "श्रम शक्ति", "श्रमिक हाथ" तैयार करने की ही चिन्ता नही थी, बल्कि उस नये तकनीकी आधार के सचेतन निर्माता तैयार करने की, जो हमारे देश को अजेय, खुशहाल, शिक्षित बना देगा। लेनिन के लिए श्रम-शक्ति का प्रशिक्षण नये तकनीकी आधार के सचेतन निर्माताओं के प्रशिक्षण से अलग नही था।

यही पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे वाद-विवाद का मर्म और इसीलिए इस विषय पर विवाद इतने उग्र हैं।

लेनिन पोलीटेक्निकल शिक्षा और चरित्र-निर्माण के प्रश्न को श्रम प्रति, अनुशासन के प्रश्नो, आदि के प्रति नये रुख के साथ जोड़ते थे

उसी वर्ष, १९२० मे ही लेनिन ने सुब्बोत्निकों* के बारे मे नये, सचेतन अनुशासन के बारे मे लिखा था।

'पुरानी समाज-व्यवस्था के विध्वस से एक नई समाज-व्यवस्था के सृजन की ओर' शीर्षक लेख मे लेनिन समाजवादी श्रम के बारे में कहते हैं "एक नये श्रम-अनुशासन के निर्माण का, मनुष्यों के बीच सामाजिक सबधों के नये रूपों की रचना का, लोगों को श्रम के लिए खीचकर लाने के नये रूपों तथा तरीकों की रचना का काम निश्चय ही अनेक वर्षों तथा दशाब्दियों मे पूरा होगा।

"यह अत्यन्त श्रेयस्कर तथा उदात्त कोटि का काम है।

"यह हमारा सौभाग्य है कि बुर्जुआ वर्ग को सत्ताच्युत करने

* सुब्बोत्निक (स्वैच्छिक [illegible] काम) उस काम को कहते हैं जो [illegible] लिए निर्दिष्ट समय के अतिरिक्त घटों मे मुफ्त करते हैं और जो किसी [illegible] आवश्यकता की पूर्ति के लिए होता है।–सं०

पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के बारे में

राष्ट्रीय वैज्ञानिक परिषद के प्रथम अधिवेशन में रिपोर्ट के लिए तैयार की गई प्रस्थापनाएं[1]

१ हमारा देश अभी तक औद्योगिक दृष्टि से एक सबसे पिछड़ा रहा है। अब वह औद्योगीकरण के पथ पर बढ़ रहा है और श्रम सदियों से चले आ रहे, पिछड़े तौर-तरीके लुप्त हो रहे हैं, उनका न बड़े पैमाने का आधुनिक उद्योग ले रहा है, जिसका निर्माण ज्ञान की नवीनतम उपलब्धियों के अनुसार हो रहा है। सारी व्यवस्था का पुनर्गठन हो रहा है।

२ लेकिन हमारे पिछड़ेपन से स्वतंत्र रूप से भी बड़े पैमाने का धुनिक उद्योग, जिसका निर्माण हमारा देश कर रहा हो, कोई स्थायी ज नहीं है। जैसा कि मार्क्स ने ही अपने समय में इंगित किया था, का लक्षण है उत्पादन के तकनीकी आधार में निरंतर परिवर्तन, कहें कि उत्पादन का अनवरत पुनर्गठन। इसलिए आधुनिक मजदूर यह अपेक्षा की जाती है कि वह उत्पादन की निरंतर बदलती रिस्थितियों के अनुकूल बन सकता हो, नई उत्पादन विधियां सीख ता हो। हमारे देश में, जहां शीघ्रातिशीघ्र समाजवादी समाज के र्माण का उत्पादन आधार तैयार करना आवश्यक है, जहां पुनर्गठन जनता की सूत्रबद्धता इतनी विशाल भूमिका अदा कर रही है, जहां, ा कि लेनिन सदा जोर देते रहे हैं, स्वयं जनसमूह की शिरकत के ना देश की सारी अर्थव्यवस्था में निर्णायक मोड़ नहीं लाया जा ता, जनसमूह की पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि अपार महत्व रखती है।

सारी अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन जनसमूह मे, बालगण मे भी, प्रविधि के प्रति रुचि जगा रहा है और इससे पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने के लिए, जो इस रुचि को गहन बनाती है और उसे वैज्ञानिक आधार प्रदान करती है, अनुकूल पूर्वाधार बनते है।

४ आवश्यकता इस बात की है कि हमारे किंडरगार्टनो से शुरू करके हमारे सभी शिक्षा प्रतिष्ठान इस रुचि को कुठित न करे, बल्कि तत्सबधी तथ्यो से अवगत कराते हुए, समुचित पुस्तके बनाकर इनकी वैज्ञानिक समझ प्रदान करते हुए, कारखानो-मिलो मे बच्चो को ले जाकर, प्रेक्षणो के जरिए, श्रम प्रक्रिया का अध्ययन करते हुए, इत्यादि रास्तो से इस रुचि को हर तरह से प्रोत्साहित करे। छात्रो मे आधुनिक प्रविधि के प्रति आकर्षण जगाना चाहिए।

५ आधुनिक प्रविधि से व्यावहारिक परिचय कराने के लिए हर बिजलीघर, हर रेलवे वर्कशाप, हर ट्रैक्टर, हर सिलाई मशीन, हर मरम्मतघर, हर फैक्टरी, मिल कारखाने का इस्तेमाल करना चाहिए।

६. पोलीटेक्निकल शिक्षा का अतर्य क्या है? यह सोचना गलत होगा कि यह शिक्षा निश्चित दक्षताए पाने मे ही निहित है या बहुशिल्पीय शिक्षा मे, या प्रविधि के केवल आधुनिक, सो भी उच्चतम रूपो के अध्ययन मे। पोलीटेक्निकल शिक्षा एक पूरी पद्धति है, जिसका आधार है प्रविधि का उसके विभिन्न रूपो मे, उसके विकास मे और सभी ठोस स्वरूपो मे अध्ययन। इसमे सजीव प्रकृति का और सामग्रियो की टेक्नोलोजी का, उत्पादन के औजारो और उनकी कार्यविधि का तथा ऊर्जा प्रणाली का अध्ययन भी शामिल है। इसमे आर्थिक सबधो के भौगोलिक आधार का अध्ययन और इस बात का अध्ययन भी आता है कि सामग्रिया पाने और ससाधित करने के तरीको का श्रम के सामाजिक रूपो पर क्या प्रभाव पडता है और ये अतोक्त सारी समाज-व्यवस्था को कैसे प्रभावित करते हैं।

७ पोलीटेक्निकल शिक्षा किन्ही विशेष विषयो की शिक्षा नही है। यह एक रस है, जो सभी विषयो मे व्याप्त होना चाहिए, भौतिकी, रसायन, प्रकृतिविज्ञान और समाजविज्ञान, सभी विषयो की सामग्री चुनने मे प्रतिबिबित होना चाहिए। ये विषय एक दूसरे से जुडे होने चाहिए, इन्हे व्यावहारिक कार्य से और विशेषत श्रम-शिक्षा से जुडा होना

चाहिए। ऐसा संबंध होने पर ही श्रम शिक्षा पोलीटेक्निकल होगी।

८ स्वाभाविक ही है कि पोलीटेक्निकल पाठ्यक्रम अन्य किसी भी पाठ्यक्रम की तुलना मे छात्रो से इस बात की अधिक अपेक्षा करता है कि उन्हे प्रेक्षण करना, प्रयोगो, व्यवहार, विशेषतः श्रम व्यवहार के जरिए इन प्रेक्षणो को गहरा बनाना और परखना, अपने प्रेक्षणो को व्यवस्थित करना और उनमे निष्कर्ष निकालना आता हो।

९ पोलीटेक्निकल स्कूल मे श्रम-शिक्षा से छात्रों को एक ओर सामान्य श्रम-दक्षताए प्राप्त होनी चाहिए (जैसे कि: अपने श्रम का ध्येय निश्चित करना, अपने काम की योजना बनाना, गणना करना, खाका तैयार करना, आपस मे काम युक्तियुक्त ढग से बाटना, मिल-जुलकर काम करना, सामग्री का किफायत से उपयोग करना, औजारो से काम लेना, तत्संबंधी आयु मे जितनी संभव हो, उतनी बारीकी से काम करना, इत्यादि), दूसरी ओर, श्रम प्रक्रियाओ को प्रविधि के, श्रम-संगठन के और उनके सामाजिक महत्व के दृष्टिकोण से समझना (बेशक, यह भी छात्रो की आयु और जीवन अनुभव के अनुरूप होना चाहिए)।

१० छात्रो को श्रम-दक्षताओ से सुसज्जित करने से स्कूल मे समाजोपयोगी कार्य मे अधिक गहराई लाने मे मदद मिलती है। यह कार्य सामूहिक श्रम की आदत डालने और छात्रो मे अपने श्रम के प्रति सामाजिक रुख विकसित करने के लिए अपार महत्व रखता है।

११ ड्राइंग और साकानवीसी की कक्षाए, प्रयोगशालाए, वर्कशापो और कृषि प्रयोगो के लिए जमीन – यह सब स्कूल का आवश्यक "साज-सामान" है। लेकिन स्कूल को उत्पादन-स्थलियो पर भी छात्रो के काम का प्रबंध करने की चेष्टा करनी चाहिए।

१२ स्वाभाविक ही है कि पोलीटेक्निकल स्कूल के विभिन्न चरणो मे इसका स्वरूप विभिन्न होता है। पहले चरण मे श्रम-शिक्षा अनिवार्यतः सामान्य होती है। लेकिन सातवी तक के स्कूल मे उत्पादन की किसी निश्चित शाखा को प्रस्थान बिंदु माना जाता है (जैसा कि हम विमान-पुनर्गठन स्कूल[2] और फैक्टरी-कारखाना माध्यमिक स्कूल[3] मे पाते है)। लेकिन सातवी कक्षा तक के स्कूलो मे विशेषीकरण नही होता। यहां पोलीटेक्निकल शिक्षा का ध्येय यह है कि छात्र उत्पादन के बुनियादी

अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल स्कूल

अखिल रूसी पोलीटेक्निकल शिक्षा कांग्रेस में रिपोर्ट के लिए तैयार की गई प्रस्थापनाएं[1]

१ हमारे देश में आजकल अर्थव्यवस्था का जो पुनर्गठन हो रहा है उसका स्वरूप स्पष्टत समाजवादी है। वह एकीकृत योजना के अनुसार सारे देश के हित में, व्यापकतम जनसमूह के हित में और स्वय जनसमूह के हाथो हो रहा है।

सोवियत सत्ता की सरचना और स्वरूप जनसमूह को इन प्रश्नो के गिर्द सगठित करने मे सहायक हैं। आर्थिक प्रश्नो पर केंद्रीय कार्यकारिणी से लेकर नगर और ग्राम सोवियतो तक—सभी सोवियतों में विचार किया जाता है। इन्हीं प्रश्नों पर ट्रेड-यूनियन संगठनों में भी विचार होता है। प्रतिष्ठानो में श्रम का सगठन, कारखाना समितिया, उत्पादन सभाए और समाजवादी प्रतियोगिता—यह सब जनसमूह में आर्थिक प्रश्नो के प्रति रुचि जगाता है। राजकीय और सामूहिक फ़ार्मों के जनसमूह भी इन्ही प्रश्नो पर अधिकाधिक गौर करने लगे हैं। पार्टी और कोमसोमोल समाजवाद के निर्माण की दृष्टि से इन प्रश्नों पर विचार करते हैं और विचार-विमर्श की गति को प्रभावित करते हैं।

इससे पूरी स्पष्टता के साथ यह निष्कर्ष निकलता है कि उदीयमान पीढी को पोलीटेक्निकल शिक्षा देना आवश्यक है, क्योंकि हमे इस पीढी को सारे उद्योग के वैज्ञानिक आधार की समझ से, आधुनिक श्रम-विधियो से सुसज्जित करना है, उसे उत्पादन की विभिन्न शाखाओ के बीच, विभिन्न तकनीकी प्रक्रियाओ के बीच सबध की समझ सिखाना

है। हमे सभी बच्चो को, सभी किशोरो को, सारे युवाजन को हमारी सोवियत पोलीटेक्निकल शिक्षा देनी है।

अर्थव्यवस्था की एकीकृत योजना इस कार्यभार को अत्यत सरल बनाती है, क्योकि योजना निकायो की सामग्री से हम सारी आवश्यक सामग्री पा सकते है।

२ एकीकृत आर्थिक योजना देश की सारी अर्थव्यवस्था के परिष्कार का परिप्रेक्ष्य प्रदान करती है। इसके लिए यह अपेक्षित है कि विभिन्न प्रदेशो (सभी प्रदेश "उत्पादक" होने चाहिए), विभिन्न जिलो, जिलो मे शामिल फार्मों के बीच उत्पादन का विवेकसगत विभाजन हो, उत्पादन की विभिन्न शाखाओ, प्रतिष्ठानो, खातो के बीच विवेकसगत श्रम-विभाजन हो। हर फार्म, हर कारखाना समाजवादी आर्थिक मशीन का कल-पुर्जा बन रहा है।

पॅलीटेक्निकल शिक्षा से उदीयमान पीढी मे देश के समाजवादी आर्थिक निर्माण-कार्य के प्रति गहरा अनुराग जागना चाहिए और युवाजन को यह अवसर मिलना चाहिए कि वे अपनी शक्ति और योग्यता के अनुसार महान समाजवादी निर्माण-कार्य मे रत होकर व्यवहार मे अर्थव्यवस्था की नाना शाखाओ का अध्ययन कर सके।

३ हमारे देश की अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन नगर और देहात के सारे उत्पादन के औद्योगीकरण की दिशा मे हो रहा है। नवीनतम मशीनो से सुसज्जित मिले, कारखाने उत्पादन की नई-नई शाखाओ मे खुल रहे हैं, अधिकाधिक बडे पैमाने पर हो रहे सामूहिकीकरण और मशीनीकरण के आधार पर सारी कृषि का पुनर्गठन हो रहा है। इस पुनर्गठन से सारे उत्पादन का स्वरूप, श्रम का सारा स्वरूप बदल रहा है, साथ ही समाज मे पुराने श्रम-विभाजन का आधार मिट रहा है, समाज के वर्गों मे विभाजन की आर्थिक बुनियाद टूट रही है।

४ कृषि मे हो रहा पुनर्गठन खेती के काम को औद्योगिक प्रतिष्ठान के काम के समीप ला रहा है, मजदूर और किसान के श्रम को समीप ला रहा है और इस तरह नगर व देहात के बीच श्रम के सामाजिक विभाजन के आर्थिक आधार को नष्ट कर रहा है। नगर और देहात को समीप लाने मे प्रत्यक्ष सफलता प्राप्त हो रही है। लेकिन, एगेल्स के मत मे, यह काम वही पीढी पूरा कर पायेगी, जिसने पूर्ण

पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण पाया है।

यहा यह कहा जाना चाहिए कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के लिए नगर और देहात दोनो के श्रम का अध्ययन अपेक्षित है, जैसा कि लेनिन जोर दिया करते थे।

इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हमारे किसान-युवाजन विद्यालयों को प्रविधि की ओर अधिक ध्यान देना चाहिए, जबकि फ़ैक्टरी-कारखाना शिक्षालयो और औद्योगिक विद्यालयो के छात्रो को पढाई के दौरान व्यावहारिक कार्य के लिए गावो मे भेजा जाना चाहिए।

५ आधुनिक प्रविधि श्रम को आसान बनाती है। वे काम, जो पहले हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति – लौहार, कुली – ही कर सकते थे, अब मशीनें करती है, इसके फलस्वरूप स्त्रियो को बडी संख्या मे काम पर लगाना सभव होता है। युद्ध ने सभी देशो मे पुरुषों और स्त्रियो के बीच श्रम का परपरागत विभाजन बहुत हद तक मिटा दिया है, लेकिन घरेलू काम (खाना बनाना, कपडे धोना, सीना) मशीनो से होने लगने पर और स्त्रियो का शिक्षा स्तर ऊचा उठने, उन्हे आर्थिक कार्यों मे प्रवृत्त करने पर ही – सोवियत सत्ता इसी दिशा मे काम कर रही है और इसी दिशा मे आर्थिक पुनर्गठन हो रहा है – पुरुष और स्त्री के श्रम के बीच कृत्रिम सीमा मिट पायेगी।

सार्विक पोलीटेक्निकल शिक्षा से उत्पादन कार्यों में लगी स्त्रियो का अनुपात बढेगा।

६ सोवियत परिस्थितियो मे आधुनिक प्रविधि कुशल और अकुशल श्रम के बीच भेद मिटाती है। कुशल श्रम का स्वरूप आमूल बदलता है कुशल मजदूर को कही कम अभ्यास की, केवल हाथो से काम लेने के कही कम अभ्यास की जरूरत होती है, लेकिन श्रम-प्रक्रियाओं के सार की अधिक गहरी समझ जरूरी होती है। सबके लिए तैयारी के दूसरे स्वरूप की जरूरत होती है, सामान्य शिक्षास्तर और पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण की प्रधानता होती है। पोलीटेक्निकल शिक्षा प्राप्त मजदूर अपेक्षाकृत अल्प समय मे आवश्यक कौशल पा लेता है। दूसरी ओर उत्पादन कार्य मे आवश्यक अकुशल मजदूरो की संख्या शारीरिक श्रम का स्थान मशीनो द्वारा लिये जाने के साथ-साथ घटती है; उधर शिक्षित मजदूरो की माग बढती है, जो कुछ सप्ताह मे ही किसी भी

काम मे कौशल पा लेते है – उनसे सामान्य श्रम विधियो के ज्ञान की अपेक्षा की जाती है। पूजीवाद मजदूरो की ऐसी तरक्की की कम परवाह करता है। व्यापक पोलीटेक्निकल शिक्षा से इन मजदूरो के लिए शीघ्र तरक्की के द्वार खुलते हैं। पोलीटेक्निकल शिक्षा बेरोजगारी से बचाती है और कुशल मजदूरो की कतारो मे स्थान दिलाती है। बच्चो और किशोरो के लिए अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा लागू किये जाने से, जिसका स्वरूप पोलीटेक्निकल होना चाहिए, इस कार्य को उचित दिशा मिली है।

७ अतत, आधुनिक प्रविधि श्रम की नई-नई शाखाओ मे व्याप्त होते हुए विभिन्न उत्पादन-कार्यों के बीच दीवारे तोडती है, जिसकी चर्चा मार्क्स ने 'पूजी' मे ही की थी। उन्होने यह इगित किया था कि उत्पादक कार्य को उसके सघटको मे विभाजित करने से, जैसा कि मैनुफेक्चर चरण मे हुआ, वैज्ञानिक टेक्नोलोजी का प्रादुर्भाव सभव हुआ। वैज्ञानिक टेक्नोलोजी उत्पादन की सभी प्रक्रियाओ के लिए विज्ञान की जानकारी प्रयुक्त करती है और इन प्रक्रियाओ मे एकता लाती है।

प्रविधि एक स्थान पर रुकी नहीं रहती, इसका रूप-परिवर्तन निरतर होता रहता है, मशीनो और रासायनिक प्रक्रियाओ की मदद से यह उत्पादन को मूल मे ही बदलती है, श्रम-शक्ति की माग को भी बदलती है। "इसलिए आधुनिक उद्योग खुद अपने स्वरूप के कारण श्रम के निरतर परिवर्तन, काम के रूप मे लगातार तबदीली और मजदूरो मे सार्वत्रिक गतिशीलता को जरूरी बना देता है।"[2] हमारी अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की तीव्र गति से श्रम-शक्तियो का पुनर्व्यूहन, उनके कार्यों के स्वरूप मे परिवर्तन और भी अधिक बडे पैमाने पर, और भी अधिक गहन होता है। हमारी अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की यह अनन्य माग है कि आमूल बदलते प्रकार्यों के अनुकूल बनने की योग्यता हो, जो सही ढग से आयोजित पोलीटेक्निकल शिक्षा ही दे सकती है। व्यापकतम जनसमूह को इसकी आवश्यकता है। यही कारण है कि न केवल हमारे उच्च शिक्षा सस्थानो और तकनीकी विद्यालयो को पोलीटेक्निकल शिक्षा देनी चाहिए, जिसकी पृष्ठभूमि मे ही सकीर्ण विशेषज्ञता स्वीकार्य है, बल्कि स्कूल का स्वरूप भी पोलीटेक्निकल होना चाहिए। श्रमिक शिक्षा का स्वरूप भी ऐसा ही होना चाहिए। पोलीटेक्निकल रुख बहुत हद तक पुनर्गठन की तीव्र गति से सबधित कठिनाइयो को कम कर सकता

है। इस काम मे विलब नही होना चाहिए।

८ आधुनिक प्रविधि हमारी परिस्थितियों मे यदि कुशल और अकुशल श्रमिको के बीच वह दरार पाटती है, जिसे बढ़ाने की चेष्टा पूजीपति सदा करते है, तो दूसरी ओर मानसिक और शारीरिक श्रम को एक दूसरे के निकट लाने की आधुनिक प्रविधि की प्रवृति सोवियत परिस्थितियो मे अत्यत अनुकूल आधार पाती है। फ़िलहाल स्वतोस्फूर्त ढग से फैल रही श्रमिक और किसान शिक्षा का विकास, सांस्कृतिक क्राति की उठती लहर, सारी शिक्षा को व्यावहारिक जीवन-स्वरूप प्रदान किया जाना और उत्पादन व्यवहार का व्यापक उपयोग–यह सब मानसिक और शारीरिक श्रम को एक दूसरे के निकट लाने में सहायक होगा। इसमें हमारी शिक्षा पद्धति को पोलीटेक्निकल बनाया जाना बहुत बडी भूमिका अदा करेगा।

९. अतत., उत्पादन सभाओ, विभिन्न उत्पादन आयोगो, फ़ैक्टरी-कारखाना समितियों मे मज़दूरो की शिरकत और उनकी समाजवादी प्रतियोगिता ही मजदूर जनसमूह मे सगठनकर्ताओ को विकसित करती है। इसी की बदौलत मिलो-कारखानो से मजदूरो को राज्य-तंत्र मे लाने का इतना आवश्यक कार्य करना सभव हो पाया है। पोलीटेक्निकल शिक्षा इस कार्य को कही अधिक कारगर बनायेगी।

१०. हम यह देख रहे है कि किस प्रकार हमारी सोवियत परिस्थितिया आधुनिक प्रविधि की प्रवृत्तियो को अधिकाधिक व्यापक पैमाने पर मूर्तित करने मे सहायक हो रही हैं और इस प्रकार वर्ग-समाज के अवशेष नष्ट करने के पूर्वाधार बना रही हैं। उदीयमान पीढी के प्रत्येक व्यक्ति को पोलीटेक्निकल शिक्षा प्रदान करना इस मूर्तिकरण का एक सक्रिय कारक होना चाहिए। मार्क्स, एगेल्स और लेनिन ने पोलीटेक्निकल शिक्षा के महत्व पर बारबार ज़ोर दिया है। आज हमारी अर्थव्यवस्था के समाजवादी पुनर्गठन की बदौलत यह महत्व कही अधिक दृष्टिगोचर हो रहा है। पोलीटेक्निकल शिक्षा केवल शिक्षा जन-कमिसारियत और उसके विभागो का ही कार्य नही है, बल्कि ऐसा कार्य, ऐसा ध्येय है, जिसमे सारा देश रुचि रखता है, सर्वप्रथम अर्थव्यवस्था की सर्वोच्च परिषद, भूमि जन-कमिसारियत, ट्रेड-यूनियनें और स्वय उदीयमान पीढ़ी।

११ सारा देश इंजीनियर, कृषिविशेषज्ञ, विज्ञान-कर्मी तैयार करने की तीव्र आवश्यकता अनुभव कर रहा है। इस दिशा में भगीरथ प्रयत्न किये जा रहे हैं। कर्मियों के प्रशिक्षण के कार्य के लिए जैसे ही सार्विक अनिवार्य पोलीटेक्निकल शिक्षा का आधार बना लिया जायेगा, उसी क्षण यह सुचारु ढंग से होने लगेगा। इसमें भी कोई विलंब नहीं होने दिया जा सकता।

१२ यह समस्त कार्य विराट पैमाने पर होना चाहिए। आर्थिक, ट्रेड-यूनियन, सामूहिक फार्म और शिक्षा निकायों के बीच कतिपय आम समझौते होने चाहिए। यहां भी काम की एकीकृत योजना और उसकी तीव्र गति आवश्यक है।

१६२०

अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल शिक्षा

पोलीटेक्निकल शिक्षा के विषय पर पहली अखिल रूसी कांग्रेस में दिये गये भाषण और रिपोर्ट

उद्घाटन भाषण

साथियो, पोलीटेक्निकल शिक्षा पर पहली कांग्रेस का अभिवादन करने की अनुमति दे। बेशक, बहुतो को यह लग सकता है कि कांग्रेस बडे अनुपयुक्त समय पर बुलाई गई है। आजकल छुट्टियों के दिन हैं, फसल की कटाई हो रही है, सो जब हम इस प्रश्न पर विचार कर रहे थे तो बहुतों ने यह मत व्यक्त किया था कि कांग्रेस स्थगित कर देना बेहतर होगा। लेकिन बात यह है कि पोलीटेक्निकल स्कूल का, पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न अत्यत तात्कालिक प्रश्न है, यह ऐसा प्रश्न है, जिसे कदापि टाला नही जा सकता, क्योकि शैक्षिक वर्ष आरम्भ होने से पहले ही हमे विशाल कार्य शुरू कर देना है। यही कारण है कि समय बहुत उपयुक्त न होने के बावजूद कांग्रेस इन दिनो ही आयोजित करने का निश्चय किया गया।

पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न कोई नया प्रश्न नही है। आप सब भली-भांति जानते हैं कि मार्क्स और एंगेल्स ने अपने समय मे यह सवाल उठाया था। मार्क्स ने यह प्रमाणित किया था कि विशाल उद्योग बहुमुखी विकसित लोगो की बिल्कुल नई श्रम-शिक्षा की संभावना प्रस्तुत करता है। मैं इस प्रश्न की गहराई मे नही जाऊगी—हमारे साहित्य में इस पर पर्याप्त प्रकाश डाला गया है। केवल इतना इंगित करूंगी कि एंगेल्स ने 'ड्यूहरिंग मत-खंडन' में विशेषत जोर देकर कहा था कि यह प्रश्न समाजवाद के निर्माण के साथ अभिन्न रूप मे जुडा हुआ

है। दूसरी ओर, एंगेल्स ने इस बात पर ज़ोर दिया था कि नगर और देहात के बीच जो अंतर्विरोध है, वह केवल तभी पूरी तरह से मिटाया जा सकेगा, जब चहुंमुखी विकसित, पोलीटेक्निकल दृष्टि से प्रशिक्षित लोगों की नई पीढ़ी बनेगी। तो इस प्रकार मार्क्स-एंगेल्स की शिक्षा में यह प्रश्न निरूपित है।

पिछली सदी के अंतिम दशक में, जब हमारे यहां रूस में उद्योग के विकास से मजदूर आंदोलन के लिए ज़मीन बनी, जब इसकी बदौलत मार्क्स की शिक्षा ने ठोस आधार पाया, जब मार्क्सवादी मंडलियां बनने लगीं, तभी हमारे यहां रूस में पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न उठा। साथी लेनिन ने अपने लेख 'नरोदवादी मनसूबेबाज़ी के कमाल' में इस बात पर ज़ोर दिया था कि मार्क्सवादी पोलीटेक्निकल शिक्षा के, शिक्षा को उत्पादक श्रम से जोड़ने के दृष्टिकोण को स्वीकारते हैं। इसके साथ ही लेनिन इस प्रश्न को सार्विक शिक्षा और सबके लिए अनिवार्य श्रम के प्रश्न से संबंधित मानते थे। शिक्षा के उत्पादक श्रम के साथ संबंध से ही चहुंमुखी विकसित लोग बनने हैं। पहले जब भी यह लेख पढ़ा तो इस पहलू की ओर सार्विक शिक्षा के साथ पोलीटेक्निकल शिक्षा के संबंध की ओर कम ध्यान गया, लेकिन अब इस क्षण, जबकि पार्टी की १६ वीं कांग्रेस ने अनिवार्य सार्विक शिक्षा लागू करने का निर्णय स्वीकार कर लिया है – अब, स्वाभाविकत, इस बात की ओर विशेषत ध्यान जाता है कि हम सार्विक शिक्षा के प्रश्न का पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के प्रश्न के साथ घनिष्ठतम संबंध जोड़ते हैं।

साथियो, यह पहला चरण था, जब हमारे यहां रूस में पिछली सदी के अंतिम दशक में मार्क्सवादियों ने पोलीटेक्निकल शिक्षा की चर्चा की। फिर काफी लंबा अरसा बीता और जब विश्व युद्ध के कारण कई देशों में श्रम-शक्ति का संकट पैदा हुआ, जब विश्वयुद्ध गृहयुद्ध में बदल गया, जब मज़दूर वर्ग विजयी हुआ, तभी पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रश्न ने नई सामयिकता पाई। १६१५–१६१६ में ही जर्मनी, इंगलैंड और दूसरे देशों में शैक्षिक साहित्य पर नज़र रखते हुए यह देखा जा सकता था कि किस प्रकार वहां श्रम-शक्ति के संकट के कारण इस शक्ति को तैयार करने का प्रश्न नये ढंग से उठाया जा रहा है। लेकिन साथ ही यह भी देखा जा सकता था कि किस प्रकार पूंजीवादी समाज-

व्यवस्था यह प्रश्न सही ढंग से नहीं उठाने देती है, उसे समाजवाद के निर्माण के प्रश्न से अलग करती है। उन दिनों ही स्कूलों में पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने के इतिहास का विस्तार से अध्ययन करना पड़ा और जब अक्तूबर क्रांति हुई तो हमारे पास यह नीति तैयार थी कि सार्विक अनिवार्य शिक्षा लागू करनी चाहिए और साथ ही शिक्षा पोलीटेक्निकल होनी चाहिए। पार्टी की आठवीं कांग्रेस में स्वीकृत कार्यक्रम में यह कहा गया था कि सोवियत स्कूल पोलीटेक्निकल स्कूल होना चाहिए।

गृहयुद्ध की समाप्ति पर, १९२० के अंत और १९२१ के शुरू में जब अर्थव्यवस्था पुनरुत्थान करना था, तब पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न पूरी उग्रता से सामने आया। उन दिनो पार्टी में उत्पादन संबंधी प्रचार के, वयस्क मजदूरो की पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि व्यापक बनाने के प्रश्न पर जोरदार बहस चली। उन दिनो ट्रेड-यूनियनो के बारे मे जो वाद-विवाद चल रहा था, उसके दौरान लेनिन ने उत्पादन संबंधी प्रचार के सारे महत्व पर विशेषत. जोर दिया, लेकिन वह चाहते थे कि यह प्रचार पोलीटेक्निकल दृष्टि से हो कि इससे मजदूरो की पोली-टेक्निकल दृष्टि-परिधि व्यापक बने। लेनिन मजदूर वर्ग के सम्मुख प्रस्तुत विराट कार्यभार, नये, समाजवादी आधार पर सारी अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के कार्यभार देख रहे थे और इसलिए वह इस निर्माण कार्य मे जनसमूह को प्रवृत्त करने की आवश्यकता पर जोर देते थे। साथी क्रजीजानोव्स्की को अपने पत्रो मे लेनिन ने इस बात पर जोर दिया कि विद्युतीकरण की योजना मे जनसाधारण की रुचि जगानी चाहिए, विद्युतीकरण का प्रचार व्यावहारिक होना चाहिए। १९२०–१९२१ में पोलीटेक्निकल शिक्षा प्रश्न सर्वप्रथम वयस्को के बीच काम के प्रसंग मे ही देखा जाता था।

इसके साथ ही उन दिनो हुए पार्टी सम्मेलन मे स्कूलो के संदर्भ मे भी यह सवाल उठाया गया। लेनिन ने तब पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के बारे में टिप्पणिया लिखी और 'शिक्षा जन-कमिसारियत के काम के बारे में' शीर्षक लेख मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे अपने विचार व्यक्त किये, यह कहा कि इसके स्थान पर कोई "मोनोटेक्निज़्म" यानी एकांगी तकनीकी शिक्षा लागू करना, व्यवसायोन्मुख सामान्य शिक्षा देना गलत है।

कहना न होगा कि गृहयुद्ध के वर्षों मे पोलीटेक्निकल शिक्षा का आवश्यक प्रसार नही हो सकता था, क्योकि तब आम तबाहहाली, अर्थव्यवस्था के आम विध्वस के कारण ऐसे हालात पैदा हो गये थे, जिनमे पोलीटेक्निकल शिक्षा देना अत्यत कठिन था, और वे कुछेक प्रायोगिक स्कूल, जो ऐसा करने के प्रयास कर रहे थे तथा इस दिशा मे उठाये जा रहे कुछेक सफल कदम – ये सब अतत "प्रायोगिक" ही थे, आम स्कूलो मे पोलीटेक्निकल शिक्षा ने स्थान नही पाया था।

नई आर्थिक नीति[1] के, पुनरुत्थान के वर्षों मे हम देखते हैं कि हमारे आम स्कूलो मे पोलीटेक्निकल स्कूल के कुछ विचार स्थान पाने लगे, लेकिन जितना होना चाहिए था उससे कही कम हद तक। हमारे यहा केवल दो तरह के स्कूल थे, जो कमोबेश पोलीटेक्निकल स्कूल के समीप थे। एक तो फैक्टरी-कारखाना शिक्षालय। यह स्कूल वह बडे पैमाने का स्कूल था, जिसने यह दिखाया कि किस प्रकार शिक्षा को उत्पादन-स्थल पर व्यावहारिक कार्य के साथ जोडना चाहिए। यह पोलीटेक्निकल स्कूल का रूप था।

फैक्टरी-कारखाना शिक्षालय के मूल मे पोलीटेक्निकल शिक्षा का, शिक्षा को उत्पादन-कार्य से जोड़ने का विचार ही निहित था।

इसके बाद दूसरा स्कूल जो पोलीटेक्निकल शिक्षा की दिशा मे बढा है, वह है किसान युवाजन स्कूल। वहा भी शिक्षा का उत्पादन से घनिष्ठ सबध है, लेकिन हमारे यहा कृषि पिछडी हुई थी। इसका स्कूल पर प्रभाव पडे बिना नही रह सकता था। आज, जबकि कृषि का सामूहिकीकरण और मशीनीकरण हो रहा है, किसान युवाजन स्कूल के सम्मुख नये क्षितिज खुल रहे है और इसे सच्चे अर्थो मे पोलीटेक्निकल स्कूल बनने का अवसर मिल रहा है।

लेकिन यदि हम आम तौर पर स्कूलो को ले, तो यही कहना होगा कि केवल कुछ प्रयोग, कुछ प्रयास ही हुए हैं, जबकि अधिसख्या मे न पहले और न दूसरे चरण के स्कूल पोलीटेक्निकल स्कूल रहे हैं। यदि हम कभी-कभी अपनी वर्कशापो को पोलीटेक्निकल वर्कशाप कहते थे, तो ऐसा अपने मन की सतुष्टि के लिए ही करते थे। लेकिन अब, इस क्षण, पोलीटेक्निकल शिक्षा के लिए परिस्थितिया बिल्कुल दूसरी बन गई है।

पार्टी की १६ वीं कांग्रेस ने अनेक नितांत महत्वपूर्ण प्रश्न विशेष स्पष्टता के साथ निरूपित किये हैं। कांग्रेस में देश के आर्थिक जीवन में आ रहे सभी आमूल परिवर्तन इंगित किये गये हैं और देश में हो रहे निर्माण का समाजवादी सार उघाड़ा गया है।

ट्रेड-यूनियनें उत्पादन की ओर उन्मुख हुई हैं, आर्थिक जीवन के अनेक प्रश्न नये ढंग से प्रस्तुत किये जा रहे हैं, इस सब को देखते हुए पोलीटेक्निकल स्कूल का प्रश्न नये धरातल पर आता है, एक अत्यंत तात्कालिक, सर्वाधिक सामयिक प्रश्न बनता है और साथ ही इसके समाधान की नई संभावनाओं का मार्ग प्रशस्त होता है।

यह सच है कि अभी पुराने ढर्रे की जकड़ काफी मजबूत है और कुछ प्रबंधकर्मी, कुछ विशेषज्ञ, कुछ शिक्षाकर्मी, कुछ मजदूर प्रायः इन प्रश्नों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। बहुतों को यह लगता है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न एक विभागीय प्रश्न है, केवल शिक्षा जन-कमिसारियत का प्रश्न है, किंतु जीवन अपना दबाव डाल रहा है और सिखा रहा है। यहां जो कांग्रेस जमा हुई है, यह कांग्रेस ठीक समय पर हो रही है, क्योंकि इस समय ही पोलीटेक्निकल शिक्षा के अनेक प्रश्न पूरी गंभीरता से उठाये जाने चाहिए। वह समय बीत चुका है जब पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रचार ही चल रहा था। अब प्रश्न यह है कि हमारी सारी शिक्षा-पद्धति – पहले चरण से शुरू करके उच्च शिक्षा तक पोलीटेक्निकल हो। यह सारे जीवन की, सारे उत्पादन-कार्य की मांग है। हमें सारी शिक्षा-पद्धति का विराट पुनर्गठन करना है।

स्वाभाविक ही है कि अकेला शिक्षा जन-कमिसारियत यह काम नहीं कर सकता, यहां केवल पार्टी की ही मदद नहीं चाहिए, जो सदा पोलीटेक्निकल शिक्षा का स्वागत करती आई है, केवल कोमसोमोल का ही समर्थन नहीं चाहिए, जो इसमें प्रत्यक्षतः रुचि रखता है – यहां ट्रेड-यूनियनों की ओर से, आर्थिक प्रबंधकों की ओर से भारी मदद चाहिए, क्योंकि सामान्य प्रयासों से ही उस शिक्षा पद्धति का निर्माण किया जा सकता है, जिसका अस्तित्व ही समाजवाद के पथ पर वामन पग होगा।

साथियो, इसके साथ मैं अपना भाषण समाप्त करने की अनुमति चाहती हूं और यह कामना करती हूं कि कांग्रेस का कार्य अधिक से

अधिक फलप्रद हो और वह सभी प्रश्नों का यथासभव अधिक व्यावहारिक निरूपण करे। दस साल पहले १९२० मे जब उत्पादन सबधी प्रचार पर वाद-विवाद चल रहा था, तो लेनिन ने कहा था कि अब सिद्धात से व्यवहार पर आना चाहिए। आज इस बात की सभी सभावनाए मौजूद है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा का प्रश्न व्यावहारिक धरातल पर रखा जाये।

रिपोर्ट

मेरी रिपोर्ट का विषय है 'अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल शिक्षा'।

साथियो, आज हम अर्थव्यवस्था के जिस पुनर्गठन के साक्षी हैं, उसका स्वरूप स्पष्टत समाजवादी है। यही इसकी विशिष्टता है, यही इसका विशेष लक्षण है – यह पुनर्गठन पूर्णत समाजवादी है।

बात केवल यह नही है कि उत्पादन साधनो का समाजीकरण बढ रहा है, बात यह है कि सारा सगठन नये ढग से हो रहा है, कि अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन का ध्येय मेहनतकश जनसमूह का हित ही है।

बेशक, यह हमारे यहा अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन और पूजीवादी देशो मे हो रहे पुनर्गठन का मूलभूत अतर है। वहा पुनर्गठन का ध्येय मुट्ठी भर पूजीपतियो का मुनाफा है।

तदुपरात हमारी अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन की प्रमुख विशेषता यह है कि यह कार्य स्वय जनसमूह के हाथो हो रहा है, कि यदि व्यापक जनसमूह इसमे सक्रिय, सचेतन भाग न लेते, तो यह असभव होता।

लेनिन ने अपनी पुस्तिका 'एक शानदार शुरूआत' मे अर्थव्यवस्था के पुनर्गठन के क्षेत्र मे प्रस्तुत कार्यभारो की चर्चा की थी। यह पुस्तिका १९१९ मे सुब्बोत्निको के सिलसिले मे लिखी गई थी, जो उन दिनो स्वतोस्फूर्त ढग से होने लगे थे। उन्होने कहा था कि अर्थव्यवस्था के क्षेत्र मे हमारे समाजवादी निर्माण की विशेषता है एक भिन्न सामाजिक सबध। पूजीवादी देशो मे कैसा सामाजिक सबध है? यह पूजीपति और मजदूर का, जमीदार और उसके लिए काम कर रहे किसान का सबध है। वहा जमीदारो और पूजीपतियो की सत्ता है। वहा सारा

सामाजिक रिश्ता इसी से निर्धारित होता है। हमारे यहां सोवि[illegible]
की सत्ता है और यह भिन्न सामाजिक नाता, यह सोवियतों की [illegible]
जनसमूह के कार्य के लिए, उनकी पहलकदमी के लिए, उनके स्वतं[illegible]
क्रियाकलाप के विकास के लिए ऐसी परिस्थितियां बनाती है, [illegible]
पूंजीवादी देशों में न है, न हो सकती है, और इस सामाजिक [illegible]
में ही जनसमूह की वह सृजन शक्ति बनती है, जो अभूतपूर्व [illegible]
संभावना सुनिश्चित करती है। जब हम यह कहते है कि अर्थव्य[illegible]
के क्षेत्र में हमारा कार्यभार है—पूंजीवादी देशों के स्तर तक पहुं[illegible]
और उनसे आगे बढ़ना, तो यह महज प्रचार नारा नहीं है, यह [illegible]
बात की गहन चेतना है कि हमारी परिस्थितियों में, सोवियत देश [illegible]
परिस्थितियों में एक नई विराट शक्ति बन रही है—संगठित सचेत[illegible]
जनसमूह की शक्ति, जो पूंजीवादी देशों में नहीं है। और यह शक्ति
ही हमारे इस नारे को एक यथार्थ नारा बनाती है। यह कोई प्रचा[illegible]
की चाल नहीं है, यह उस तथ्य की स्वीकृति है, जिसके साक्षी
हम-आप है।

इस नये संबंध की ही चर्चा लेनिन ने की थी, जब उन्होंने अपनी
पुस्तिका 'एक शानदार शुरुआत' में सुब्बोत्निकों में प्रकट हो रहे
सचेतन श्रम-अनुशासन के बारे में लिखा। लेकिन हम देख रहे हैं कि
अब नई परिस्थितियों में यह सचेतन अनुशासन कैसे विकसित हो रहा
है। हम इस बात के साक्षी हैं कि कैसे हमारे देखते-देखते मिलों कारखानों
में यह सचेतन अनुशासन बन रहा है, पूंजीवादी अनुशासन नहीं, [illegible]
अनुशासन नहीं, जो पूंजीवादी राज्य के वातावरण में बनता है, बल्कि
वह अनुशासन, जो स्वयं आंतरिक चेतना से बनता है।

फिर श्रम का नया संगठन आता है। यदि हम आज फैक्टरी या
कारखाने में जायें, एक दूसरे से समाजवादी प्रतियोगिता कर [illegible]
[illegible] देखें, काम की रफ्तार देखें, तो हम पल भर भी [illegible]
किये बिना कहेंगे कि हम सचमुच श्रम का नया संगठन देख रहे हैं। [illegible]
[illegible] सामूहिक फार्मों में हो रहा निर्माण देखें, तो पायेंगे कि [illegible]
[illegible] उत्पादन [illegible] इस में संगठित हो रहा है। यह [illegible]
[illegible] है [illegible] था, यह सामूहिकतावादी संगठन है, जो [illegible]
[illegible] है और विराट सृजनात्मक शक्ति है।

और अंतिम बात, जिस पर लेनिन ने इस सिलसिले मे ज़ोर दिया, ह है विज्ञान और पूजीवादी प्रविधि की नवीनतम उपलब्धियो को डे पैमाने का समाजवादी उत्पादन कार्य कर रहे वर्ग-चेतन मजदूरो जन सगठन के साथ मिलाने की आवश्यकता।

अनेक बार अलग-अलग मौको पर लेनिन ने यह कहा था कि हमे रेखम से, अमरीका से, पूजीवादी देशो से प्रविधि की उपलब्धिया ी चाहिए, यह सब लेना चाहिए, लेकिन इसे लेकर हमारी नई रिस्थितियो मे इसका नये ढग से उपयोग करना चाहिए।

१६१८ मे सोवियतो की तीसरी अखिल रूसी काग्रेस मे लेनिन ने ा था "अब तकनीक के सभी चमत्कार, सस्कृति की सभी उपलब्धिया ी जनता की सपदा होगी, और अब कभी मानव बुद्धि और मेधा ा के साधनो मे, शोषण के साधनो मे परिवर्तित नही होगी,"[2] ो उन्होने यह कहा था कि किस प्रकार तकनीक की उपलब्धिया समूह को अभूतपूर्व, अश्रुतपूर्व स्तर पर उठायेगी।

ये सब विचार, जो लेनिन ने अपने समय मे प्रस्तुत किये थे, वे व्यवहार मे मूर्तित हो रहे हैं।

आजकल समाजवादी प्रतियोगिता हो रही है। उसका परिमाण वैसा , जैसा पुराने सुब्बोत्निको के समय था। समाजवादी प्रतियोगिता बडे प्रतिष्ठानो मे फैल रही है, वह अधिक गहन हो रही है, नये रूप ग्रहण कर रही है। हर रोज़ अखबारो मे हम इन नये के बारे मे पढते है—कही अग्रणी टोलिया पिछडी टोलियो को बढाने का दायित्व ले रही हैं, कही अनेक क्रमिक कार्य करनेवालो एक टोली बन रही है, कही कोई और नये रूप खोजे जा रहे हैं। टोली कम्यूनो के बारे मे पढते है, जिनमे नये ढग से सगठित : मजदूर अपने काम मे एक दूसरे की सहायता करते हैं। इस सबके वरूप हम अपने निर्माण को नई दृष्टि से देख पाते हैं।

उदाहरण के लिए आजकल फिज़ूलखर्ची से सघर्ष का सवाल उठाया है। 'योजना मोर्चे पर' पत्रिका के अंक ६-१० मे रुदाकोव का रोचक लेख है। उन्होने लिखा है कि हिसाब लगाने पर यह पाया है कि हमारे यहा हर साल ४ अरब रूबल का अपव्यय होता है। फिज़ूलखर्ची से सघर्ष का यह कार्यभार मजदूर वर्ग सामने रखा

गया तो मजदूर इस काम में जुट गये। अब यह हिसाब लगाया गया है कि अनुमान से चुने गये दस कारखानों में अल्प समय में ही ऐसा पुनर्गठन किया गया है, जिससे तुरत ३० लाख रूबल की बचत हुई है, और इसके अलावा भी कई सुझाव पेश किये गये – मजदूरों ने कुल २२ हजार प्रस्ताव रखे। १० कारखानो मे २२ हजार प्रस्ताव – इस संख्या से यह पता चलता है कि उत्पादन का प्रबंध, उत्पादन का पुनर्गठन कैसे सर्वश्रेष्ठ ढग से हो सकता है। इससे यह पता चलता है कि मजदूर वर्ग अर्थव्यवस्था के नये ढग से पुनर्गठन मे पूरे तन-मन से भाग ले रहा है। इसी से वह शक्ति बनती है, जिसकी बदौलत तेजी गति से आगे बढ़ना सभव है। किंतु यह भी बिल्कुल स्पष्ट है कि मजदूर जनसमूह की सक्रियता का, मजदूरों के सृजन का परिणाम उतना ही अच्छा होगा, कारगर उतनी ही अधिक होगी, जितने अधिक वे तकनीकी दृष्टि से प्रशिक्षित होगे, जितनी अच्छी तरह वे उत्पादन की सभी प्रक्रियाओ को, उनके परस्पर सबध को समझते होगे, जितनी अधिक उनकी पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि व्यापक होगी।

बेशक, यह नही कहा जा सकता कि मजदूरो द्वारा रखा गया हर प्रस्ताव अमल मे लाना चाहिए। अक्सर ये प्रस्ताव मजदूर के अपर्याप्त तकनीकी ज्ञान, गणनाएं करने की अक्षमता, आदि के कारण क्रियान्वयन के योग्य नही होते। यदि मजदूरो को अधिक अच्छी तकनीकी शिक्षा मिली होती तो उनके प्रस्तावो का बिल्कुल दूसरा ही महत्व हो सकता था। सो स्पष्ट है कि जनसाधारण की सृजन शक्ति उतनी ही अधिक कारगर होगी जितना ऊचा पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण उन्हे प्राप्त होगा। इसीलिए लेनिन ने 'उत्पादन-प्रचार सबधी प्रस्थापनाओं' मे और पोली-टेक्निकल शिक्षा के सगठन के प्रश्न पर अपनी टिप्पणियो मे लिखा था कि हमे आज मिस्त्री और बढ़ई चाहिए, लेकिन ऐसे जिनकी दृष्टि-परिधि पोलीटेक्निकल हो। लेनिन ने सर्वत्र कार्य के इस पहलू – पोली-टेक्निकल शिक्षा – की ओर जोर दिया।

हम देखते है कि हमारे यहा स्वतःस्फूर्त ढग से काफी बड़े पैमाने पर मजदूरो का पोलीटेक्निकल प्रशिक्षण होने लगा है। उत्पादन के प्रावैधिक पाठ्यक्रमो को ले। केवल उक्राइना मे ही १९२९ मे ११ हजार मजदूरो को इन पाठ्यक्रमो मे भेजने का फैसला किया गया है।

किसी कारखाने में जाने पर अक्सर बताया जाता है. "हमारे हा उत्पादन का प्रावेशिक पाठ्यक्रम है," लेकिन यह नही बताया जाता कि यह कैसा पाठ्यक्रम है, उसमे पढाई कैसे होती है, इस काम का अभी कोई अध्ययन नही होता है। यह कहना होगा कि यह काम काफी अव्यवस्थित ढग से हो रहा है।

उदाहरण के लिए, यदि आप मास्को के किसी कारखाने मे जायेगे, तो आपको बताया जायेगा· "हमारे यहा लगभग आधे मजदूर शिक्षा पा रहे हैं।" लेकिन कहा शिक्षा पा रहे हैं? आम तौर पर वे मजदूर फैकल्टियो के तैयारी पाठ्यक्रो मे, मजदूर फैकल्टियो[3] मे, तकनीकी विद्यालयो और उच्च शिक्षा सस्थानो के विभिन्न तैयारी पाठ्यक्रमो मे शिक्षा पाते हैं। जबकि यह कहना होगा कि ये सभी पाठ्यक्रम अभी उत्पादन के साथ पर्याप्त रूप से सलग्न नही हैं, इनमे रूढिगत शिक्षा का तत्व अधिक है। किंतु पुराने ढग की शिक्षा के साथ-साथ नये रूप भी बन रहे हैं, उदाहरण के लिए कारखाना-स्कूल, जहा हर खाते मे, हर प्रक्रिया से सबधित कई विशेष पाठ्यक्रम होते हैं, जो तत्सबधी प्रक्रिया के सभी पहलुओ पर प्रकाश डालते हैं। सारी शिक्षा कारखाने के गिर्द होती है। व्यवहार के, जीवन के आधार पर पाठ्यक्रम नये ढग से बनाये जा रहे हैं। बेशक, यह असाधारण पथ है, ऐसे कारखाना-स्कूलो के अनुभव का अध्ययन करना अत्यत महत्वपूर्ण है। और फिर शिक्षा के दूसरे रूप भी हैं – उत्पादन से सबधित प्रदर्शनिया, व्याख्यान, इत्यादि। इस सबसे मजदूरो की दृष्टि-परिधि बहुत व्यापक होती है। उत्पादन की आवश्यकताओ के कारण मजदूरो को एक कारखाने से दूसरे मे भेजने के व्यवहार से भी मजदूरो की दृष्टि-परिधि व्यापक होती है, उनकी पोलीटेक्निकल चेतना निस्सदेह बढती है।

'उत्पादन-प्रचार सबधी प्रस्थापनाओ' मे लेनिन ने यह इगित किया है कि उत्पादन-प्रचार कितने व्यापक पैमाने पर होना चाहिए। उदाहरणत, उन्होने इस बात पर जोर दिया है कि निरक्षरता उन्मूलन केंद्र उत्पादन-प्रचार से, पोलीटेक्निकल प्रचार से सबद्ध होने चाहिए। निस्सदेह, यह बात बहुत मानी रखती है। हमारे यहा आजकल निरक्षरता उन्मूलन का काम जिस पैमाने पर हो रहा है उसे देखते हुए, यदि इस काम को उत्पादन-प्रचार के तत्वो के साथ जोडा जाये तो यह आगे

बढ़ाता हुआ एक विराट कदम होगा, क्योंकि मजदूरों के सबसे अधिक पिछड़े संस्तर ऊपर उठेंगे और उत्पादन-कार्य के प्रति सचेतन रुख अपनायेंगे।

एक और पहलू भी है, जो मजदूरों की व्यापक पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि को आवश्यक बनाता है—बात यह है कि हमारे यहां अर्थव्यवस्था का पुनर्निर्माण अत्यंत क्षीण आधार पर हो रहा है। यदि हम विभिन्न प्रांतीय क्षेत्रों को, अलग-अलग इलाकों को लें, तो हम देखेंगे कि वहां निर्माण-कार्य एकदम नये सिरे से शुरू करना पड़ रहा है। लेनिन ने समाज की आर्थिक पद्धतियों की चर्चा की थी। हमारी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण के लिए इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ है कि हमें अत्यंत जटिल परिस्थितियों मे मजदूरों के पूर्णतः विभिन्न प्रशिक्षण-स्तर को, सारी स्थिति को ध्यान मे रखना है और इस मामले मे किन्हीं खाकों के अनुसार नही चला जा सकता, यहा तो आवश्यकता इस बात की है कि जनसमूह इस निर्माण-कार्य मे भाग ले। जनसमूह की शिरकत के बिना हमारा पुनर्निर्माण कार्य उस गहराई से और उतने बड़े पैमाने पर नही हो पायेगा, जिसकी जीवन हमसे अपेक्षा करता है।

अभी तक मैंने वयस्कों द्वारा पोलीटेक्निकल शिक्षा पाने और अपनी दृष्टि-परिधि व्यापक बनाने की ही चर्चा की है। लेकिन स्कूल के प्रसंग मे स्थिति क्या है? बात यह है कि प्रौढ़-शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाने का कार्य स्कूल मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा हुआ है। आप जानते हैं कि पार्टी के कार्यक्रम में जनशिक्षा परिषदों की चर्चा की गई है, लेनिन ने इनके महत्व पर जोर दिया था। ये 'स्कूल सहायता परिषदें'[1] नहीं हैं, ये तो कुछ और ही हैं, ये परिषदें तो स्कूली शिक्षा-पद्धति के निर्माण मे जनसमूह की शिरकत के लिए हैं, और स्वाभाविक है कि यदि जनसमूह की दृष्टि-परिधि व्यापक होती है, तो यह जनसमूह स्कूली शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाने के काम मे सक्रियतम भाग ले सकेगा।

साथियो, हम किसी भ्रम मे नही है, हम जानते है कि हमारे स्कूल कितने साधनहीन हैं, कि स्कूलों मे वर्कशापों को कितना कम स्थान मिलता है। अभी पीछे किसी ने हिसाब लगाया है कि अक्तूबर क्रांति के बाद बनाये गये स्कूलों मे कुल स्थान का केवल २% वर्कशापों के लिए

से परिचित कराने और इस प्रविधि के विकास का पथ दिखाने के काम आ सकती है। हर फ़ैक्टरी का लाभ उठाया जाना चाहिए।

इधर कुछ दिन पहले मुझे एक कारखाने में जाने का मौका मिला, कारखाने के पास ही सातवीं तक का एक स्कूल है। यह बिल्कुल कुदरती बात लगती है कि कारखाने की बची-खुची चीजें, टीन के टुकड़े, तार, वगैरह स्कूल की वर्कशाप में जायें, ताकि वहां इनके आधार पर बच्चों को मोटर की रचना समझाई जाये, लेकिन कारखाना स्कूल में कोई दिलचस्पी नहीं लेता। स्कूल में अगर उसकी कोई रुचि है, तो केवल इस दृष्टि से कि स्कूल की जमीन कारखाना पा सकता है या नहीं, वहां अपना कोई खाता खड़ा कर सकता है या नहीं। स्कूल में क्या होता है, वहां का पाठ्यक्रम क्या है, कैसा है, कैसे कारखाना स्कूल की मदद कर सकता है—इस सबसे कारखाने को कोई वास्ता नहीं है।

हमें कुछ ऐसा करना चाहिए कि कारखाने को स्कूल से वास्ता हो और स्कूल को कारखाने से। अभी तो ऐसे मामले बहुत कम देखने में आते हैं, जबकि कारखाने में स्कूल के पाठ्यक्रम पर विचार किया जाता हो, यह देखा जाता हो कि पोलीटेक्निकल शिक्षा की दृष्टि से पाठ्यक्रम ठीक बनाया गया है या नहीं। हम देखते हैं कि हमारे प्रतिष्ठान, हमारे अग्रणी कर्मी, जो उत्पादन को आगे बढ़ा रहे हैं, स्कूल की ओर ध्यान नहीं देते हैं। हम देखते हैं कि स्कूल के प्रश्नों पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाता। हम ऐसी बातें देखते हैं : मास्को के एक स्कूल में वर्कशाप है, वहां पहले शिल्प सिखाये जाते थे, लेकिन अब चूंकि पोलीटेक्निकल शिक्षा का फैशन है, सो इस वर्कशाप का नाम भी पोलीटेक्निकल वर्कशाप रख दिया गया है, हालांकि इसके काम में कोई भी तब्दीली नहीं आई है। जब छात्रों से पूछा जाता है कि आप लोग यहां क्या करते हैं तो वे जवाब देते हैं कि पोलीटेक्निकल वर्कशाप में उनके दो पीरियड होते हैं, यही अच्छा है कि ये पीरियड आखिरी होते हैं, क्योंकि चुपके से खिसका जा सकता है और जो कोई खिसक सकता है, वह खिसक जाता है। मैंने पूछा कि इन पीरियडों का बाकी पढ़ाई के साथ कोई संबंध है कि नहीं, तो छात्रों ने जवाब दिया कि वर्कशाप में काम बाकी पढ़ाई के साथ किसी भी तरह संबंधित नहीं है। यदि मजदूर स्कूलों में पोली-टेक्निकल शिक्षा लागू करने के काम में भाग लेने लगें तो बेशक ऐसा न

इसका मतलब है मजदूर वर्ग से भाग, मेहनतकशों के व्यापक जनसमूह के साथ स्कूल समाजवाद के पथ पर अग्रसर होगा।

आज मजदूरों की पोलीटेक्निकल दृष्टि व्यापक करने का अर्थ यह है कि यह जनसमूह जो अब स्कूल के प्रश्नों में रुचि लेगा, उस जनसमूह से भिन्न होगा जो पहले था; अब वह पोलीटेक्निकल शिक्षा की समस्याओं को समझ पायेगा। इसका अपार महत्व है।

अब दूसरा प्रश्न लें। आप जानते हैं कि हमारा समाजवादी पुनर्निर्माण पूंजीवादी देशों में हो रहे आर्थिक कार्य से इस बात में भिन्न है कि हमारा निर्माण योजनाबद्ध है. पूंजीवादी देशों में जो प्रतिस्पर्धा है उसके सम्मुख हमारी पंचवर्षीय योजना का अपार सैद्धांतिक महत्व है। आज हम उत्तरी अमरीका, जर्मनी तथा अन्य अनेक बड़े देशों में ऐसे भयानक आर्थिक संकट के साक्षी हैं। यह वह संकट है, जो योजनाबद्धता न होने के कारण ही उत्पन्न होता है। पूरी अर्थव्यवस्था के विकास की एक पंचवर्षीय योजना बनाने का प्रश्न ही अपार महत्व रखता है।

कुदरती बात है कि ऐसा कोई नहीं समझता कि यह पंचवर्षीय योजना बनाना केवल योजना आयोग का काम है। हमें यह समझना चाहिए कि योजनाबद्धता का अर्थ यह है कि यह पंचवर्षीय योजना इस तरह बननी चाहिए, ताकि प्रत्येक आर्थिक संगठन अपना काम योजनाबद्ध ढंग से करे। इधर हम यह देख रहे हैं कि हर कारखाने तक, हर मशीन तक यह योजना पहुंचाई जा रही है और इससे मजदूर वर्ग में कैसे विराट परिवर्तन आ रहे हैं। हम देखते हैं कि औद्योगिक-वित्तीय प्रतियोजना पेश की जा रही है।

इस औद्योगिक-वित्तीय प्रतियोजना का क्या अर्थ है?

इसका अर्थ है कि योजनाबद्धता का विचार योजना आयोग के कार्यालय से हर मजदूर तक पहुंचा है और यह औद्योगिक-वित्तीय प्रतियोजना जितनी अधिक व्यापक और विकसित होगी, उतनी ही अधिक गहराई से मजदूर यह योजनाबद्धता समझेंगे। लेकिन यह सब इस बात से जुड़ा हुआ है कि मजदूरों के व्यापक संस्तरों को इस योजनाबद्धता के अनेक तत्वों से परिचित कराना चाहिए। अपने स्कूलों को भी हमें इस तरह संगठित करना चाहिए कि उनका कार्य योजनाबद्ध ढंग से हो, ऐसे नहीं कि स्कूल की कार्यशाला में आये, कुछ काम किया

और बात खत्म। योजनाबद्धता का अर्थ पाठों की समय-सारिणी बनाना मात्र नहीं समझना चाहिए। बात समय-सारिणी की नहीं है, बल्कि यह है कि बच्चे स्वयं समझें कि वे क्या कर रहे हैं, किसलिए कर रहे हैं।

हम स्कूल छात्रों का व्यावहारिक कार्य मजदूरों की, मेहनतकश जनसमूह की मदद से इस तरह संगठित करना चाहते हैं, ताकि वे स्कूल छात्रों में योजना बनाने की योग्यता विकसित करें ताकि योजनाबद्धता स्कूल के रोम-रोम में व्याप्त हो जाये, तभी हम उदीयमान पीढ़ी का नये ढंग से चरित्र-निर्माण कर सकेंगे।

हमारे चारों ओर के जीवन में अभी भी पुराने तौर-तरीकों के अवशेष और पुरानी अनियोजितता बेहद है। उदाहरण के लिए कोई वर्कशाप बनाते हैं, उसपर ४५ हजार रूबल खर्च करते हैं, मगर अगले दिन इंजीनियर अधिक कारगर परियोजना पेश करता है और नई बनी वर्कशाप ढहा दी जाती है, ४५ हजार रूबल पानी में बह जाते हैं। ऐसी गलतियों का होना अभी तो अनिवार्य है।

लेकिन हमें अपना यह कार्यभार रखना चाहिए कि हमें ऐसी पीढ़ी शिक्षित करनी है, जिसे योजनाबद्ध ढंग से काम करना आता हो। यह कार्यभार स्कूली शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाने के कार्यभार के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है, क्योंकि योजनाबद्ध कार्य के लिए निश्चित दृष्टि-परिधि, उत्पादन की निश्चित समझ अपेक्षित है।

इस सिलसिले में उत्पादन कार्य की योजनाबद्धता अपार महत्व रखती है।

एंगेल्स ने यह लिखा था कि नगर और देहात के बीच अन्तर्विरोध केवल तभी मिटाये जा सकते हैं, जब पोलीटेक्निकल शिक्षाप्राप्त बहुमखी विकसित लोगों की नई पीढ़ी बनेगी। लेनिन ने भी नरोदवादी तत्समूवेवाकी के खिलाफ लीगैक अपने लेख में नगर और देहात के बीच अन्तर्विरोध दूर करने की समस्या पर जो पूंजीवादी समाज में श्रम-विभाजन का आधार है, गौर किया था।

आज हम ऐसे क्षण से गुजर रहे हैं जबकि सामूहिकीकरण की दौलत नगर और देहात के बीच ये अन्तर्विरोध दूर हो रहे हैं। अब हम बिल्कुल नये रास्ते देख रहे हैं हम देखते हैं कि देहातों में भी [illegible]

के प्रश्नो मे दूसरे ढग से रुचि ली जाने लगी है। अब नगर और देहात का सामीप्य पहले से कही अधिक वास्तविक हो रहा है और ऐसा सामूहिकीकरण से, कृषि उत्पादन के मशीनीकरण के आधार पर हो रहा है। पहले मजदूर किसी प्रकार ध्येय से देहात मे जाता था और यह उस बात से बिल्कुल भिन्न था, जो आजकल हो रही है।

अब मजदूर देहातो मे जाते है, अपना उत्पादन अनुभव लेकर, अपना आन्तरिक सचेतन अनुशासन, सामूहिक श्रम की अपनी आदत लेकर, जो कारखाने के सारे वातावरण मे बनती है, अपना सर्वहारा सकल्प लेकर वे गावो मे जाते हैं। यदि आप अभी-अभी बना सामूहिक फार्म ले और उसमे कल तक केवल अपने लिए काम करते रहे किसानों की मानसिकता की मजदूरो की मानसिकता से तुलना करे, तो बहुत बडा अतर पायेगे। उदाहरण के लिए, मजदूर कहता है: "यह क्या अजीब बात है, गाडी बरफ मे खडी है, ट्रैक्टर बरफ मे खड़ा है और फार्म के किसान इसे अनदेखा करते हैं, कोई इसकी ओर ध्यान नहीं देता, जबकि ट्रैक्टर को यहा से हटाकर सायबान तले खड़ा करना कोई मुश्किल काम नही।" स्पष्ट है कि मजदूर मे सामाजिक सपत्ति की रक्षा की आदत बनी हुई है। वह समझता है कि ट्रैक्टर अपार महत्व रखता है, सामूहिक किसान अभी इसका आदी नही हुआ है, उसे अभी सामाजिक सपत्ति की रक्षा करने की आदत नही पड़ी है। हम देखते हैं कि किसान में अभी वह रवैया बन ही रहा है, जो सामूहिक खेती के लिए जरूरी है, अब कही उन सामूहिक फार्मों मे, जहा नये ढग से श्रम का सगठन हो रहा है, सामूहिक कर्मी की, उत्पादन के स्वामी की मानसिकता बन रही है। इस सिलसिले मे मजदूरो का देहातों को भेजा जाना नगर और देहात के बीच अतर्विरोध दूर करने के लिए नितान्त महत्वपूर्ण है। अब देहात का पार्थक्य बहुत हद तक दूर हो रहा है और निस्संदेह हमारी स्कूली शिक्षा पर इसकी छाप पड रही है, यह छाप पड़े बिना रह ही नही सकती। अभी कुछ समय पहले तक ऐसी बातें सुनने मे आती थी. "हमारे यहा शहर मे पोलीटेक्निकल स्कूल है, जबकि देहात मे स्कूल का कृषि-विशेषीकरण होगा।" कृषि-विशेषीकरण तो ठीक है, लेकिन यह पिछडी कृषि के आधार पर नही हो सकता। यह पोलीटेक्निकल शिक्षा के साथ अभिन्न रूप से जुड़ा होना चाहिए। अब

ा अधिक स्पष्टता से यह देख रहे है कि पार्टी के कार्यक्रम मे एक समान
ली शिक्षा पद्धति के बारे मे जो कहा गया है, उसका वास्ता शिक्षा
सामान्य दिशा, सामान्य सिद्धातो से ही नही है, बल्कि इस बात मे
कि नगर मे भी और देहात मे भी एक ही आधार पर पोलीटेक्निकल
क्षा होनी चाहिए। आज नगर और देहात के बीच दूरी मिटने की जो
क्रिया हो रही है, वह अपार महत्व रखती है।

अब अगला प्रश्न ले। हमारा देश औद्योगिक देश बन रहा है।
का अर्थ क्या है? इसका अर्थ है कि हमारे बडे नगरो मे विशाल
ने पर उद्योगो का निर्माण होगा। इसका अर्थ यह भी है कि हमारे
कृषि का नये ढग से निर्माण होगा, उसमे मशीनो का उपयोग
ा, साथ ही इसका अर्थ यह भी है कि परिवहन और सचार भी
ा कडियो को नये ढग से जोडेगे और प्रविधि की जितनी भी उप-
ब्धया हैं, उनका इस क्षेत्र मे भी उपयोग होगा।

हाल ही मे मुझे जर्मनी के भूतपूर्व शिक्षा मत्री बेक्कर की एक
...क पढने को मिली, जिसमे लेखक ने "सस्कृति के सकट"[6]
की चर्चा की है। इस प्रश्न की प्रस्तुति रोचक है। सारत चर्चा आम
तौर पर सस्कृति के सकट की नही, बल्कि बुर्जुआ सस्कृति के सकट की
है। बेक्कर ने बडी स्पष्टता से यह दिखाया है कि किस प्रकार सचार
के क्षेत्र मे प्रविधि की उपलब्धिया जनसमूह पर बुर्जुआ वर्ग का प्रभाव
क्षीण करती है। बेक्कर कहते है कि पहले देहात अलग-थलग इकाई
हुआ करता था, वहा धार्मिक प्रचार किया जा सकता था, वहा लोगो
से जो कहा जाता थे, वे उस पर विश्वास करते थे (बेशक, बेक्कर
यह सब प्रच्छन्न रूप से कहते हैं), मगर अब वे रेडियो पर वह सब
सुनते हैं, जो बडे शहरो मे कहा जाता है, देहात का पार्थक्य नही रहा
और किसान हर कही-सुनी बात का विश्वास नही करते। पहले व्यक्तिगत
प्रचार हो सकता था, लेकिन अब किसी एक व्यक्ति को सबोधित करते
हुए भी तुम वस्तुत समुदाय को सबोधित करते हो, जिस पर प्रभाव
डालना आसान नही, सो, बेक्कर "सस्कृति के सकट" की चर्चा करते
हैं।

औद्योगीकरण से सचार के क्षेत्र मे एकदम नये क्षितिज खुलते हैं।
वाक् सिनेमा, रेडियो – ये सब प्रविधि की नई उपलब्धिया हैं। हम

पूजीवादी देशो से इन्हे लेते हैं, लेकिन हम उनका उपयोग बिल्कुल विपरीत ध्येयो के लिए करते हैं। हम इनका उपयोग इसलिए करते हैं ताकि समाजवादी सस्कृति की उपलब्धिया व्यापकतम जनसमूह मे फैल जाये। यह इस बात का उदाहरण है कि किस प्रकार प्रविधि की उपलब्धियो का उपयोग समाजवाद के निर्माण के लिए होना है। लेकिन स्कूल के लिए हमने अपने सिनेमा और रेडियो का उपयोग करना अभी पर्याप्त हद तक नही सीखा है। केवल घर बैठे शिक्षा पानेवालो के लिए हमने रेडियो का उपयोग करना सीखा है। लेकिन यह सारा काम कही अधिक बडे पैमाने पर होना चाहिए और तब हमारा स्कूल देहात के ऐसा "भूला-बिसरा" नही होगा, जैसा कि अब प्रायः होता है। रेडियो, सिनेमा की मदद से सभी सर्वश्रेष्ठ कर्मियो को, प्रविधि के जानकारो को समाजवादी चरित्र-निर्माण और पोलीटेक्निकल शिक्षा की सेवा मे लगाया जा सकता है। हमने काम के इस पहलू की ओर अभी पर्याप्त ध्यान नही दिया है। यह कार्यभार आज हमारे सामने है।

लेनिन जब सामान्यत औद्योगीकरण की चर्चा करते थे, तो वे एक और क्षेत्र के पुनर्गठन की आवश्यकता की भी चर्चा करते थे, जिसे सामान्यत आर्थिक कार्य का क्षेत्र माना ही नही जाता है – यह है गृहस्थी का कार्य। ऐसे बडे नगरो के निर्माण के सिलसिले मे, जिनमे जीवन के सभी क्षेत्रो मे मशीनो का व्यापक उपयोग होगा, हमारे देश के जनगण का ध्यान इन प्रश्नो पर केंद्रित हुआ है। अब यह प्रश्न प्रस्तुत है कि सार्वजनिक भोजनालय बनाये जाये, मशीनो से सुसज्जित लांड्रिया खोली जाये, घर-गृहस्थी के सारे काम मे मशीनो का उपयोग हो। अब अर्हित महिला कर्मियो की माग पैदा हुई है, यह प्रश्न बहुत गंभीर हो गया है।

हम सर्वश्रेष्ठ निर्माण-कर्मियो के अनुभव से लाभ उठाना चाहिए, ताकि नगर और देहात मे अपनी सारी अर्थव्यवस्था को ढर्रे पर ला सकें। देहातो मे सामूहिक फार्म आदोलन मे भी रहन-सहन के समाजीकरण के लिए पूर्वाधार बनता है। यह बात हमारी स्कूली शिक्षा के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। पहले बच्चे घर के बहुत-से छोटे-मोटे काम करते थे, इसमे वे बहुत समय बरबाद करते थे, घर से बधे रहते थे और इनमे कोई दिलचस्पी की सर्वांगीण अवस्था थी। अब सार्विक अनिवार्य शिक्षा लागू की जा रही

है और साथ ही स्कूल के सम्मुख दूसरे परिप्रेक्ष्य, दूसरी संभावनाएं प्रशस्त हो रही है।

आधुनिक प्रविधि स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने के द्वार खोलती है। हम देखते है कि अग्रणी मिलों-कारखानों मे जो प्रविधि प्रयुक्त हो रही है, वह प्रविधि जिसे हम पश्चिम से ले रहे है, उसकी निश्चित प्रकृति है–वह शिल्प-कौशल की आवश्यकता प्राय खत्म कर देती है। लेकिन यदि हम अपने कारखानो का साज-सामान देखे, तो हम पायेंगे कि अभी भी बहुत सारा काम हाथो से होता है और इसके लिए शिल्प-अभ्यास की जरूरत है, जो बरसो के काम से आता है। बहुत से कारखानो मे उत्पादन के एक भाग का ही मशीनीकरण हुआ है, लेकिन हमारा मशीनीकरण कार्य कारखानो को नवीनतम साज-सामान से सुसज्जित करने की दिशा मे हो रहा है। साज-सामान मे यह तबदीली बहुत मानी रखती है, क्योकि मशीनीकरण के फलस्वरूप कामगर से अपेक्षित प्रशिक्षण का स्वरूप बदलता है, सर्वप्रथम काम सीखने की अवधि बदलती है।

इसकी चर्चा मार्क्स ने भी की थी कि अब बरसो तक एक काम सीखने की जरूरत नही है, बल्कि कुछ महीनो या कुछ हफ्तो मे ही श्रम की कोई एक प्रक्रिया सीखी जा सकती है।

और फिर हम यह देखते हैं कि आधुनिक प्रविधि मे भिन्न-भिन्न क्षेत्रो में एक ही तरह की मशीने लगाई जाती हैं। पहली नजर मे अत्यंत भिन्न लगनेवाले उत्पादन कार्यों मे बहुत अधिक समानता है। उत्पादन का मशीनीकरण ऐसा आधार बनाता है, जो विभिन्न उत्पादन कार्यों को एक दूसरे के निकट लाता है, विभिन्न उत्पादन प्रक्रियाओ के निकट आने से उत्पादन कार्यों मे पहले जो पार्थक्य था वह मिटता जाता है।

बेशक अब शिक्षित मजदूरो की भूमिका विशेषत बढ गई है शिक्षित मजदूर को श्रम की, आधुनिक तकनीकी श्रम की जानकारी होनी चाहिए, उसके तौर-तरीके आने चाहिए। आजकल हम देखते है कि हमारे यहा सोवियत रूस में ऐसे शिक्षित मजदूर तैयार करने की एक तरह की प्रणाली बन गई है।

लेकिन इस प्रणाली से शिक्षित मजदूर अपनी संकीर्ण विशेषज्ञता मे, केवल उस काम से जो यत्रवत उसे सिखाया गया है, जुड़ा होता है,

जबकि प्रविधि की प्रगति स्वयं इस काम को अनावश्यक बना सकती है। यों, ऐसे मजदूर को सारत: कोई कौशल प्राप्त नहीं होता और वह अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण में हाथ बटाने के लिए कुछ भी नहीं कर सकता। यही कारण है कि सारा देश और सर्वप्रथम आर्थिक कार्यों के प्रबंधक इस बात में रुचि रखते हैं कि व्यापकतम जनसमूह को उत्पादन कार्यों के ये तौर-तरीके सिखाने के साथ उन्हें विस्तृत पोलीटेक्निक दृष्टि-परिधि से लैस किया जाये, उन्हें अपने ज्ञान का, अपनी दक्षता का विविधतम परिस्थितियों में उपयोग करना सिखाया जाये।

उधर नई प्रविधि साथ ही कुशल मजदूर का स्वरूप भी बदल रही है। पहले कुशल मजदूर वह हुआ करता था, जो काफी लंबी शागिर्दी से, बरसों तक किसी कारीगर से काम सीखते हुए अपने काम में निश्चित कौशल, निश्चित अभ्यास पाता था। अक्सर वह अपने इस कौशल के अलावा और कुछ भी नहीं जानता था, मामूली-सा हिसाब-किताब नहीं कर सकता था। पुराने राजगीर को लें, वह बरसों तक अपना काम सीखता था, लेकिन ज्यामिती का उसे बुनियादी ज्ञान तक नहीं होता था, इसलिए वह अपने काम से संबंधित मामूली-सा हिसाब-किताब नहीं कर सकता था। अब हमें बिल्कुल दूसरी तरह का कौशल चाहिए, जिसमें उत्पादक श्रम वैज्ञानिक ज्ञान के साथ जुड़ा हुआ हो।

लेकिन अकुशल मजदूर को तकनीकी प्रशिक्षण देते हुए, उसे पोलीटेक्निकल दृष्टिकोण प्रदान करते हुए हम अकुशल मजदूर को कुशल मजदूर के समीप लाते हैं। बुर्जुआ वर्ग की सारी नीति ही यह रही है कि वह फूट डालकर राज करता रहा है, वह यही कोशिश करता रहा है कि कुशल मजदूरों की संख्या कहीं कम हो। यदि हम ट्रेड-यूनियनों के इतिहास को लें, तो पायेंगे कि बुर्जुआ वर्ग किस तरह कुशल मजदूरों के साथ लल्लो-चप्पो करता रहा है, किस तरह उन्हें पूंजीवाद के सेवक बनाने की कोशिश करता रहा है। हमारे लिए सोवियत देश के मेहनतकश श्रम-शक्ति मात्र नहीं हैं, वे उत्पादन के स्वामी हैं, और हमें प्रविधि की उपलब्धियों का उपयोग इसलिए करना चाहिए, ताकि हम कुशल और अकुशल श्रम के बीच भेद न्यूनतम कर दें, अकुशल मजदूर को कुशल मजदूर के समीप लायें।

बेशक, इससे उत्पादन के विकास के कहीं अधिक अवसर मिलेंगे
स बात के अवसर मिलेंगे कि हर कोई अपनी योग्यता और रुझान के
नुसार उस स्थान पर काम करे, जिसके लिए वह सर्वाधिक उपयुक्त
। यह एक बहुत बड़ी समस्या है, जिसे हल किये बिना समाजवाद के
र्माण की कल्पना नहीं की जा सकती यह वह समस्या है जो देश
ी अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण ने हमारे सामने रखी है और आगे बढ़ने
 साथ-साथ यह दिशा और भी अधिक स्पष्ट होती जायेगी।
ोलीटेक्निकल स्कूल बहुमुखी विकसित लोगों की पीढ़ी बनाने में सहायता
रेगा, इन सभी लोगों को बचपन में ही समाजवाद का निर्माता
नायेगा। हमारे यहा इस साल से सार्विक अनिवार्य शिक्षा शुरू हो रही
। समय के साथ-साथ अधिक ही अधिक आयु के लोगों पर यह लागू
ोगी और इस तरह हम पोलीटेक्निकल स्कूल के जरिए बहुमुखी विक-
सित लोग बनाना चाहते हैं, जो मेहनतकशों का ऐक्यबद्ध सगठन होंगे।

आधुनिक प्रविधि की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए हर प्रबधक
ो हमारी पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के निर्माण में सहयोग देने की
ूरी-पूरी कोशिश करनी चाहिए।

..मेरी रिपोर्ट का प्रयोजन इस बात पर जोर देना था कि मजदूर
जनसमूह, इस जनसमूह के साथ अभिन्न रूप से सबद्ध ट्रेड-यूनियनें और
बधक, जो क्षण भर को भी यह नहीं भूल सकते हैं कि उनका काम
ोवियत देश में हो रहा है कि यह पुनर्निर्माण का काम है, जिसका
वरूप स्पष्टत समाजवादी है—इन सबको सारी शिक्षा पद्धति को उसके
भी चरणों में पोलीटेक्निकल बनाने के काम में सीधे-सीधे भाग लेना
ाहिए। इस काम का महत्व अपार है।

आज हम अपने तकनीकी विद्यालयों और उच्च शिक्षा सस्थानों में
ो उन्हें उत्पादन के निकट लाने के मार्ग पर काम कर रहे हैं। हम इनमें
रंतर उत्पादन अभ्यास लागू कर रहे हैं, लेकिन यदि हम करीब से
खें, तो हमें मानना पड़ेगा कि ये केवल पहले कदम ही हैं। इस सारे
भ्यास को, व्यावहारिक कार्य को सिद्धात के साथ जोड़ते हुए सर्वाधिक
ारगर ढग से आयोजित करना चाहिए। यदि यहा मजदूर, ट्रेड-
ूनियनें और प्रबधक इस बात के लिए मिलकर काम नहीं करेंगे कि यह
्यावहारिक कार्य पोलीटेक्निकल दृष्टि से सोच-विचारकर आयोजित

क्या गया हो, यदि सकनीकी विद्यालयों और उच्च शिक्षा सस्थानों में
ी युवाजन की शिक्षा-दीक्षा का पॉलीटेक्निकल आधार नहीं बनाय
जायेगा, तो हम इस मोर्चे पर बहुत देर तक सफ्ने जाने के बाद ही उन
ागने पर पहुच पायेंगे, जो हमें समाजवादी पुनर्निर्माण पूरा करने का
अवसर प्रदान करेगा।

बेशक इस काग्रेस में प्रबधकर्मी थोड़ी सख्या में ही हैं, जबकि
शिक्षा-पद्धति को पॉलीटेक्निकल बनाने का कार्य उनके लिए जीवन हि
ना कार्य है। मजदूरों में आजकल समाजवादी प्रतियोगिता के सिलसिले
में जो विराट कार्य हो रहा है, उसके फलस्वरूप उनमें पॉलीटेक्निकल
शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ी है। मेरे ख्याल में काग्रेस में आगे के विचार-
विमर्श में हमें अधिक व्यावहारिक प्रश्नों पर गौर करना चाहिए।

समापन भाषण

साथियो, पिछले अप्रैल के अत में मास्को में जनशिक्षा पर दूसर
पार्टी सम्मेलन हुआ था। इस सम्मेलन में यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ क
कि सास्कृतिक मोर्चे पर अनेक सगठनों के लिए कधे से कधा मिलाक
काम करना आवश्यक है, कि इस काम की एकीकृत योजना होनं
आवश्यक है। मै सोचती हू कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के क्षेत्र में भी ठी
इसी तरह एक एकीकृत योजना चाहिए। आवश्यकता इस बात की
कि हर ऐसा सगठन, जिसने पोलीटेक्निकल शिक्षा के महत्व को सम
लिया है, अपने सम्मुख स्पष्टया यह प्रश्न रखे कि वह पोलीटेक्नि
शिक्षा के लिए क्या कर सकता है, और अपनी योजना को दूस
सगठनों की योजना के साथ जोड़े। हमारे यहा बहुत-से ऐसे स्वैच्छि
सार्वजनिक सगठन हैं, जो पोलीटेक्निकल शिक्षा के हित के लिए बहु
कुछ कर सकते हैं।

यहा 'जनसमूह के लिए प्रविधि'[7] सगठन के एक साथी ने भाषण
दिया। मैने भी इस सगठन में काम किया है और मै जानती हू कि तब
(उन दिनों यह सगठन बना ही बना था) यह स्कूलों की कोई साम
मदद नहीं करता था। सगठन का ध्यान . . . आयोजित

योजना हो। इसका महत्व अपार है। यहां यह कहा जाना चाहिए कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के क्षेत्र में अभी बहुत कुछ करना शेष है, अध्यापन विधि संबंधी अनेक कार्यभार हैं, अनेक सैद्धांतिक कार्यभार हैं कि कैसे किसी प्रश्न को निरूपित किया जाये, और यहां मार्क्सवादी शिक्षक समाज को[10] विशाल कार्य करना चाहिए। यह आवश्यक है कि इस समाज में पोलीटेक्निकल शिक्षा का विभाग हो, जो वैज्ञानिक संस्थानों पर आधारित हो – जिनसे नई-नई विधियों के बारे में परामर्श लिया करे। इस काम में उपलब्धियों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाना चाहिए।

व्यावहारिक कार्य में सदा अनगिनत कठिनाइयां सामने आती हैं, न केवल संगठनात्मक, बल्कि विधि संबंधी भी।

लेनिनग्राद में मुझे एक आदर्श स्कूल देखने का अवसर मिला, जहां शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। वहां कारखाने के एक मजदूर को काम के लिए बुलाया गया, लेकिन किसी ने अध्यापन विधि के सिलसिले में उसकी कोई मदद नहीं की, किसी ने उसे यह नहीं बताया कि उसे करना क्या है। उसे छात्रों को शिक्षा देने के लिए बुलाया गया, सामग्री दे दी गई और बस बात खत्म। वह छात्रों को नट-बोल्ट बनाना सिखाने लगा, जैसे कि वह स्वयं कारखाने में बनाता था।

इस विशाल कार्य का, पोलीटेक्निकल शिक्षा से जुडे अध्यापन विधि संबंधी प्रश्नों को पेश करने का दायित्व मार्क्सवादी शिक्षक समाज पर पडना चाहिए। ठीक इसी तरह हमारे यहां कई अनुसंधान संस्थान भी हैं, जो रोचक कार्य कर रहे हैं, जैसे कि स्कूली कार्य की विधियों का संस्थान।[11] इस संस्थान में स्कूलों के पाठ्यक्रमों के प्रश्नों पर, पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रश्नों पर अनेक सम्मेलन हुए हैं। लेकिन बात यहीं नहीं है, बात यह है कि कैसे इस अनुभव को ध्यान में रखा जाता है, इसे एक समग्र रूप में जोडा जाता है। यदि हम स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने की दिशा में हमारे देश में अब तक जो कुछ हुआ है उसे लें, तो हम जानते हैं कि हमारे प्रायोगिक स्कूलों में १९१८-१९१९ में और १९२० में भी रोचक कार्य किया गया था। बहुत-से स्कूलों का काम आगे चलकर पहले जितना अच्छा नहीं रह गया। बेशक, अनुभव हमारे

से साथ क्या संबंध है? स्कूलों में तो ऐसे कई स्कूल हैं न?" ज
मिला: "कोई संबंध नहीं है।" जब मैंने पूछा कि टैक्सटाइल के
में विशेष माध्यमिक शिक्षा देनेवाले विद्यालयों के साथ क्या संब
तो इसका भी यही जवाब मिला। यह स्थिति किसी काम की
है। यदि हम सर्वांगीण योजना की बात करते हैं, तो हमें अ
प्रत्येक प्रतिष्ठान, उच्च शिक्षा संस्थान, तकनीकी विद्यालय, स्क
स्कूल को – उन सबको, जो संस्कृति के क्षेत्र में हमारे पास हैं, औद्योगी
रण को, स्कूल को पोलीटेक्निकल बनाने का कार्य की सेवा
लगा देना चाहिए, तभी हम न्यूनतम अवधि में अच्छे परिणाम
सकेंगे, वरना हम यहीं देर तक मुड़ते-मुड़ते रहेंगे और व्यर्थ
शक्ति गवायेंगे।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जनसाधारण में पुस्तकों के प्रति
तकनीकी और पोलीटेक्निकल साहित्य के प्रति गहरी रुचि जाग र
है। सो आज आवश्यकता इस बात की है कि देश के दूर-दराज
इलाकों में, सर्वप्रथम सामूहिक फार्मों और देहातों में हम बड़ी संख्
में पुस्तकें पहुचायें।

अब इस प्रश्न को लें कि पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने में क
खतरा निहित है?

पहला खतरा यह है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा कुछ कार्यों का सकी
कौशल पाने तक सीमित होकर रह जायेगी, कि हमारे यहा व्यवहा
आवश्यक रूप से सिद्धांत के साथ जुड़ा नहीं होगा। यह बहुत बड
खतरा है। हमारे यहा अक्सर शिल्प शिक्षा तक सीमित होना देखा जात
है। इसके कई उदाहरण मिलते हैं।

किस्लोवोद्स्क शहर के पास एक अनाथालय है, इसे पोलीटेक्निकल
स्कूल घोषित किया गया है। तो यहा एक कमरा है, दरवाजे पर लिखा
है 'बुनाई कार्यशाला'। इस बुनाई कार्यशाला में छात्राए – इस अनाथालय
की बच्चिया खडी है – और सलाइया लेकर जुराबें बुन रही हैं, कोई
बुढ़िया बैठी उन्हें यह काम सिखा रही है। सारा काम इस तरह हो
रहा है कि यहा प्रविधि की तकनीक की बू तक नहीं आती – बाबा
आदम के जमाने में जैसे जुराबें बुननी सिखाई जाती थी, वैसे ही अब
भी यह काम सिखाया जा रहा है। या सिलाई कार्यशाला है, तो उसमें

ताकि उनका उत्पादन-कार्य के साथ अभिन्न संबंध हो। उदाहरण के लिए कच्चे माल को परखना और तैयार माल की जांच करना। हो सकता है, इसमे बहुत-सा काम स्कूल को सौंपा जा सकता हो। फिर एसेंबली वर्कशाप ले। इस सिलसिले मे अमरीका से कुछ सीखना बुरा न होगा। फोर्ड ने अपनी स्कूल वर्कशापो मे – वे पोलीटेक्निकल हैं – एसेंबली और मॉडल खाते बनाये हैं, इनसे मशीन के बारे मे समग्र जानकारी मिलती है, और स्कूल वर्कशाप में जो कुछ भी बनाया जाता है वह कही तहखाने में नही डाल दिया जाता, न ही छात्र उसे ले जाते है, वह सब कारखाने को भेजा जाता है, वहा उसका मूल्यांकन होता है और फिर कारखाने के माल के नाम से बेचा जाता है।

कहना न होगा कि हमे फोर्ड के यहा श्रम का जो संगठन है उसकी नकल करने की कोई जरूरत नही, वहा तो हर कोई अपनी चिंता करता है, हर छात्र अपने फायदे के लिए काम करता है, सामूहिक कार्य का पूर्ण अभाव है। लेकिन स्वयं जीवन की, उत्पादन की मांग को देखते हुए फोर्ड को ऐसी वर्कशापे बनवानी पडती हैं, *जिनमे श्रम वास्तव मे उत्पादक श्रम हो।*

और यह एक ऐसा विशाल कार्यभार है, जिसे शिक्षा जन-कमिसारियत अकेला पूरा करने मे असमर्थ है, जिसे वह केवल मजदूरो की मदद से, ट्रेड-यूनियनो और प्रबंधकों की मदद से पूरा कर सकता है। *इसी लिए* जब शिक्षा जन-कमिसारियत की आलोचना की जाती है कि उसने पोलीटेक्निकल शिक्षा के पाठ्यक्रम नही बनाये हैं, तो इस आलोचना मे मैं काफी उदासीन ही रहती हू, क्योंकि दफ्तर के कमरे में बैठकर ऐसी कार्यशालाओ, वर्कशापो की योजना बनाना, जो अपने *रोम-रोम से उत्पादन के साथ जुडी होनी चाहिए, निरर्थक कार्य होगा।* लेकिन अब हम ऐसे क्षण पर आ रहे हैं, जबकि मजदूर इसमे गंभीरतापूर्वक रुचि लेने लगे हैं। मैं सोचती हू कि कल प्रबंधक भी इसमे दिलचस्पी लेने लगेंगे और शिक्षा जन-कमिसारियत को मजदूरो और ट्रेड-यूनियनो से, *कारखानों और सामूहिक फार्मों से कुछ सीखना होगा, ताकि वह सही* पोलीटेक्निकल पाठ्यक्रम बनाने मे मदद करना सीख पाये।

हमे बच्चे की शक्ति का पता होना चाहिए। अगर पोलीटेक्निकल स्कूल बनाने के अपने जोश मे बच्चे की शक्ति को ध्यान मे *नही रखे*

एक बात है, लेकिन आधुनिक प्रविधि जिस तनावपूर्ण काम की अपेक्षा करती है, वह आये दिन करना बिल्कुल दूसरी बात। यदि आप बच्चे को ऐसे कन्वेयर के पास खड़ा कर देंगे, जहा दम लेने की फ़ुरसत नहीं होती, तो उसकी शक्ति की जड खोद देंगे।

लेकिन इसका मतलब यह कतई नही है कि हम स्कूल-पूर्व आयु तक मे पोलीटेक्निकल शिक्षा के ध्येय को नज़रदाज़ करते हैं। हमें रुचि जगानी चाहिए, बिल्कुल छोटी उम्र से ही बच्चो को काम करना, मिल-जुलकर परिश्रम करना सिखाना चाहिए। श्रम-सगठन के प्रश्न में ही बहुत हद तक सामूहिक श्रम का प्रश्न भी आता है, क्योंकि हम मात्र श्रम करना, मेहनती बनना नही सिखाते हैं, बल्कि सामूहिक ढग से, योजनाबद्ध और सचेतन ढग से श्रम करना सिखाते हैं। आप देख रहे हैं कि अभी हमारे सम्मुख कैसे विराट कार्यभार हैं। मेरे विचार मे आज सारा वातावरण पोलीटेक्निकल शिक्षा मे जो रुचि जगा रहा है, वह इस बात का साक्षी है कि यह काम सही दिशा मे बढ़ रहा है।

१६३०

तरह इन प्रक्रमों में एकता लाती है, इन्हें निरंतर परिवर्तित करती है। मार्क्स लिखते हैं "आधुनिक उद्योग मशीनों, रासायनिक क्रियाओं तथा अन्य तरीकों के द्वारा न केवल उत्पादन के प्राविधिक आधार में, बल्कि मजदूर के कार्यों और श्रम-प्रक्रिया के सामाजिक संयोजनों में भी लगातार तब्दीलियां कर रहा है। साथ ही वह इस तरह समाज में पाये जानेवाले श्रम-विभाजन में भी क्रांति पैदा कर देता है और पूंजी की राशियों को तथा मजदूरों के समूहों को उत्पादन की एक शाखा से दूसरी शाखा में निरंतर स्थानान्तरित करता रहता है। लेकिन इसलिए आधुनिक उद्योग खुद अपने स्वरूप के कारण श्रम के निरंतर परिवर्तन, काम के रूप में लगातर तबदीली और मजदूरों में सार्विक गतिशीलता को जरूरी बना देता है।"[2] आगे वे कहते हैं: "आधुनिक उद्योग जिन विपत्तियों को ढाता है, उनके द्वारा वह सबसे यह मनवा लेता है कि काम में बराबर परिवर्तन होते रहना और इसलिए मजदूर में विविध प्रकार के काम करने की योग्यता का होना तथा इस कारण उसकी विभिन्न प्रकार की क्षमताओं का अधिक से अधिक विकास होना उत्पादन का एक मौलिक नियम है। उत्पादन की प्रणाली को इस नियम के सामान्य कार्य के अनुकूल बनाने का सवाल समाज की ज़िंदगी और मौत का सवाल बन जाता है।"[3] थोड़ी आगे चलकर मार्क्स इस बात की आवश्यकता की चर्चा करते है कि इनसान को "एक पूर्णतया विकसित ऐसे व्यक्ति में बदल दे, जो अनेक प्रकार का श्रम करने की योग्यता रखता हो, जो उत्पादन में होनेवाले किसी भी परिवर्तन के लिए तैयार हो . ।"[4]

'गोथा कार्यक्रम की आलोचना' में कहा गया है कि विभिन्न आयु के अनुसार कार्य अवधि का सख्ती से नियमन करते हुए और बच्चों की रक्षा के उद्देश्य दूसरी सावधानियां बरतते हुए अल्पायु में ही शिक्षा के साथ उत्पादक श्रम को जोड़ा जाना आधुनिक समाज के कायाकल्प का एक प्रबल साधन है।

'पूंजी' में मार्क्स ने भविष्य की शिक्षा-दीक्षा की चर्चा की है, जिसमें एक निश्चित आयु के ऊपर के सभी बच्चों के लिए उत्पादक श्रम-शिक्षा और जिम्नास्टिक के साथ जुड़ा होगा और यह न केवल . . . "उत्पादन की कार्य-क्षमता को बढ़ाने का एक तरीका है",

बहुत महत्व रखते हैं। शारीरिक दृष्टि से हृष्ट-पुष्ट पीढ़ी विकसित करने के ध्येय के लिए ही यह आवश्यक है कि बच्चों के सामूहिक श्रम के विचार को क्रियान्वित करते समय आयु के अनुसार श्रम की मात्रा का सख्ती से पालन किया जाये, शारीरिक दृष्टि से दुर्बल बच्चो का विशेष खयाल करना चाहिए, इस बात का खास ध्यान रखना चाहिए कि बच्चो को ऐसी थकावट न होने पाये, जो उनके स्वास्थ्य और सफल कार्य के लिए हानिकर होती है।

पोलीटेक्निकल शिक्षा के मामले मे अभी से दक्षिणपंथी भुकाव भी देखने मे आने लगा है। यह इस बात मे व्यक्त होता है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के महत्व को कम करके आका जाता है, इस गभीरतम समस्या के प्रति निष्क्रिय रुख अपनाया जाता है। उधर वामपंथी भुकाव भी है, जो जनसमूह की नजरो मे पोलीटेक्निकल शिक्षा को बदनाम करता है, क्योकि इसमें बाल श्रम-रक्षा कानूनो को नजरदाज किया जाता है और बाल-श्रम का शिक्षा तथा शारीरिक विकास के साथ पर्याप्त सबध नही जोड़ा जाता है।

पोलीटेक्निकल शिक्षा के सदर्भ मे सातवी तक के स्कूलो के पाठ्यक्रम काफी बदले जाने चाहिए। छोटी कक्षाओं मे ही व्यक्तिगत और सामाजिक हाइजीन को स्कूल मे उचित स्थान मिलना चाहिए, जिम्नास्टिक को स्कूल के प्रतिदिन के कार्य का अभिन्न अग होना चाहिए। बेशक बच्चों और किशोरो के लिए जिम्नास्टिक आम व्यायाम से भिन्न होनी चाहिए, इसमें खेलकूद के, दिशान्यास और श्रम सबधी तत्वों को महत्वपूर्ण भूमिका अदा करनी चाहिए।

चित्रकारी, रेखाकन, खिलौने, मॉडल आदि बनाने का, जिनसे विचारात्मक चिंतन और दृश्य-स्मृति पुष्ट होती है तथा जिनका पोलीटेक्निकल शिक्षा मे अपार महत्व है, स्कूल मे पहले से भिन्न स्थान होना चाहिए।

सभी कक्षाओ मे श्रम-सगठन के प्रश्नों की सैद्धान्तिक और व्यावहारिक शिक्षा की ओर विशेष ध्यान दिया जाना चाहिए। अर्थव्यवस्था के पुनर्निर्माण मे सामूहिक श्रम के सगठन का प्रश्न अद्वितीय महत्व रखता है और यह अकल्पनीय है कि हमारी सोवियत श्रम-शिक्षा पद्धति मे इस प्रश्न की ओर ध्यान न दिया जाये। यह प्रश्न श्रम के नियमन,

नियोजन और सगठन के प्रश्नो के साथ घनिष्ठतम रूप से सबद्ध होना चाहिए।

इस नई ज्ञान-शाखा – श्रम-सगठन के प्रश्नो – का अध्यापन स्कूल और स्कूलेतर जीवन की सारी दिनचर्या निर्धारित करने के साथ घनिष्ठतम रूप से जुडा होना चाहिए और इससे बच्चो द्वारा "स्वप्रबध" के, यानी अपने कार्यों के प्रबध के प्रश्नो मे आमूल परिवर्तन आना चाहिए।

मार्क्स ने यह लिखा था कि मज़दूर वर्ग द्वारा राजनीतिक प्रभुत्व अवश्यभावी रूप से पाये जाने के साथ स्कूल मे टेक्नोलोजी के सैद्धातिक और व्यावहारिक अध्यापन को भी स्थान प्राप्त होगा। हमारे स्कूलो मे अभी इस अध्यापन को उचित स्थान नही मिला है। अभी तो वैज्ञानिक टेक्नोलोजी के कुछ तत्वो का ही अध्ययन होता है, क्योकि वे भौतिकी और रसायन मे शामिल हैं। लेकिन वैज्ञानिक प्रविधि की यह अपेक्षा है कि भौतिकी और रसायन के आम पाठ्यक्रमो की अपेक्षा इनका कही अधिक हद तक उत्पादन के साथ घनिष्ठ और सुसगत सबध जोडकर अध्ययन किया जाये। इस प्रश्न का विवेचन होना चाहिए।

मार्क्स ने कृषि-विज्ञान की अनिवार्य शिक्षा की भी चर्चा की थी। यह देखते हुए कि पुनर्निर्माण काल मे नगर और देहात के उत्पादन कार्यों का एक दूसरे के निकट आना लाक्षणिक है, सभी स्कूलो मे, फैक्टरी-कारखाना स्कूलो मे भी कृषि-विज्ञान की सैद्धातिक और व्यावहारिक शिक्षा एकदम अनिवार्य हो जाती है।

वैज्ञानिक टेक्नोलोजी और कृषि-विज्ञान का अध्ययन लागू किया जाना पोलीटेक्निकल स्कूल मे श्रम का स्वरूप निर्धारित करता है। हमे स्कूल की कार्यशालाओ का स्वरूप शिल्पीय और सकीर्ण अभ्यासात्मक नही होने देना चाहिए, इन्हे सामग्रियो और उनके ससाधन के रूपो के अध्ययन की श्रम-प्रयोगशालाए बनाना चाहिए।

साथ ही स्कूल की कार्यशालाओं को स्कूल मे और उसके बाहर बच्चो का उत्पादन श्रम सगठित करना चाहिए।

प्रत्येक कक्षा के बच्चो के उत्पादक श्रम का अपना स्वरूप होना चाहिए, उसमे बच्चो की आयु-विशेषताओ और जीवन-अनुभव को ध्यान मे रखा जाना चाहिए और उसका लेखा-जोखा आसान होना चाहिए।

मुख्य समस्या यह है कि उत्पादक श्रम को शैक्षिक श्रम के साथ रोग श्रम को पोलीटेक्निकल श्रम के साथ कैसे जोड़ा जाये। यह प्रश्न व्यावहारिक कदमों की एक शृंखला तैयार करके हल किया जा सकता है।

जिस प्रतिष्ठान के साथ स्कूल सलग्न हो उसका स्कूल में विशेष अध्ययन किया जाना चाहिए। इस प्रतिष्ठान को इसमें हर तरह की सहायता देनी चाहिए। लेकिन फैक्टरी-कारखाना सातवर्षीय स्कूल में यह अध्ययन व्यावसायिक प्रशिक्षण में, इस प्रतिष्ठान के लिए इन्हें तैयार करने के काम में नहीं बदल जाना चाहिए, बल्कि यह हर तरह के उत्पादन कार्य के अधिक गहन अध्ययन के लिए प्रस्थान बिंदु होना चाहिए। व्यावसायिक शिक्षा में अभ्यास के जो तत्व विशाल भूमिका अदा करते हैं, उनकी भूमिका पोलीटेक्निकल शिक्षा में सहायक ही होनी चाहिए।

प्रतिष्ठान के कार्य के अध्ययन के साथ-साथ दूसरी तरह के कार्यों का अध्ययन भी आवश्यक है, जैसे कि ग्रामीण तथा मजदूर सवाद दाता, अध्यापक, सहकारी कर्मी, सांख्यिकी कर्मी, इत्यादि के कार्य का। पोलीटेक्निकल स्कूल के लिए मानसिक और शारीरिक श्रम का सयोजन आवश्यक है।

इससे भी अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि औद्योगिक श्रम कृषि श्रम के किन्ही रूपों–बागबानी, मुर्गीपालन, सन उगाना, आदि–के साथ सयोजित हो।

ऐसे विभिन्न कार्यकलापों के सयोजन के फलस्वरूप ही सच्चे अर्थों में बहुमुखी विकसित लोग बन पायेंगे।

व्यवसाय का सही चुनाव यह सभव बनाता है कि हरेक की शक्ति का समुचित उपयोग हो। इसलिए स्कूल को इस कार्य में सहायता का प्रबध करना चाहिए, छात्रों के व्यवसायों के चुनाव के मामले में परामर्श देना चाहिए।

बच्चे की योग्यताओं को ध्यान में रखना और उनका समन्वित विकास करना, किन्ही बच्चों की अभिरुचियों और विकास में एकतरफापन शिक्षा द्वारा दूर करना, विशेष प्रतिभा का ध्यान रखना और इस प्रतिभा से सबधित आवश्यकताओं की पूर्ति करना–यही बच्चों और किशोरों

सिद्धांत और व्यवहार[1]

ज़ारशाही रूस के स्कूलों में नियमतः सिद्धांत व्यवहार से अल[ग] होता था। व्यवहार संबंधी कुछ मोटे-मोटे परामर्श ही सरसरी तौर प[र] दिये जाते थे। व्यावहारिक पाठों का ध्येय किन्हीं सिद्धांतों पर प्रका[श] डालना होता था। इसका परिणाम यह था कि शिक्षा जीवन से कटी हुई थी, अमूर्त थी। सोवियत स्कूलों ने अपने अस्तित्व के पहले दिन से ही सिद्धांत को व्यावहारिक कार्य संबंधी निर्देशों का रूप देने की कोशिश की है। लेकिन बहुत थोड़ी हद तक ही, जहां तक कि स्कूल में श्रम-शिक्षा और समाजोपयोगी श्रम, आदि को स्थान दिया जा सका, वहां तक ही इस काम में सफलता मिली है। केवल कुछ स्कूलों में ही सिद्धांत का व्यवहार से संयोजन किया गया है। यह संयोजन बड़ी कठिनाई से हुआ। गृहयुद्ध और आर्थिक तबाहहाली हमारी श्रमाधारित पद्धति के विकास में बाधक थे। यह स्पष्ट था कि हमें पुराने तरीकों को बदलना है, अध्यापन को अधिक सारगर्भित बनाना है। स्कूल के कार्यों के तरीकों और [illegible] के बारे में बहुत कुछ कहा गया, लेकिन आम स्कूलों के काम में फिर भी भारी कमियां बनी रहीं। उधर जीवन की यह मांग थी कि स्कूल में छात्रों को काफी अधिक ज्ञान दिया जाये। इनके पाठ्यक्रम बढ़ते ही जा रहे थे। यह पता चलता कि इसके बिना भी काम नहीं चल सकता और इसके बिना भी नहीं तथा इसके बिना भी नहीं। छात्रों के मस्तिष्क में असंख्य जानकारी ठूंसी जाने लगी। लेकिन जीवन में व्यवहार से अलग-थलग यह ज्ञान [illegible] ही [illegible] के [illegible] [illegible] था। इसलिए बहुत से शिक्षक कुछ ठोस काम सिखाने, [illegible], अभ्यास देने पर जोर देते थे। लेकिन केवल अभ्यास की [illegible]

अभ्यास में सारी शिक्षा निस्सार होती थी।

अब तेज गति से हो रहे औद्योगीकरण और कृषि के मशीनीकरण ने पोलीटेक्निकल शिक्षा को क्रियान्वित करने के अवसर प्रदान किये हैं। स्कूलों को किन्हीं प्रतिष्ठानों के साथ संलग्न करने के फलस्वरूप विराट परिवर्तन आये हैं। व्यवहार स्कूली जीवन का अंग बनने लगा है। इस बात को देखते हुए ही सिद्धांत और व्यवहार के संयोजन का प्रश्न अपने पूरे विराट स्वरूप में हमारे सामने उठ खड़ा हुआ है। पुराने जमाने के, क्रांतिपूर्व के स्कूल में, जहां व्यवहार की भूमिका निकृष्ट थी सिद्धांत का "चित्रण" करना मात्र ही उसका ध्येय था वहीं आज हमारे सामने दूसरा खतरा है कि सिद्धांत के प्रति हमारा रुख अत्यधिक उपयोगितावादी हो जायेगा। सिद्धांत में केवल वही कुछ लिया जायेगा, जिसकी आज के व्यवहार के लिए, आज के पैमाने के लिए आवश्यकता होगी। अमरीकी स्कूल इस दिशा में बढ़ रहे हैं। वहां अधि-सख्य स्कूलों में सिद्धांत व्यवहार पर प्रकाश नहीं डालता अपितु उसका आनुषंगिक है, इसलिए शिक्षा में अधिकांश मामलों में छात्रों का क्षितिज व्यापक नहीं होता, वे परिप्रेक्ष्य नहीं देख पाते, उनका ध्यान चालू कामों पर ही लगा रहता है। एक जमाने में रूसी बुद्धिजीवियों के सम्मुख भी यह प्रश्न उपस्थित था और हमारे कथा-साहित्य में इसे स्थान मिला था। तुर्गनेव[2] ने रूदिन के रूप में ऐसे बौद्धिक जीव का बिंब प्रस्तुत किया, जो यह नहीं देख पाता कि इस क्षण क्या करना चाहिए, वह छोटे-छोटे कामों को उपेक्षा की दृष्टि से देखता है, नेक्रासोव[3] के शब्दों में वह "महान कार्य खोजता है", लेकिन "जो सामने है उसे नहीं देखता, उसे अनजाने ही बिगाड़ता है"। रूदिन का उलट है मोलोमिन। तुर्गनेव का यह पात्र एकदम व्यावहारिक दृष्टिकोणवाला है, पूरी तरह "छोटे-छोटे कामों" में ही लीन है।

यदि हम पार्टी के कार्य पर नजर डालें तो हम देखेंगे कि उसने आरंभ से ही सिद्धांत और व्यवहार के परस्पर संबंध के प्रश्न को हल कर लिया था। पार्टी निरंतर क्रांतिकारी सिद्धांत के निरूपण पर कार्य करती रही थी, क्रमश: उसे गहन बनाती और जीवन अनुभव से समृद्ध करती रही थी। साथ ही उसने आरंभ से ही क्रांतिकारी व्यवहार के विकास का ध्येय रखा है। पार्टी के लिए कभी भी कोई भी कार्य "तुच्छ"

नही रहा। वह मजदूरो को उद्वेलित करनेवाले हर प्रश्न पर ध्यान देती थी, उस पर क्रातिकारी मार्क्सवादी सिद्धांत का प्रकाश डालती थी, जिससे कार्यनीति निर्धारित होती थी, आवश्यक परिप्रेक्ष्य और कार्रवाई का सही परिमाण पता चलता था। उदाहरणत मजदूरो ने यह उठाया कि प्रबधक सारा दिन उन्हे चाय के लिए गरम पानी नहीं दे पार्टी ने इस प्रश्न को मजदूरो के शोषण के प्रश्न के साथ, वर्ग-स के साथ, निरकुश शासन के विरुद्ध सघर्ष के साथ जोड़ा। हर छ से छोटी बात पर सैद्धातिक प्रकाश डाला। सिद्धात और व्यवहार एक गाठ बाधने की योग्यता से पार्टी को असाधारण बल मिला।

स्कूली शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाना उदीयमान पीढ़ी को आधु प्रविधि से सुसज्जित करने का रास्ता है। पोलीटेक्निकल शिक्षा के छात्रो को तत्सबधी सिद्धात से लैस करना ज़रूरी है, जो उनके व्यावहा कार्य पर प्रकाश डाले। आज पोलीटेक्निकल शिक्षा दोराहे पर है . एक ओर, उसका स्थान मात्र श्रम-अभ्यास ले सकता है, दू ओर, वह आम वाक्यो तक सीमित हो सकती है, जीवन-व्यवहार उसका सबंध टूट सकता है। हमे सही मार्गदिशा निर्धारित करने लिए भगीरथ प्रयत्न करने चाहिए।

उल्लेखनीय है कि ये सारे प्रश्न पोलीटेक्निकल शिक्षा के सम्मुख ही नही, सामान्यत सारे विज्ञान के सम्मुख उपस्थित हैं। .

पोलीटेक्निकल स्कूल का पाठ्यक्रम, इस स्कूल का सारा कार्य उत्पादन की ओर उन्मुख होना चाहिए, इसे अधिक ऊचे वैज्ञानिक स्तर पर उठाना चाहिए। स्कूल के पाठ्यक्रम और उसके व्यवहार को उनके घनिष्ठतम सयोजन की दृष्टि से परिष्कृत करना चाहिए।

सोवियत देश की परिस्थितिया पोलीटेक्निकल शिक्षा के लिए अत्यत अनुकूल हैं, निजी सपत्ति, आदि की बाधाए हमारे रास्ते मे नहीं हैं।

पूजीवादी देशो के सारे अनुभव को ध्यान मे रखते हुए हम उसे समाधित करेंगे और अपने रास्ते पर, पोलीटेक्निकल स्कूल के, मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के विचारो के अनुसार शिक्षा पद्धति के निर्माण के रास्ते पर बढ़ेंगे।

१९३१

साथ-साथ तत्संबंधी उत्पादन शाखा के, उसके इतिहास के अध्ययन पृष्ठभूमि मे कारखाने का अध्ययन होना चाहिए।

आजकल कारखानो का इतिहास लिखने का काम हो रहा है। इतिहास स्कूलो मे पढाया जाना चाहिए, जहा इतिहास अभी नही ा जा रहा है, वहा बडी (आठवी, नवी) कक्षाओ के छात्रो इसमे भाग लेना चाहिए।

हमारे यहा कभी-कभी कारखाने के अध्ययन को सतही ढग से समझा जाता है। इसका अर्थ मशीनो का अध्ययन ही लगाया जाता है। लेकिन **कारखाने में काम कर रही श्रम शक्ति का, विभिन्न पेशो का,** न केवल अधिकारियो, बल्कि सभी कर्मियो के **विशेषीकरण का अध्ययन भी कम मानी नहीं रखता है।** यह अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है, क्योकि इससे व्यवसायो की निश्चित समझ पैदा होती है, जो कि किशोरो के लिए खास तौर से महत्वपूर्ण है। मनुष्य उसी काम मे सबसे अधिक उद्यम दिखाता है, जो उसकी शक्ति और पसद के सबसे अधिक अनुकूल होता है। इस काम मे वह उत्पादन के लिए भी अधिकतम प्रयास करता है। व्यवसाय का सही चुनाव बहुत मानी रखता है। अतत **प्रतिष्ठान में श्रम-संगठन का** भी अध्ययन किया जाना चाहिए। श्रम-सगठन के प्रश्न समाजवाद के निर्माण की दृष्टि से सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न हैं। और **हमारे सोवियत स्कूलो के**, जिन्हे वर्गहीन समाजवादी समाज के सचेत और सक्रिय निर्माता तैयार करने है, **छात्रो को समाजवादी श्रम-संगठन के मूलभूत सिद्धांतों के ज्ञान को आत्मसात करना चाहिए।**

आठवी-नौवी के पाठ्यक्रमो पर विचार करते हुए राजकीय वैज्ञानिक परिषद के स्कूल प्रभाग ने यह निर्णय किया इनमे एक नया विषय शामिल किया जाये—'समाजवाद के निर्माण के मूलभूत सिद्धात'। लेनिन का कहना था कि पाठ्यक्रम ऐसे होने चाहिए ताकि वे प्रत्येक ज्ञान शाखा का निश्चित परिधि मे ज्ञान दे, लेकिन पुराने स्कूल के समर्थक ही ऐसी बाते कर सकते है कि यह ज्ञान-परिधि वही होनी चाहिए जो पुराने स्कूलो मे थी। ऐसा कहना लेनिन पर लाछन लगाना ही होगा। पोलीटेक्निकल स्कूल के पाठ्यक्रमो मे ज्ञान-परिधि स्पष्टत निर्धारित होनी चाहिए, लेकिन यह भूदामवादी या पूजीवादी नहीं,

वैज्ञानिक कम्युनिस्ट दृष्टि से निर्धारित ज्ञान-परिधि होनी चाहिए। लेनिन सदा इस आवश्यकता पर बल देते थे कि सिद्धांत और व्यवहार का घनिष्ठतम संयोजन होना चाहिए, कि "पुराने पूंजीवादी समाज से हमें एक सबसे बड़ी बुराई और मुसीबत जो धरोहर में मिली है, वह यह है कि पुस्तक का यथार्थ जीवन के साथ कोई नाता नहीं है।" सो, अब जबकि पूरे जोरों से समाजवाद का निर्माण हो रहा है, क्या यह सही होगा कि स्कूल महज इसलिए इस निर्माण पर चुप्पी साधे रहें और सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात—संगठन के प्रश्नों—के बारे में एक शब्द भी न कहें, क्योंकि इसके लिए दूसरे विषयों के घंटों की संख्या कुछ कम हो जायेगी और उनमें से कुछ गौण जानकारी हटानी होगी, उनके अध्यापन को बहुत युक्तिसंगत बनाना होगा। राजकीय विज्ञान परिषद का स्कूल प्रभाग यह मानता है कि 'समाजवाद के निर्माण के आधारभूत सिद्धांतों' में निम्न प्रकरण शामिल होने चाहिए: व्यक्तिगत मानसिक और शारीरिक श्रम का युक्तिसंगत संगठन, व्यक्तिगत कार्य का नियोजन, अपने काम का लेखा-जोखा रखना, छोटे-से समुदाय-टोली के कार्य का विवेकसंगत नियोजन, टोली में श्रम-विभाजन, परस्पर सहायता, परस्पर नियंत्रण, काम का लेखा-जोखा; प्रतिष्ठान में श्रम-संगठन, वैज्ञानिक श्रम-संगठन, नियोजन, श्रम विभाजन, उत्पादन के दौरान नियंत्रण, उत्पादन सभाएं, कारखाना प्रबंधक—ट्रेड-यूनियन—पार्टी समिति के "तिकोन" में शामिल संगठनों के कार्य का अंतर्, उत्पादन की शाखाओं के नियोजन के मूलभूत सिद्धांत; किसान की निजी खेती, जमींदार की खेती और पूंजीवादी खेती में श्रम-संगठन, आधुनिक राजकीय फार्मों में श्रम-संगठन, सामूहिक फार्मों में श्रम-संगठन के मूलभूत सिद्धांत; फिर जिले की उत्पादक शक्तियों का, उसकी अर्थव्यवस्था का, आबादी के श्रम-संगठन, उसकी श्रम प्रवृत्तियों और सक्रियता के इतिहास का, जिले के चारों ओर के इलाके का और उसके संबंधों का, जिले के पैमाने पर नियोजन का और अंततः सारे देश के आर्थिक जीवन के नियोजन का अध्ययन किया जाना चाहिए। इसमें श्रम संबंधी आवश्यक तौर-तरीकों पर विचार, आबादी के सांस्कृतिक स्तर पर, उसे समाजवाद के निर्माण में, देश के राजनीतिक जीवन में, सोवियतों के कार्य में प्रवृत्त करने के तरीकों पर गौर भी शामिल

हु होगा। इसमे राज्य व्यवस्था के रूपो का अध्ययन, सोवियत सत्ता के
मार का स्पष्टीकरण भी शामिल होगा। इस पाठ्यक्रम मे अर्थव्यवस्था,
राजनीति, संस्कृति और दैनंदिन जीवन का संबंध दिखाया जा सकता
है जीवन मे पुराने अवशेषो और नूतन के अंकुरो के बीच भेद करना,
छात्रो को अपना सामाजिक कार्य समझना और उसे युक्तिसंगत बनाना
सिखाया जा सकता है।

यह प्रश्न नया है। इस पर व्यापक विचार-विमर्श होना चाहिए।
हम इसे मार्क्सवादी शिक्षक समाज मे विचारार्थ रखेंगे और यह आवश्यक
है कि कोमसोमोल इस प्रश्न के विवेचन मे सक्रिय भाग ले।

२३ मई को पायोनियर संगठन की स्थापना के दस वर्ष पूरे हो
रहे हैं। इस संगठन ने उदीयमान पीढ़ी को बहुत कुछ दिया है। इसने
सामूहिक कार्य करने की शिक्षा दी है, आत्मानुशासन विकसित किया
है, कम्युनिस्ट उत्साह जगाया है। इस कार्य के महत्व का अवमूल्यांकन
नहीं किया जा सकता। आज दसियो लाख किशोर-किशोरिया इस संगठन
के सदस्य हैं।

अब कोमसोमोल के सम्मुख यह कार्यभार है कि वह आगामी पांच
वर्षों के लिए पायोनियर संगठन का कार्य नियोजित करे।

अब सारे देश के सम्मुख आधुनिक प्रविधि की सारी उपलब्धियो
का, आधुनिक विज्ञान की सारी उपलब्धियो का उपयोग करने का
कार्यभार है। युवाजन को इस काम मे जुट जाना चाहिए, ज्ञान के
लिए इस संघर्ष में पायोनियरो को प्रवृत्त करना नितांत आवश्यक है।
केंद्रीय समिति के निर्णयों में यह बात कही गई है। पोलीटेक्निकल
स्कूल ज्ञान पर अधिकार पाने का पथ है। वर्तमान चरण मे सच्ची
पोलीटेक्निकल शिक्षा के लिए संघर्ष ज्ञान पर, प्रविधि पर अधिकार
पाने का संघर्ष है। फैक्टरी-कारखाना शिक्षण के लिए, किसान युवाजन
स्कूल के लिए संघर्ष करते हुए कोमसोमोल शिक्षा को उत्पादक श्रम
के साथ जोड़ने के लिए संघर्ष कर रहा था। अब समग्र पोलीटेक्निकल
शिक्षा-पद्धति के लिए संघर्ष करना है। इस शिक्षा-पद्धति में ही कोमसोमोल
सदस्यो की नई पीढ़ी शिक्षित हो रही है। कोमसोमोल सच्ची
पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रसार के लिए बहुत कुछ कर सकता
है। कोमसोमोल को पायोनियरो को इस शिक्षा के लिए संघर्ष करना

सिखाना चाहिए। हर स्कूल मे, हर कक्षा मे पायोनियरो को एक ऐक्यबद्ध संगठन बनना चाहिए, ज्ञान के लिए संघर्ष मे हरावल दस्ता होना चाहिए। उन्हे शेष सारे बाल-समूह का नेतृत्व करना चाहिए। पायोनियरों को स्कूल मे ज्ञान पाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। हर पायोनियर को यह आभास होना चाहिए कि वह ज्ञान के लिए, सचेतन अनुशासन के लिए संघर्षरत इस संगठन का सदस्य है, उसे इस संघर्ष में सक्रिय भाग लेना चाहिए। लेकिन पायोनियरों को ज्ञान के लिए संघर्ष केवल स्कूल मे ही नही करना चाहिए। सारे पायोनियर संगठन को इस प्रश्न की ओर इस अर्थ मे नही ध्यान देना चाहिए कि हर पायोनियर खाली समय मे भी किताब लेकर बैठा रहे, बल्कि इस अर्थ में कि उसे बच्चे के स्कूलेतर जीवन को इस तरह आयोजित करना चाहिए कि बच्चे विश्राम करते हुए भी अपने जीवन को अधिक रोचक, सारगर्भित बनाना सीखे, जीवन की गहराई मे जाना सीखे, जीवन से, बडो से यह सीखे कि कैसे अपने ज्ञान का जीवन मे उपयोग करने के हर अवसर का लाभ उठाया जाये, ताकि जीवन को सुधारा जा सके। पायोनियर ज्ञान पाने के लिए सक्रिय कार्य करता है, वह इस ज्ञान का जीवन मे उपयोग करने के लिए भी सक्रिय कार्य करता है। वह मात्र एक "अच्छा छात्र" नही है, जो कक्षा मे हिलने-डुलने भी डरता है और अपने पाठ अच्छी तरह सीखता है। पायोनियर ऐसा छात्र है जो उसे सिखाई जानेवाली बातो पर मनन करता है, शिक्षा मे रुचि लेता है, इस बात का ध्यान रखता है कि कक्षा मे सभी के लिए शिक्षा पाने का अच्छा वातावरण हो, यह वह छात्र है जो स्कूल मे भी और स्कूल के बाहर भी संयम रखना जानता है।

ऐसे कार्यभारो के साथ हमारा पायोनियर संगठन आगामी पन्द्रहवें वर्ष मे पदार्पण कर रहा है। उसे अपने उदाहरण से बच्चों को कम्युनिस्ट बनना है। हमारी उदीयमान पीढी शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के कार्य करना सीखेगी, मजदूरों के लेनिन के ध्येय की पूर्ति के लिए सदा तत्पर रहेगी।

सभी पायोनियरों का हार्दिक अभिवादन!

१९३२

बीते चरण पर दृष्टिपात

लेनिन ने सदा लघु किसान फार्म में, बड़े पैमाने की पूंजीवादी में, घरेलू उद्योग में, शिल्पों में, छोटी-मोटी वर्कशापों में, फैक्टरियों कारखानों में बाल-श्रम का बड़े ध्यान से अध्ययन किया। १८६६ लेनिन ने पार्टी के कार्यक्रम का जो मसौदा तैयार किया था उसमें १४ साल तक के बच्चों और किशोरों के श्रम पर प्रतिबंध लगाने की मांग करनेवाला मुद्दा भी रखा था। पार्टी की दूसरी कांग्रेस में स्वीकृत कार्यक्रम में १६ वर्ष की आयु तक यह प्रतिबंध लगाने की मांग की गई थी, क्योंकि बच्चों के स्वास्थ्य की रक्षा की आवश्यकता के अलावा बच्चों की शिक्षा के मार्ग में प्रमुख बाधा – घरेलू और उजरती श्रम – दूर करना भी आवश्यक था। बेशक इसका अर्थ यह नहीं था कि १४ से १६ वर्ष के बच्चों को काम नहीं करना चाहिए।

मार्क्स का अध्ययन करते हुए लेनिन ने इस बात की ओर विशेष ध्यान दिया कि मार्क्स ने 'पूंजी' के पहले खंड में बच्चों और किशोरों की शिक्षा को उनके उत्पादक श्रम के साथ संयोजन के बारे में कहा है। १८६७ में लिखे मार्क्सवादी [illegible] के [illegible] में लेनिन ने मार्क्स के [illegible] स्पष्ट उद्धृत किये और यह इंगित किया कि श्रम सभी किशोरों के लिए अनिवार्य होना चाहिए और उसका शिक्षा के साथ संयोजन [illegible] होना चाहिए। [illegible]

[illegible]

सिखाना चाहिए। हर स्कूल में, हर कक्षा में पायोनियरों को एक [illegible]
संगठन बनाना चाहिए. ज्ञान के लिए संघर्ष में हरावल दस्ता होना चाहि[illegible]
उन्हें बीच सारे छात्र-समूह का नेतृत्व करना चाहिए। पायोनियरों [illegible]
स्कूल में ज्ञान पाने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। हर पायोनि[illegible]
को यह आभास होना चाहिए कि वह ज्ञान के लिए, सचेतन अनुशा[illegible]
के लिए संघर्षरत इस संगठन का सदस्य है, उसे इस संघर्ष में सक्रि[illegible]
भाग लेना चाहिए। लेकिन पायोनियरों को ज्ञान के लिए संघर्ष केवल
स्कूल में ही नहीं करना चाहिए। सारे पायोनियर संगठन को इस प्रश्न
की ओर इस अर्थ में नहीं ध्यान देना चाहिए कि हर पायोनियर खाली
समय में भी किताब लेकर बैठा रहे, बल्कि इस अर्थ में कि उसे बच्चों
के स्कूलेतर जीवन को इस तरह आयोजित करना चाहिए कि बच्चे
विश्राम करते हुए भी अपने जीवन को अधिक रोचक, सारगर्भित बनाना
सीखें, जीवन की गहराई में जाना सीखें, जीवन से, बड़ों से यह सीखें
कि कैसे अपने ज्ञान का जीवन में उपयोग करने के हर अवसर का लाभ
उठाया जाये, ताकि जीवन को सुधारा जा सके। पायोनियर ज्ञान पाने
के लिए सक्रिय कार्य करता है, वह इस ज्ञान का जीवन में उपयोग
करने के लिए भी सक्रिय कार्य करता है। वह मात्र एक "अच्छा छात्र"
नहीं है, जो कक्षा में हिलते-डुलते भी डरता है और अपने पाठ अच्छी
तरह सीखता है। पायोनियर ऐसा छात्र है जो उसे सिखाई जानेवाली
बातों पर मनन करता है, शिक्षा में रुचि लेता है, इस बात का ख्याल
रखता है कि कक्षा में सभी के लिए शिक्षा पाने का अच्छा वातावरण
हो; यह वह छात्र है जो स्कूल में भी और स्कूल के "
संयम रखना जानता है।

ऐसे कार्यभारों के साथ हमारा पायोनियर संगठन
चरण में पदार्पण कर रहा है। उसे अपने उदाहरण
करना है। हमारी उदीयमान पीढ़ी शारीरिक
के कार्य करना सीखेगी, मजदूरों के,
सदा तत्पर रहेगी।

सभी पायोनियरों का हार्दिक

१६३२

होना था। आर्थिक जीवन मे जो योजनाबद्धता दृष्टिगोचर होने लगी थी, उसे जनशिक्षा के क्षेत्र मे लाना भी आवश्यक था। लेनिन का मत था कि पार्टी सम्मेलन मे एक बार फिर पूरे ज़ोर से आम स्कूलो को पोलीटेक्निकल बनाने का प्रश्न उठाया जाना चाहिए, कि जनशिक्षा की पद्धति अधिक सही-सही निर्धारित की जानी चाहिए, शिक्षा को व्यवहार के साथ जोडना चाहिए, देश के सम्मुख प्रस्तुत समाजवाद के निर्माण के कार्यभारो के साथ जोडना चाहिए, प्राप्त अनुभव को ध्यान मे रखना और उसका सामान्यीकरण किया जाना चाहिए, प्रत्येक चरण के स्कूल मे शिक्षा के विषयो की ज्ञान-परिधि नये सिरे से निर्धारित की जानी चाहिए।

पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे रिपोर्ट मुझे पेश करनी थी। इसकी प्रस्थापनाए लिखकर मैने लेनिन को दिखाई। उन्होने इन पर कुछ टिप्पणिया लिखी।[5] वे शिक्षा जन-कमिसारियत मे चल रही बहस के बारे मे जानते थे, उन्हे पता था कि कुछ ऐसे साथी भी है, जो पोलीटेक्निकल शिक्षा के महत्व को आक नही पाते, यह मानते है कि यह सुदूर भविष्य की बात है, जो पोलीटेक्निकल शिक्षा के सैद्धातिक महत्व को नही समझते। लेनिन जानते थे कि कुछ शिक्षक पुराने ढग के शिल्प विद्यालयो का समर्थन करते है, सिद्धात और व्यवहार को एक सूत्र मे बाधने की, छात्रो को पोलीटेक्निकल दृष्टिकोण प्रदान करने की आवश्यकता को नही समझते। लेनिन को लगा कि मेरी प्रस्थापनाओ मे पर्याप्त रूप से ठोस बात नही कही गई है, इनमे प्रश्नो को दो टूक ढग से नही पेश किया गया है। व्यावसायिक स्कूलो के समर्थको के साथ बहस इस बात को लेकर थी कि वे व्यावसायिक स्कूलो मे सामान्य शिक्षा के विषय कम करना चाहते थे, शिक्षा-दीक्षा के कम्युनिस्ट कार्यभारो को ध्यान मे नही रखते थे, जिनमे एक है छात्रो को पोलीटेक्निकल दृष्टिकोण प्रदान करना। हालाकि मैने अपनी पुस्तक 'जनशिक्षा और जनवाद' मे भी तथा 'व्यावसायिक शिक्षा के कार्यभार' नामक लेख मे भी इस बारे मे विस्तार से लिखा था, तो भी शिक्षा जन-कमिसारियत मे विशेषज्ञो के साथ, पुराने ढग की व्यावसायिक शिक्षा के पक्षधरो के साथ होनेवाली बैठको से यह पता चलता था कि यह प्रश्न तब हल होने से बहुत दूर है। सो, लेनिन इसकी ओर खास तौर से ध्यान दिलाना चाहते थे।

बच्चों की गिनती बढ़ गयी थी। कहना न होगा कि ऐसे हालात में बड़े पैमाने पर स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने का काम नहीं हो सकता था। बस कुछ उत्साही अध्यापक ही इसके प्रयोग कर रहे थे। कुछ प्रायोगिक स्कूलों में अपार सफलता पाई गई। . इन स्कूलों में बहुत सी दिलचस्प बातें देखी जा सकती थी, लेकिन ये नूतन के कुछेक अंकुर ही थे, जिन्हें प्राय उचित प्रोत्साहन नहीं मिलता था। जहा तक अन्य स्कूलों का सवाल है, वहा स्थिति काफी विकट थी। काम की एक योजना नहीं थी, पाठ्य-पुस्तकें नहीं थी, कागज नहीं था, पाठ्यक्रम नहीं थे, किसी तरह का कोई नियत्रण और निरीक्षण नहीं था। शिक्षक यह समझते थे कि अब पुराने ढग से शिक्षा नहीं दी जा सकती, लेकिन नये ढग से कैसे दें, यह वे जानते नहीं थे। ज्यादातर मामलो में स्कूल श्रम बच्चो द्वारा मामूली "स्वयसेवा" तक ही सीमित होता था और उसका शिक्षा के साथ कोई सबध नहीं होता था। युद्धकालीन कम्युनिज्म' के वर्षों में ज्ञान-पिपासा बहुत प्रबल थी, लोगो में उत्साह और पहलकदमी की कोई कमी न थी, लेकिन सगठनबद्धता न होने के कारण और उद्योग एव कृषि की आम तबाही के कारण स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाना असभव था।

नई आर्थिक नीति[5] की ओर सक्रमण के साथ स्कूल के जीवन में बहुत-से नये परिवर्तन आये।

गृहयुद्ध समाप्त हो रहा था, पुनरुत्थान कार्य आरभ हो रहा था। लेनिन जनशिक्षा की स्थिति पर बडे ध्यान से नजर रख रहे थे। कोमसोमोल की तीसरी काग्रेस मे अपने भाषण में उन्होंने स्कूल और सामाजिक कार्य के बारे में, सिद्धात को व्यवहार से जोड़ने की, स्कूल मे ही जीवन का कायाकल्प करने के लिए ज्ञान का उपयोग करने की आवश्यकता के बारे मे अपने विचार विस्तार से व्यक्त किये। १६२० में हुई सोवियतो की आठवी अखिल रूसी काग्रेस मे देश के विद्युतीकरण के बारे में रिपोर्ट पेश की गई। लेनिन का मत था कि हर स्कूल में छात्रों को विद्युतीकरण योजना से परिचित कराया जाना चाहिए, कि स्कूल सास्कृतिक केंद्र होना चाहिए, उसे सारी शिक्षा व्यावहारिक कार्यभारो की पूर्ति के साथ जोड़नी चाहिए।

सोवियतो की आठवी काग्रेस के बाद जनशिक्षा के प्रश्नो पर सम्मेलन

पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे रिपोर्ट मैं बीमारी के कारण पेश नही कर सकी। लेनिन पार्टी सम्मेलन से बहुत असंतुष्ट थे। उन्हे सारे सोवियत कार्य मे अक्सर सवालो को अमूर्त रूप मे उठाये जाने, यथार्थ को ध्यान मे रखे बिना सामान्य बात करने पर बहुत झुंझलाहट होती थी। ठोस परिस्थितियों को ध्यान मे रखना अभी सीखना शेष था। जनशिक्षा के प्रश्नो पर पार्टी सम्मेलन की रिपोर्टें पढ़ते हुए भी लेनिन ने उनमे यही कमिया पाई। लेनिन शिक्षा जन-कमिसारियत के काम पर बडे ध्यान से नज़र रखते थे, सदा वहा से कागज़ात मंगवाते थे, मै उन्हे अक्सर विभिन्न इलाको मे हो रहे शिक्षा-कार्य के बारे में बताती थी, पत्र दिखाती थी, बाहर से आनेवाले शिक्षकों के साथ अपनी बातचीत के बारे मे बताती थी और यह भी कि शिक्षक उनसे की जानेवाली अपेक्षाओ की अनिश्चितता की शिकायत करते हैं, कि न केवल हर गुबेर्निया (जिले) मे, बल्कि हर उयेज़्द (तहसील) मे, यहा तक कि हर स्कूल मे अपना पाठ्यक्रम तय किया जाता है। मैं उन्हे बताती थी कि ऐसे स्कूल भी हैं जहा छोटी कक्षाओ में ही राजनीतिक अर्थशास्त्र और संस्कृति का इतिहास पढ़ाने लगते हैं, दूसरी ओर, उनके बगल मे ही ऐसे स्कूल भी हैं, जहां सब कुछ "स्वयंसेवा" पर आधारित है, जहा अध्यापक बच्चों के साथ बस "वार्ताएं" ही करते हैं, ऐसी वार्ताएं जो कोरी बातें ही होती हैं - कभी छात्रों को पीटर महान के बारे में बताने लगते हैं, तो कभी प्राचीन रूस की वेचे (जन-सभा) के बारे में, मगर पढ़ना, लिखना नहीं सिखाते।

लेनिन ने शिक्षा जन-कमिसारियत को अधिक कामकाजी तथा व्यावहारिक कार्य का संचालन करनेवाला निकाय बनाने की दिशा में उसका पुनर्गठन करने की आवश्यकता का सवाल उठाया। ५ फरवरी [illegible]२१ को 'प्राव्दा' में लेनिन के लिखे 'शिक्षा जन-कमिसारियत के कम्युनिस्टों को केंद्रीय समिति के निर्देश' छपे। ९ फरवरी को [illegible]' में ही लेनिन का 'शिक्षा जन-कमिसारियत के काम के बारे [illegible] छपा। ये निर्देश और लेख एक ही भावना से ओत-प्रोत थे। [illegible] की गई थी कि शिक्षा जन-कमिसारियत के काम में अधिक [illegible]ता हो, शिक्षकों के साथ काम करने का अधिक कौशल

हो, पुराने विचारो के विशेषज्ञो से काम लेने उन्हे अपना अनुगामी बनाने, सही रास्ते पर लाने की योग्यता हो। 'शिक्षा जन कमिसारियत के काम के बारे मे' लेख मे लेनिन ने उन लोगो को आडे हाथो लिया, जो आम स्कूलो को पोलीटेक्निक्ल बनाने के कार्यभार से इकार करने की चेष्टा कर रहे थे, जो आम स्कूलो मे दी जानेवाली सामान्य और पोलीटेक्निकल शिक्षा का परिमाण कम करना चाहते थे।

दिसबर १९२१ मे सोवियतो की नौवी अखिल रूसी काग्रेस मे लेनिन द्वारा लिखे अनुदेश स्वीकृत किये गये। इनमे "स्कूल और स्कूलेतर शैक्षिक कार्य का सारे जनतत्र के और तत्सबधी प्रदेश के स्थानीय तात्कालिक आर्थिक कार्यभारो के साथ सबध अधिक घनिष्ठ बनाने'" की आवश्यकता पर जोर दिया गया।

शिक्षा जन-कमिसारियत का पुनर्गठन किया गया। राजकीय वैज्ञानिक परिषद का वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग भी गठित किया गया।

लेनिन ने अनेक बार मुझसे यह कहा था कि इस प्रभाग का काम किस दिशा मे होना चाहिए। इस प्रभाग मे विशाल शैक्षिक अनुभववाले लोग, व्यावहारिक कार्य मे रत कई लोग रखे गये। लेनिन का कहना था कि वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग का कार्यभार है एक ओर व्यावहारिक अनुभव का ध्यान रखना उसका सामान्यीकरण करना तथा दूसरी ओर, हर कक्षा के छात्रो को दिये जानवाले ज्ञान की परिधि नये सिरे से निर्धारित करना यह नितात आवश्यक है कि पाठ्यक्रमो को जीवन के साथ, आर्थिक निर्माण कार्य के साथ यथासभव घनिष्ठ रूप से जोडा जाये, उनमे से हर तरह की बेकार बाते हटाई जाये उन्हे एक समग्रता प्रदान की जाये। आवश्यकता इस बात की है कि पाठ्यक्रम कम्युनिस्ट विश्वदृष्टिकोण की नीव रखे। और हमे केवल अपने रूस के अनुभव का ही नही बल्कि औद्योगिक दृष्टि से अग्रणी देशो के अनुभव का जर्मनी के विशेषत उत्तरी अमरीका के अनुभव का अध्ययन करना चाहिए। पाठ्यक्रम बनाते समय यह ध्यान मे रखना चाहिए कि हमे मात्र एक शिक्षा पद्धति का नही पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति का निर्माण करना है।

पहले कुछ वर्षों तक वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग का कार्य इसी दिशा मे हुआ। पहले चरण के (प्राथमिक) स्कूलो के पाठ्यक्रम तैयार किये

गये। यहां यह बता देना चाहिए कि क्रांति से पहले प्राथमिक विद्यालयों के लिए कोई पाठ्यक्रम नहीं थे। रूसी भाषा, अंकगणित और ईश नियम के विषय में कुछ अपेक्षाएं होती थीं। भूगोल, इतिहास जैसा कोई विषय नहीं होता था। पढ़ाई (पठन-पाठन) के पाठों में शिक्षक समाजविज्ञान और प्रकृतिविज्ञान संबंधी कुछ मामूली-सी जानकारी देता था।

यही बात स्विट्ज़रलैंड में और दूसरे देशों के स्कूलों में पाई जाती थी। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अधिकांश यूरोपीय देशों में जनसाधारण के लिए स्कूल सातवीं, आठवीं कक्षा तक के ही हैं। उनमें यदि कोई पाठ्यक्रम है, तो वे बड़ी कक्षाओं के लिए ही हैं।

प्रथम चरण के आम स्कूलों के लिए राजकीय वैज्ञानिक परिषद के पाठ्यक्रम एक नई बात थे, इनमें शिक्षकों के लिए निश्चित लक्ष्य निर्धारित होते थे। १९२५ में हुई शिक्षकों की अखिल रूसी कांग्रेस से यह पता चला कि शिक्षकों में कितना उत्साह फैला है, कि प्रथम चरण के शिक्षकों ने कितना विशाल सृजनात्मक कार्य किया है। आबादी के श्रम-कार्य और स्कूल के बीच संबंध काफी व्यापक बना, विशेषतः देहात में।

जहां तक दूसरे चरण (१२ से १७ वर्ष) के स्कूलों का सवाल है, जिनके लिए सारे पाठ्यक्रम आमूल बदले जाने थे, किशोरों का उत्पादक श्रम नये ढंग से संगठित किया जाना था, सिद्धांत और व्यवहार के बीच पुल बांधना था, वहां काम अटक गया। दूसरे चरण के स्कूल की पढ़ाई पूरी करके छात्र तकनीकी विद्यालयों और उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला लेते थे। इसके लिए पहले की ही भांति अनेक निरर्थक विषयों के ज्ञान की आवश्यकता होती थी। इसका पाठ्यक्रमों पर प्रभाव पड़े बिना नहीं रह सकता था।

लेकिन सभी छात्र उच्च शिक्षा संस्थानों और तकनीकी विद्यालयों में दाखिला नहीं लेते थे। सो आखिरी दो कक्षाओं – आठवीं और नौवीं – का "व्यवसायीकरण" होता था। विशेष "कोर्स" बनते थे, जो मुख्यतः बौद्धिक व्यवसायों के साधारण कर्मी तैयार करते थे। ये "कोर्स" दफ्तर कर्मचारियों की आवश्यकता कमोबेश पूरी करते थे। पॉलीटेक्निकल शिक्षा का इनमें नामोनिशान तक न था। स्कूली शिक्षा

। यहा यह बता देना चाहिए कि क्रांति से पहले प्राथमिक विद्यालयो
लिए कोई पाठ्यक्रम नही थे। रूसी भाषा, आकगणित और ईश
म के विषय मे कुछ अपेक्षाए होती थी। भूगोल, इतिहास जैसा
ई विषय नही होता था। पढाई (पठन-पाठन) के पाठो में शिक्षक
ाजविज्ञान और प्रकृतिविज्ञान सबधी कुछ मामूली-सी जानकारी
ा था।

यही बात स्विट्जरलैड के और दूसरे देशो के स्कूलो मे पाई जाती
। यह बात ध्यान देने योग्य है कि अधिकाश यूरोपीय देशो
जनसाधारण के लिए स्कूल सातवी, आठवी कक्षा तक के ही है।
मे यदि कोई पाठ्यक्रम है, तो वे बडी कक्षाओ के लिए ही हैं।

प्रथम चरण के आम स्कूलो के लिए राजकीय वैज्ञानिक परिषद
पाठ्यक्रम एक नई बात थे, इनमे शिक्षको के लिए निश्चित
श्य निर्धारित होते थे। १६२५ मे हुई शिक्षको की अखिल रूसी कांग्रेस
यह पता चला कि शिक्षको मे कितना उत्साह फैला है, कि प्रथम
रण के शिक्षकों ने कितना विशाल सृजनात्मक कार्य किया है। आबादी
श्रम-कार्य और स्कूल के बीच सबध काफी व्यापक बना, विशेषत
हात मे।

जहा तक दूसरे चरण (१२ से १७ वर्ष) के स्कूलो का सवाल
, जिनके लिए सारे पाठ्यक्रम आमूल बदले जाते थे, किशोरो का
त्पादक श्रम नये ढग से सगठित किया जाना था, सिद्धात और व्यवहार
बीच पुल बाधना था, यहा काम अटक गया। दूसरे चरण के स्कूल
ी पढाई पूरी करके छात्र तकनीकी विद्यालयों और उच्च शिक्षा सस्थानो
दाखिला लेते थे। इसके लिए पहले की ही भाति अनेक निरर्थक
विषयो के ज्ञान की आवश्यकता होती थी। इसका पाठ्यक्रमो पर प्रभाव
ड़े बिना नही रह सकता था।

लेकिन सभी छात्र उच्च शिक्षा सस्थानो और तकनीकी विद्यालयो
दाखिला नही लेते थे। सो आखिरी दो कक्षाओ – आठवी और
ौवी – का "व्यवसायीकरण" होता था। विशेष "कोर्स" बनते थे,
ो सस्ता बौद्धिक व्यवसायो के साधारण कर्मी तैयार करते थे। वे
'कोर्स' दफ्तर कर्मचारियो की आवश्यकता कमोवेश पूरी करते थे।
ोलीटेक्निकल शिक्षा का इनमे नामोनिशान तक न था। स्कूली शिक्ष

को पोलीटेक्निकल बनाने का काम मुख्यत फैक्टरी-कारखाना विद्यालयों में होता था, जहा पहले वर्ष से ही छात्र कारखाने में काम करते थे जहा इस काम का पारिश्रमिक (भले ही बहुत थोड़ा) मिलता था और जहा सामान्य शिक्षा सबधी ज्ञान कारखाने में काम के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा होता था। शिक्षा जन-कमिसारियत इस किस्म के स्कूलों का हर तरह से समर्थन करता था राजकीय वैज्ञानिक परिषद का वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग इन स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने की आवश्यकता पर खास तौर से ज़ोर देता था लेकिन इस परामर्श पर अमल सदा नही होता था।

इसके साथ ही साथ किसान युवाजन स्कूल गिने नई किस्म के स्कूल थे जिनमें शिक्षा का उत्पादन के साथ घनिष्ठ सबध था। वहा भी पोलीटेक्निकल शिक्षा के तत्वों का समावेश किया जाता था। इन स्कूलों की उल्लेखनीय विशिष्टता थी सामूहिक कार्य सयुक्त प्रयास। इनमें पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रसार में यह बात बाधक थी कि कृषि मशीनें कम थी। वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग इन स्कूलों का हर तरह का समर्थन देता था।

पिछले वर्षों में बड़े उद्योगों के विकास और कृषि के सामूहिकीकरण का काम जिस व्यापक पैमाने पर हो रहा है उससे स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने के लिए बिल्कुल नया आधार बना है।

पोलीटेक्निकल शिक्षा अब एक रोचक प्रयोग नहीं रह गई है सभी वर्गों के स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने सबधी समिति के अनुदेश को अमल में लाया जा रहा है।

१९३० की सर्दियों में पोलीटेक्निकल शिक्षा के विषय पर कांग्रेस हुई। यह भारी उत्साह के वातावरण में हुई मजदूरों और सामूहिक किसानों ने इसमें सक्रिय भाग लिया।

इसके बाद पोलीटेक्निकल शिक्षा सबधी कानून बनाने के सिलसिले में कई सम्मेलन हुए।

एक अत्यत महत्वपूर्ण निर्णय किया गया कि प्रत्येक स्कूल किसी फैक्टरी कारखाने या राजकीय फार्म से सबद्ध हो।

एक नई हवा चली।

लेकिन फिर स्कूलों का काम उत्पादों के दैनंदिन काम एक सीमित

होने लगा। बहुत-से सामूहिक फार्म स्कूल को ऐसे स्थान के रूप में देखने लगे, जहां से उन्हें कामगर बच्चे मिल सकते हैं। श्रम शिक्षा को पृष्ठभूमि में धकेलने लगा।

पार्टी की केंद्रीय समिति ने इस बात की ओर ध्यान दिलाया और फिर १९३१-३२ के सारे शैक्षिक वर्ष में शिक्षा का स्तर ऊंचा उठाने, सामान्यशिक्षात्मक ज्ञान बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। बेशक, इसका अर्थ यह कतई नहीं था कि पार्टी ने पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रश्न को कार्यसूची में हटा दिया है। शिक्षा के सामान्यशिक्षात्मक पहलू को सुधारना, अध्यापन-विधि में परिष्कार करना – यह सब इस बात का पूर्वाधार है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा के निरंतर सुधरते भौतिक आधार के सहारे सारी स्कूली शिक्षा पद्धति को समाजवादी पोलीटेक्निकल शिक्षा के स्तर पर उठाया जाये।

१९३२

अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति को पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में नोट का मसौदा[1]

१. समाजवाद का निर्माण कर रहे देश में पोलीटेक्निकल शिक्षा सामान्य शिक्षा का अभिन्न अंग होनी चाहिए। सोवियत देश के हर नागरिक को यह समझना चाहिए कि नियोजित, योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था क्या है और नियोजन क्या है। अर्थव्यवस्था का राज्य द्वारा नियोजन क्या है? अर्थव्यवस्था का राज्य द्वारा नियोजन वह मुख्य लक्षण है जो समाजवादी अर्थव्यवस्था को पूंजीवादी अर्थव्यवस्था से भिन्न करता है।

राजकीय नियोजन की यह अपेक्षा है कि उत्पादन की विभिन्न शाखाओं के परस्पर संबंधों की स्पष्ट समझ हो, जैसे कि भारी उद्योग की भूमिका की समझ, भारी और हल्के उद्योग के परस्पर संबंधों की समझ, भारी उद्योग और कृषि के परस्पर संबंध की समझ। इन परस्पर संबंधों के सभी सूत्रों की समझ होनी चाहिए। आधुनिक प्रविधि, उसके वैज्ञानिक आधार और उसके विकास के स्वरूप का ज्ञान पाये बिना यह समझ नहीं आ सकती।

हमारे सोवियत देश में कोटि-कोटि सोवियत नागरिकों के हाथों राजकीय नियोजन का क्रियान्वयन होता है, उन्हें राजकीय नियोजन के मूलभूत सिद्धान्तों और उसके क्रियान्वयन के पथों का पता होना चाहिए और सामूहिक श्रम के संगठन के मूलभूत सिद्धान्तों का ज्ञान भी [illegible] आवश्यक है।

२ पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में मार्क्स और एंगेल्स के कुछ कथन, लेनिन के कुछ ठोस निर्देश मौजूद हैं, पार्टी कार्यक्रम में भी इसके बारे में कहा गया है।

३ सोवियत सत्ता की स्थापना के पहले दिनों से ही शिक्षा जन-कमिसारियत ने पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने का ध्येय अपने सामने रखा। लेकिन इस कार्यभार की पूर्ति के मार्ग में कई गंभीर कठिनाइयां आई।

४. **मुख्य कठिनाई थी पुरानी व्यवस्था से धरोहर में प्राप्त सिद्धांत एवं जीवन-व्यवहार के बीच खाई**, जिसे कोमसोमोल की तीसरी कांग्रेस में लेनिन ने "पुराने पूंजीवाद समाज से मिली एक सबसे बड़ी बुराई और विपदा " कहा था।[2]

पुराने स्कूलों में कतिपय विषयों (गणित, भौतिकी, रसायन, प्रकृतिविज्ञान, भूगोल, समाजविज्ञान, इतिहास) के अध्यापन में इन विषयों के मूलभूत सिद्धांतों और जीवन-व्यवहार के बीच कोई नाता नहीं जोड़ा जाता था। इसके अलावा मूलभूत सिद्धांत "ज्ञान की अत्यधिक मात्रा, जिसमें से नौ बटा दस काम अनावश्यक होता था और शेष दसवां भाग विकृत"[3] के पीछे छिपे रह जाते थे। लेनिन का कहना था कि पाठ्यक्रमों को हल्का करने और जीवन-व्यवहार के साथ संबद्ध करने की दिशा में उनका पुनर्गठन होना चाहिए। पुराने विशेषज्ञों के प्रतिरोध के कारण यह काम कठिन हो रहा था, सो स्कूल में **श्रम का अध्यापन शिक्षा से अलग-थलग हो गया**, उस पर ज्ञान का पर्याप्त प्रकाश नहीं डाला जाता था।

५ सोवियत सत्ता के पहले वर्षों में पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने का काम अत्यंत विषम परिस्थितियों में हुआ – गृहयुद्ध चल रहा था। अर्थव्यवस्था तहस-नहस हो गई थी, बड़े उद्योग काम नहीं कर रहे थे, शिल्प उद्योग का, लघु किसानी अर्थव्यवस्था का प्रभुत्व था, जनता का सांस्कृतिक स्तर नीचा था, स्कूलों की दशा दयनीय थी (स्कूलों की इमारतें सैनिकों के पड़ावों के लिए और दूसरे कामों के लिए घेर ली जाती थीं, शिक्षकों को वेतन देने के लिए साधन नहीं थे, कापियां नहीं थीं, पाठ्य-पुस्तकें छापने के लिए कागज नहीं था)। इस सब की स्कूल में श्रम के अध्यापन पर छाप पड़े बिना नहीं रह

के साथ समन्वित करे।

"शिक्षा का उत्पादक श्रम के साथ संयोजन ऐसे आधार पर किया जाना चाहिए, जिससे कि छात्रों का सारा सामाजिक-उत्पादक श्रम स्कूल के शैक्षिक और चरित्र-निर्माणात्मक ध्येयों के अनुरूप हो।

"प्रतिष्ठानो, राजकीय फार्मों, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनो और सामूहिक फार्मों को चाहिए कि वे स्कूलो की कार्यशालाओ और प्रयोगशालाओं के लिए आवश्यक साज-सामान और उपकरण देकर, स्कूल के काम मे भाग लेने के लिए अनुभवी कर्मी और विशेषज्ञ भेजकर, उत्पादन के अध्ययन मे शिक्षकों को मदद देकर इस कार्यभार की पूर्ति मे शिक्षा जन-कमिसारियतो को हर तरह की सहायता प्रदान करे।

"स्कूलो को पोलीटेक्निकल बनाने मे सहयोग प्रदान करने के ध्येय से संघ जनतत्रो के *शिक्षा जन-कमिसारियत १९३१-३२* के शैक्षिक वर्ष मे छोटे-छोटे पोलीटेक्निकल संग्रहालयो का जाल बिछाये, और पहले से मौजूद इलाकाई संग्रहालयो मे विशेष पोलीटेक्निकल विभाग खोले, सर्वोच्च आर्थिक परिषद इस काम के लिए वित्तीय और संगठनात्मक सहायता प्रदान करे। शिक्षा जन-कमिसारियत सिने संगठनो के साथ मिलकर स्कूलो मे विशेषत पोलीटेक्निकल शिक्षा के वास्ते सिनेमा का उपयोग करने के लिए कदम निर्धारित करे।"

कर्मियो के बारे मे अनुच्छेद मे ५ ९ १९३१ के केंद्रीय समिति के निर्णय मे इस आवश्यकता पर बल दिया गया है कि "शिक्षकों को *कारखानो, राजकीय फार्मों, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनो और सामूहिक फार्मों* मे उत्पादन कार्य मे परिचित कराने का प्रबंध इस तरह किया जाये, ताकि १९३१-३२ के दौरान सभी अध्यापकगण यह परिचय पा ले।" आगे कहा गया है· "सभी औद्योगिक और कृषि उच्च शिक्षा संस्थानो मे छात्रो को स्कूलो को पोलीटेक्निकल बनाने के काम की विधियो से तथा उत्पादन-तकनीकी शिक्षा के प्रबंध से परिचित कराया जाये।"

अतत 'प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय का भौतिक आधार' शीर्षक अनुच्छेद मे कहा गया है· "सोवियत संघ की सर्वोच्च आर्थिक परिषद को यह सुझाव दिया जाये कि जो खरादे, औजार और विभिन्न बची-खुची वस्तुए *प्रतिष्ठानो मे काम नही आ सकती*, लेकिन स्कूलो की कार्यशालाओ के लिए उपयोगी हैं, उन्हे स्कूलो को सौंप दिया जाये।

सब जनतंत्रों की जन-कमिसार परिषदें, इलाकाई और प्रादेशिक कार्यकारी समितियां तथा औद्योगिक सहकारिता निकाय अल्पतम अवधि में अलग अलग इलाके में स्थानीय साधनों का उपयोग करते हुए आम स्कूलों के लिए शिक्षा-सामग्री और साज-सामान तैयार करें।

२५ ८ १९३२ को केंद्रीय समिति ने एक और निर्णय स्वीकार किया 'प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रमों तथा दिनचर्या के बारे में'।

इसके 'पाठ्यक्रमों के बारे में' अनुच्छेद में कहा गया है : पोलीटेक्निकल स्कूल में श्रम-शिक्षा के प्रबंध को अत्यंत महत्वपूर्ण मानते हुए श्रम संबंधी पाठ्यक्रमों पर इस प्रकार पुनर्विचार करने की आवश्यकता स्वीकार की जाती है जिससे कि शिक्षा का उत्पादक श्रम के साथ वास्तविक संयोजन सुनिश्चित किया जा सके और सिद्धांत तथा व्यवहार में उत्पादन की मुख्य शाखाओं का अध्ययन हो सके (अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी [बोल्शेविक] का कार्यक्रम)। लेनिन का निर्देश कि पोलीटेक्निकल सिद्धांत सभी विषयों के शिक्षण की अपेक्षा नहीं करता, बल्कि सामान्यतः आधुनिक उद्योग के मूलभूत सिद्धांतों के शिक्षण की अपेक्षा करता है (२६-२७ सितंबर १९२० को अखिल रूसी केंद्रीय कार्यकारिणी के तीसरे अधिवेशन में शिक्षा जन-कमिसारियत की रिपोर्ट पर लेनिन की टिप्पणी)।

इस बात को देखते हुए, जैसा कि लेनिन ने कहा था 'पोलीटेक्निकल शिक्षा' के निम्न 'मूलभूत सिद्धांतों' से परिचित कराया जाना चाहिए : "विद्युत ऊर्जा के बारे में **बुनियादी** जानकारी 'यांत्रिक उद्योग में बिजली का उपयोग' ... यही बात **रसायन उद्योग** में", "रूसी संघात्मक जनतंत्र की विजलीकरण योजना से परिचय", "**कम से कम १-३ बार** बिजलीघर, कारखाना, राजकीय फार्म देखने जाना," कृषिविज्ञान, आदि की अमुक बुनियादी बातें जानना। न्यूनतम **ज्ञान की परिधि विस्तार** में निरूपित की जाये।'

"इस सिलसिले में और इसके साथ-साथ यह भी सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि माध्यमिक विद्यालय के छात्र बुनियादी औज़ारों से काम लेना सीख ले और लकड़ी, धातु, आदि के समाधन का काम सीख ले"।

'शैक्षिक कार्य के संगठन और स्कूल की दिनचर्या निश्चित
के बारे में' अनुच्छेद में कहा गया है "शिक्षा जन-कमिसारियत
सम्मुख यह प्रस्ताव रखा जाये कि वह छात्रों की आयु के अनुसार अ
अलग श्रेणियों की तथा अलग-अलग शैक्षिक कार्यों (जैसे कि प्रयोगशा
में, उत्पादन स्थली पर, स्कूल के बाग, खेत में) के अध्यापन
विधि तैयार करे।" आगे कहा गया है कि दो महीने की अवधि
"स्कूलों की कार्यशालाओं और कार्य-कक्षों को तत्सबंधी मशीनों, औज
और सामग्रियों से सुसज्जित करने की मानक योजना बनाई जा
ताकि पोलीटेक्निकल स्कूल के गठन के लिए उपयुक्त शैक्षिक आ
सुनिश्चित किया जा सके।"

६ इस सबके बावजूद ५.६.१६३१ और २५.८.१६३२ के कें
समिति के निर्णयों पर अमल नहीं किया गया।

१६३५ में प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के लिए श्रम-शि
के पाठ्यक्रम प्रकाशित किये गये।

प्राथमिक विद्यालय में नगर और देहात के लिए श्रम-शिक्षा
पाठ्यक्रम एक जैसे ही हैं।

इनकी विशिष्टता है उस पोलीटेक्निकल ज्ञान का परिसीम
जो पूर्ववर्ती वर्षों में दिया जाता था, श्रम को शिल्प के कुछ अभ्यास
तक सीमित किया गया है, बच्चों को प्रविधि के बारे में दी जानेवाल
जानकारी नितांत अव्यवस्थित और सायोगिक है, ज्ञान का उपयो
केवल खिलौने बनाने के लिए किया जाता है और (यह बात विशेष
लाक्षणिक है) सारा पाठ्यक्रम सवा सोलह आने शहरी है।

माध्यमिक विद्यालय में श्रम-शिक्षा के पाठ्यक्रम नगरों और देहात
के लिए विभिन्न हैं। ग्रामीण पाठ्यक्रम कहीं अधिक हद तक जीवन
संबधित हैं। बेशक, जिसे समाजोपयोगी श्रम कहा गया है वह मा
उत्पादक श्रम है, उसमें सामाजिक तत्व बहुत कम है। किंतु प्रविधि
उसके महत्व के बारे में तो अक्षम्य रूप से कम है, पोलीटेक्निकल ह
का तो नामोनिशान नहीं है। पाठ्यक्रम उत्पादन से असबद्ध ही है।

नगरों के पाठ्यक्रम उत्पादन से बिल्कुल नहीं जुड़े हुए हैं, उन्हें
बेजान पढ़ाई ही बना दिया गया है, कृषि के साथ उनका कोई वास्ता
नहीं है और उनसे पोलीटेक्निकल दृष्टि विकसित नहीं होती है।

श्रम-शिक्षा के सभी पाठ्यक्रमो का दूसरे विषयो के अध्ययन के साथ कोई सबध नही है।

यह बात पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे मे मार्क्स एगेल्स लेनिन के कथनो के विरुद्ध जाती है और ५ ६ १६३१ तथा २५ ८ १६३२ के केंद्रीय समिति के निर्णयो के विरुद्ध भी जिनमे लेनिन के निर्देशो के पालन की आवश्यकता इगित की गई है।

पिछले दिनो एकत्रित की गई सामग्री मे यह पता चलता है कि श्रमाधारित पोलीटेक्निकल शिक्षा का काम समेटा जा रहा है, इसे एक अतिरिक्त विषय का रूप दिया जा रहा है और कुछ स्कूलो से पूरी तरह हटाया जा रहा है।

उपरोक्त सभी बातो के आधार पर

१ शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच खाई पाटने मे श्रमाधारित शिक्षा-दीक्षा के महत्व को देखते हुए श्रम-शिक्षा को अविलब पुन अनिवार्य बनाया जाये इसके उचित प्रबध के लिए आवश्यक घटो की सख्या भी तय कर देनी चाहिए।

२ नगर और देहात के अधिकाधिक समीप आने की प्रक्रिया का ध्यान मे रखते हुए श्रम-शिक्षा का एकीकृत पाठ्यक्रम बनाना आवश्यक है, इसमे नगरो के माध्यमिक विद्यालयो मे कृषि विज्ञान के तत्व बढाये जाने चाहिए, जबकि ग्रामीण विद्यालयो के लिए पाठ्यक्रमो मे सामान्य टेक्नोलोजी के तत्व।

३ मार्क्स, एगेल्स और लेनिन के निर्देशो पर पार्टी के कार्यक्रम और ५ ६ १६३१ तथा २५ ८ १६३२ के केंद्रीय समिति के निर्णयो पर अमल करने के उद्देश्य से यह आवश्यक है कि

क) श्रम-शिक्षा तथा सभी दूसरे विषयो के अध्यापन के बीच घनिष्ठ सबध स्थापित किया जाये, क्योकि इसके बिना एक ओर छात्रो के लिए श्रम सार्थक नही हो सकता उन्हे उत्पादन के बुनियादी नियमो की समझ दिलाना उनका आवश्यक पोलीटेक्निकल दृष्टिकोण बनाना असभव है दूसरी ओर श्रम शिक्षा का दूसरे विषयो के अध्यापन के प्रबध पर प्रभाव क्षीण पडता है जो इस बात मे व्यक्त होता है कि छात्रो मे सभी प्रश्नो के प्रति अधिक ठोस रुख बनता है शिक्षा मे शब्दज्ञान

से अधिक आसानी से छुटकारा पाया जाता है;

ख) छात्रों का पोलीटेक्निकल दृष्टिकोण अधिक व्यापक बनाने और ज्ञान-भंडार बढाने की दृष्टि से **श्रम-शिक्षा को अधिक सुव्यवस्थित** करना चाहिए, **उसे संकीर्ण व्यावसायिक शिक्षा नहीं बनने देना चाहिए** जैसा कि अक्सर होता है और पोलीटेक्निकल शिक्षा के ध्येयो को पृष्ठभूमि मे हटाता है;

ग) उत्पादक श्रम के चरित्र-निर्माणात्मक महत्व को देखते हुए, जिसमे निर्धारित लक्ष्य संगठनकारी भूमिका अदा करता है – चरित्र और अनुशासन सुदृढ करने मे सहायक होता है – यह नही होने देना चाहिए कि उत्पादक श्रम का स्थान "उत्पादन प्रक्रियाएं" ले लें या छात्र ऐसी चीज़े बनाये, जो किसी को नहीं चाहिए, जिनके ढेर तहखाने मे लगे रहे, उत्पादक श्रम चुनते समय प्रत्येक कक्षा के छात्रो की शक्ति, अभिरुचि और प्रशिक्षण स्तर को ध्यान मे रखा जाये,

घ) सामूहिक श्रम के अपार महत्व को ध्यान में रखते हुए श्रम-शिक्षा को कोरी व्यक्तिगत शिक्षा न बनने दिया जाये, बल्कि क्रमश: सामूहिक श्रम के सरलतम रूपो से अधिक जटिल रूपो की ओर बढा जाये, मिलकर लक्ष्य निर्धारित करना, लक्ष्य की वास्तविकता आकना, कार्य की योजना बनाना और उसके पालन का हिसाब रखना सिखाया जाये। छात्रो के सामूहिक श्रम को आस-पास के उत्पादन कार्यों के साथ अधिकाधिक घनिष्ठ रूप से जोडा जाये और ऐसा करते हुए कामचलाऊ विचारों से बचा जाये, जिनमे बच्चों की आयु-विशेषताओ को और शिक्षा के साथ श्रम के घनिष्ठ सबध को ध्यान मे नही रखा जाता।

४) ५.९.१९३१ और २५.८.१९३२ के केंद्रीय समिति के निर्णयों मे निर्धारित व्यावहारिक कदमों पर अमल तुरन्त ही शुरू किया जाये

क) स्कूलों और प्रतिष्ठानों, राजकीय फ़ार्मो, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों व सामूहिक फ़ार्मों के बीच सबध सुदृढ किये जायें, कार्यशालाओं को सुसज्जित करने के काम मे स्कूलों की मदद के मामले मे भी और "स्कूल के काम मे भाग लेने के लिए अनुभवी कर्मी और विशेषज्ञ भेजने, उत्पादन के अध्ययन मे

शिक्षकों की मदद करने, आदि" के सिलसिले में भी,

ख) सभी औद्योगिक और कृषि उच्च शिक्षा संस्थानों में छात्रों को स्कूलों को पोलीटेक्निकल बनाने के काम की विधियों से तथा उत्पादन-तकनीकी शिक्षा के प्रबंध से परिचित कराया जाये;

ग) सभी शिक्षकों को कारखानों, राजकीय फार्मों, मशीन ट्रैक्टर स्टेशनों और सामूहिक फार्मों में उत्पादन के आधारभूत नियमों से परिचित कराया जाये।

५) ५ ९ १९३१ और २५ ८ १९३२ के निर्णयों को पूरा करते

क) विभिन्न कक्षाओं के छात्रों को प्रतिष्ठान, सामूहिक राजकीय फ़ार्म दिखाने का कार्यक्रम बनाया जाये (इन यात्राओं के ध्येय संकीर्ण व्यावसायिक नहीं होने चाहिए, जैसा कि हम १९३५ के कार्यक्रमों में देखते हैं),

ख) सभी इलाकाई संग्रहालयों में पोलीटेक्निकल विभाग खोले जायें;

ग) प्रविधि, यात्राएं, प्राकृतिक शक्तियों पर विजय आदि विषयों पर बालोपयोगी साहित्य की सूची बनाई जाये;

घ) पोलीटेक्निकल शिक्षा के प्रमुख प्रश्नों पर प्रकाश डालने के लिए फिल्में बनाई जायें।

६) पोलीटेक्निकल श्रम-संस्थान के प्रतिनिधियों, प्रतिष्ठानों के नियरो, कृषि विशेषज्ञों, प्रमुख प्रतिष्ठानों के अग्रणी कर्मियों तथा समेत विभिन्न विषयों के अध्यापकों का एक आयोग बनाया जाये उसे मार्क्स, एंगेल्स, लेनिन के कथनों तथा प्राप्त अनुभव के आधार निम्न कार्य सौंपे जायें

क) प्राथमिक विद्यालय के लिए पोलीटेक्निकल शिक्षा का न्यूनतम पाठ्यक्रम तैयार करना,

ख) माध्यमिक विद्यालय के लिए पोलीटेक्निकल शिक्षा का न्यूनतम पाठ्यक्रम तैयार करना,

ग) अध्यापक प्रशिक्षण विद्यालयों के लिए श्रम-प्रशिक्षण का पाठ्यक्रम तैयार करना,

घ) प्राथमिक, अपूर्ण माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालयो में पोलीटेक्निकल शिक्षा के अध्यापन की विधि तैयार करना।

७) स्वीकृत निर्णयो के आधार पर:

क) प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयो के नये पाठ्यक्रम बनाये जाये,

ख) अध्यापन प्रशिक्षण विद्यालयो और सस्थानो के लिए पाठ्यक्रम तैयार किये जाये, इनमे श्रम-शिक्षा अनिवार्य हो;

ग) शिक्षको के लिए, श्रम के अध्यापको और विशेषज्ञो के लिए स्कूल मे श्रम-अध्यापन की विधि-पुस्तिका तैयार की जाये,

घ) कार्यशाला के साज-सामान के मानक तैयार किये जायें;

ङ०) प्रतिष्ठानों और फार्मों में काम मे बड़ी कक्षा के छात्रों की शिरकत के रूप निर्धारित किये जायें;

च) श्रम-शिक्षा के अध्यापकों के प्रभेद, उनका सामान्य शिक्षा तथा श्रम-प्रशिक्षण का स्तर और स्वरूप निर्धारित किये जाये,

छ) श्रम-शिक्षा के अध्यापको के प्रशिक्षण और पुन:प्रशिक्षण का प्रबंध किया जाये।

सामाजिक जीवन की परिस्थितियों में परिवर्तन से इस पहलू में का
तब्दीलिया आयेगी लेकिन अभी तो पारिवारिक जीवन में खाना पकाना
कमरों की सफाई करना, कपडे सीना और उनकी मरम्मत करना
बच्चों का पालन-पोषण करना, आदि कामों के बिना गुजर नहीं है
और इन सभी कामों का बोझ स्त्री के कधों पर पड़ता है।

सपन्न परिवारों में यह श्रम उजरती कामगारिनो – बावर्चिन
नौकरानी, धाय – पर डाल दिया जाता है। सपन्न स्त्री स्वय इस प्रका
छुटकारा पाती है कि यह श्रम दूसरी स्त्री पर डाल देती है, जिन
लिए इस काम से छुटकारा पाना सभव नहीं है। बहरहाल, गृहस्थी म
सारा काम करती स्त्री ही है। मजदूर परिवार में पति कभी-कभी स
का हाथ बटाता है। लेकिन वह जरूरत का मारा ऐसा करता है। का
से लौटकर, छुट्टी के दिन या बेकारी के दिनो में मजदूर कभी-कभा
दूकान से सौदा भी ले आता है, कमरे मे झाड़ू लगा देता है और बच
की देख-रेख भी करता है। बेशक हर कोई मजदूर सदा ऐसा कर
हो, ऐसा नही है और फिर उसे बहुत कुछ करना आता भी नहीं
(कपडे सीना, धोना), सो, पत्नी, चाहे वह भी सारा दिन घर
बाहर काम करती हो, घर लौटकर कपडे धोने, घर की सफाई कर
में जुट जाती है, और आधी रात गये तक बैठी कपडी सीती रह
है, जबकि पति कब का सो रहा होता है। मजदूरो मे तो पति कभ
कभार घर के काम मे पत्नी का हाथ बटा भी देता है, लेकिन तथाकथि
बौद्धिक परिवारों में, उनके साधन चाहे कितने ही सीमित क्यो न हो
पति सदा गृहस्थी के काम से अलग रहता है, पत्नी से जैसे बन पड़े
अपना "औरतो का" काम सभाले। बर्तन धोने या बटन टा
"बुद्धिजीवी" का तो सभी मखौल ही उडायेंगे।

बुर्जुआ प्रेस मे (विशेषत पश्चिम मे) इस बारे मे बहुत कुछ क
जाता है कि गृहस्थी वह क्षेत्र है, जिसमें स्त्री अपनी शक्ति का सर्वाधि
फलप्रद उपयोग कर सकती है। मनुष्य केवल उसी क्षेत्र मे कोई महा
कार्य कर सकता है, जो उसकी व्यक्तिगत विशेषता के सर्वाधिक अनुरू
होता है और स्त्री की व्यक्तिगत विशेषता ऐसी है कि गृहस्थी के छोटे
मोटे काम ही उसके सबसे अधिक अनुरूप हैं। स्त्री को इस बात क
चिता करनी चाहिए कि वह आदर्श गृहिणी बने, और पारिवारि

सबधो को बिगाड़ता है, उनमे असमानता के बीज बोता है। यह अंधविश्वास न जाने कितने नारी जीवनो को डुबो चुका है, [illegible] कितने परिवारो मे विलगाव और परस्पर असमझ पैदा कर चुका है। स्वतंत्र स्कूल सयुक्त शिक्षा-दीक्षा का प्रबल समर्थक है, क्योंकि [illegible] मानता है कि सयुक्त कार्य और विकास की समान परिस्थितियां युव[illegible] युवतियो मे परस्पर समझ बनाने, उन्हे आत्मिक रूप से एक दू[illegible] के निकट लाने मे सहायक होगी और इस तरह स्त्री-पुरुष के बीच साम[illegible] सबंधो का पूर्वाधार बनेगी। इस दृष्टिकोण को मानते हुए स्वतंत्र स्[illegible] को दस्तकारी के मामले मे भी लडके-लडकियो के बीच भेद नहीं करना चाहिए। यह आवश्यक है कि लडके-लडकियां दोनो समान रूप से गृहस्थी के सभी काम करना सीखें और इन्हें अपनी मर्यादा से नीचे न समझें।

जिस किसी ने बच्चो का प्रेक्षण किया है, वह जानता है कि बचप[illegible] के शुरू मे लडके भी लडकियो की ही भांति खाना पकाने, बर्तन धो[illegible] और घर के दूसरे सभी कामो मे सहर्ष मा का हाथ बटाने के लि[illegible] तत्पर होते हैं। यह सब उन्हे इतना दिलचस्प लगता है! लेकिन [illegible] तौर पर परिवार मे छोटी उम्र से लडके-लडकी के बीच भेद कि[illegible] जाने लगता है। लडकियों को प्याले धोने, मेज पर बर्तन लगाने [illegible] कहा जाता है और लडके से कहा जाता है "क्या तुम रसोई मे घु[illegible] रहते हो? यह क्या लडको का काम है?" लडकियो को गुडिया खिलौनो के बर्तन आदि दिये जाते हैं, लडको को इंजन, सिपाही। स्कूल जाने की उम्र का होते-होते लडको के मन मे "औरतो के काम" के प्रति एक हेय दृष्टि बन जाती है। किंतु यह बिल्कुल गलती ही होती है और स्कूल मे यदि शिक्षा दूसरे ढंग से दी जाती है तो यह भावना फ़ौरन ही बिल्कुल खो जाती है। इसके लिए लडको को भी लडकियों [illegible] ही भांति सीना, बुनाई करना, कपड़ों की मरम्मत करना आदि के सब काम सिखाने चाहिए, जिनके बिना गुजारा नहीं हो सकता और जो न आने से आदमी निस्सहाय और पराश्रित हो जाता है। यदि यह पढ़ाई ठीक से कराई जाए, तो लडके सहर्ष ये सब काम सीखते [illegible] उदाहरण हम [illegible] के अनुभव में देखते हैं ([illegible] विद्यालय में ही ऐसी सफलता पाई गई है)। [illegible] ([illegible] बिना) यह काम [illegible]

चाहिए कि वे नाश्ता तैयार करें, बर्तन धोयें, कमरे साफ करें, सफाई का ध्यान रखें, इत्यादि। उपयोगी बन पाने की इच्छा, सौंपे गये काम को अच्छी तरह पूरा करने की कामना, काम में लगन – इस सबकी बदौलत लड़का "औरतों के काम" के प्रति अपनी हिकारत शीघ्र ही भूल जायेगा।

बेशक यह उम्मीद करना हास्यास्पद होगा कि लड़कों को "औरतों के काम" सिखाने के कोई महान परिणाम होंगे लेकिन यह उन छोटी-छोटी बातों में से एक है, जिनसे स्कूल का आम वातावरण बनता है और जिनकी ओर ध्यान दिया जाना चाहिए।

१९६७

स्कूल के समाजोपयोगी कार्य के प्रश्न पर कुछ विचार

सोवियत स्कूल को छात्रों को जो दक्षताएं प्रदान करनी चाहिए उनमें प्रमुख है सामाजिक कार्य करने की दक्षता। यह कार्य भी छात्रों को अकेले नहीं, बल्कि सामूहिक रूप से करना सिखाना चाहिए।

हमारे कृषिप्रधान देश में छोटे मिल्की की मनोवृत्ति अत्यंत प्रबल है, ऐसे छोटे मिल्की की, जो "हर कोई अपने लिए" "मुझे किसी से क्या वास्ता" जैसी नैतिकता का ही उपदेश देता है। यदि हम चाहते हैं कि हमारा देश सहकारिता के, सामूहिकता के मार्ग पर बढ़े तो सभी तरह की सहकारिता के पनपने में सहायक कदमों के साथ-साथ हमें छोटे मिल्की की मनोवृत्ति पर वैचारिक विजय पाने के लिए भी सभी संभावनाओं का उपयोग करना चाहिए। स्कूल इस कार्य का एक आधार-केंद्र हो सकता है। पाठ्य-पुस्तकें पहली पंक्ति से अंतिम पंक्ति तक सामूहिकतावादी भावना से ओत-प्रोत होनी चाहिए। पुस्तकों की मदद से नियमबद्ध रूप से बच्चों में यह आदत विकसित करनी चाहिए कि वे प्रत्येक प्रश्न को समष्टि के हित की दृष्टि से देखें। प्रत्येक सवाल और कठिनतम प्रश्न को इस प्रकार लेना कि बच्चा अपने को समष्टि के अंश के रूप में देखना सीखे – यह काम हमें अभी ठीक से नहीं आता है। यह काम हमें सीखना है।

दूसरी बात। इस बारे में बहुत कुछ लिखा गया है कि स्कूल स्वावलंबी [illegible] होना चाहिए, ताकि छात्र अपने स्कूली व्यावहारिक [illegible]

मे सामाजिक कार्य की जो आदत डाली जायेगी, जो दक्षता दी जायेगी, उसे बच्चे पायोनियर टुकडियो मे लायेगे। ये आदते पायोनियरो के जरिए असगठित बाल समूह में भी फैलेगी। युवा पीढी सामाजिक कार्यो मे सक्रिय बनेगी, उसे सामूहिक रूप से, सयुक्त प्रयासो से सामाजिक कार्यभार निभाने आयेगे।

यह ध्येय इस योग्य है कि इसे पाने के लिए काम किया जाये।

१६२६

बाल मंडलियों का काम

हमारा ध्येय है बच्चों में सामूहिक रूप से काम करने और इसकी योग्यता विकसित करना। लेकिन हम इस प्रश्न को हल करने पर अभी आये ही आये हैं। अभी तक इस दिशा में जो कुछ किया गया है वह पहले कदम ही है।

इसके अलावा जो कुछ किया जाता है वह इक्के-दुक्के श्रेष्ठ स्कूलों में ही किया जाता है, जबकि बच्चों के कार्यकलाप के सामूहिक रूप आम, सर्वत्र व्याप्त रूप होने चाहिए, जिनका उपयोग स्कूलों में भी और स्कूलों के बाहर भी किया जाये।

सामूहिक श्रम का एक रूप है मंडलिया।

लेकिन यदि हम यह देखें कि व्यवहार में हमारे यहा कैसी मडलिया हैं, तो हम पायेंगे – ये सभी मडलिया बहुत हद तक एकरूपी हैं, इनका स्वरूप बालसुलभ नही है, नैतिक है, कवायदी है। इसके अलावा, ज्यादातर मामलो में ये बच्चो की नहीं किशोरो की मडलिया हैं।

हम राजनीतिक और नाटक मडलियो, अनीश्वरवादियों की मडलियो, साहित्यिक, कलात्मक, समूहगान मडलियो, शारीरिक अभ्यास मडलियो की चर्चा सुनते हैं। इनसे कुछ भिन्न हैं किशोर प्रकृति प्रेमियो, रेडियो प्रेमियो, आदि की मडलिया। लेकिन शारीरिक अभ्यास की, नाटक राजनीतिक मडलियो की तुलना मे इनकी सख्या बहुत कम है।

यदि हम यह प्रश्न रखे कि क्या बच्चे, विशेषत ग्रामीण बच्चे,

अपनी पहलकदमी से मडलिया गठित करते हैं, तो साफ-साफ कहना होगा – नही, वे अपनी पहलकदमी पर ऐसा नही करते।

उधर आवश्यकता इस बात की है कि बच्चो और किशोरो की मडलिया दैनदिन जीवन का अग बन जाये। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि बच्चे छोटी उम्र से ही मडली के काम मे हिस्सा ले, अपनी पहल, अपनी पेशकदमी, अपना शौक इसमें लगाये। मछेरो की, सेनिटरी की, बागबानी की, चित्रकारी, बढईगिरी की, वाचको की, चादमारी की, पाककला की, समाचारपत्र शौकीनो की, मशीनो-मोटरो के शौकीनो की मडली, साक्षरता मडली, इत्यादि, इत्यादि।

तीन, पाच बच्चे कोई काम करने की सोचते हैं, अपने लिए कोई लक्ष्य निर्धारित करते हैं – वे सामान्य ध्येय से, सामान्य रुचि से ऐक्यबद्ध मडली बना ले। कोई नियमावली, किसी तरह की औपचारिकता नही चाहिए, जो काम मे सारी रुचि खत्म कर डालती है। मिल-जुलकर लक्ष्य निर्धारित करना और मिल-जुलकर उसे पाने का प्रयास करना – यह नितात महत्वपूर्ण कार्य है। स्कूल, पायोनियर सगठन – सभी को और हर किसी को बाल मडलियो के गठन मे सहयोग प्रदान करना चाहिए, उनकी मदद को आना चाहिए।

छोटे बच्चो की मडलियो मे सदस्य भी कम होगे और लक्ष्य भी कम समय मे पाये जा सकनेवाले होगे, अधिक बालसुलभ होगे। महत्व लक्ष्यो का नही है, बल्कि मिल-जुलकर लक्ष्य निर्धारित करने और उस तक पहुचने की आदत का है। धीरे-धीरे छोटी अस्थाई मडलिया अधिक दीर्घकालीन मडलियो का रूप लेगी, उन्हे निश्चित रूप प्रदान करने, उन्हे सुसगठित बनाने, उनमे श्रम-विभाजन करने की आवश्यकता पैदा होगी, बच्चे अपने काम के बारे मे बताना चाहेगे, रिपोर्ट देना भी चाहेगे।

मडलियो मे काम से पायोनियर आदोलन के लिए अत्यत अनुकूल जमीन बनती है। मडलियो मे काम करने के अभ्यस्त बच्चे पायोनियर सगठन के काम मे भी पहलकदमी, मिलकर काम करने की योग्यता ला सकेगे।

सबसे प्रमुख बात है अधिक से अधिक उदाहरण हो और कम से कम औपचारिकताए, पजीकरण, नियमावलियां।

13-1000

वयस्को को बच्चो के शौकिया मंडली कार्य में हर तरह से मदद करनी चाहिए।

सबसे बडी सहायता निम्न है। हमारे बच्चों को बहुत कम काम करने आते हैं, लेकिन वे बहुत अधिक ज्ञान और दक्षता पाना चाहते हैं, उन्हे इसकी आवश्यकता है। **हर वयस्क को, जिसे कोई काम करना आता है, बच्चों को यह काम सिखाना चाहिए।** मिसाल के लिए एक कामगरिन को सिलाई मशीन पर कपड़े सीने आते हैं – वह तीन लडकियों की मडली को यह काम सिखा दे। मजदूर को लकडी की पेटिया बनानी आती है वह लडको को यह काम सिखा दे। डाक्टर लडके-लडकियों के दल प्राथमिक सहायता देना सिखा दे, नर्स पट्टी बाधना सिखाये, फि अपना काम सिखाये, इत्यादि, इत्यादि।

आवश्यकता इस बात की है कि बच्चे भाति-भाति का ज्ञान आत्मस करे, योग्यता पाये। मजदूर छुट्टी पर आया है। वे उससे बात करे उसे जो कुछ आता है उसमें से कुछ उन्हें सिखा दे। वे उसके स समझौता कर ले: वह उन्हे अमुक काम सिखायेगा और वे उसकी क्यारि की निराई कर देगे, अहाता साफ कर देगे, नाली खोद देगे, घास देगे, इत्यादि। इस विचार से हाथ पर हाथ धरे बैठे नहीं रहना चा कि कोई आयेगा और कुछ सिखा जायेगा, खुद ज्ञान पाने के लिए जू चाहिए, अपनी शिक्षा की कीमत अपने श्रम से चुकानी चाहिए। इस त बच्चों मे पहलकदमी की, व्यावहारिकता की अपार योग्यता विकसित सकती है, वे लोगो को परखना सीख सकते हैं। हर किसी से वह योग ग्रहण करो, जो वह दे सकता है, और फिर जीवन मे उसका उप करो।

हमारा देश अभी गरीब है – हमे धरती से, जल से सर्वत्र वह पाना नही आता, जो वे हमे दे सकते हैं। हमें यह सीखना है। इसके हमें जुटकर शिक्षा पानी है। फिलहाल राज्य सांस्कृतिक आवश्यकत की पूर्ति के लिए बहुत कम ही कुछ दे सकता है। लेकिन बैठे-बैठे इन नहीं किया जा सकता। अभी हमें खुद ही एक दूसरे की मदद करते अपने चारों ओर के जीवन से, पुस्तक मे अधिक से अधिक ज्ञान योग्यताए पाते हुए स्वय अपने को शिक्षित करना है। हम यह काम करके रहेंगे, शिक्षित बनकर रहेंगे।...

हमारे पास थोड़ा बहुत जो कुछ है उसका उपयोग करना हमे सीखना है। जरूर हम उसका उपयोग करेंगे। देहात मे पहुचे अखबार के हर अक का, हर पुस्तक का पूरा उपयोग करेंगे। हर साक्षर व्यक्ति का और हर योग्य व्यक्ति का तो इससे भी अधिक उपयोग करेंगे।

मुझे पेस्तालोत्सी[1] की याद आती है। उसके जमाने मे स्विटज़रलैंड एक गरीब तथा अपेक्षाकृत अल्पसस्कृत देश था। वह सबसे अधिक ग्रामीण बच्चो के बारे मे सोचता था कि किस तरह देहात मे गरीबी मिटाई जाये, वहा सस्कृति का प्रसार हो। उसकी रचनाओ मे आप इस बारे मे बहुत-से निर्देश पायेंगे कि अज्ञान के अधकार मे डूबे देहात मे ज्ञान का प्रकाश कैसे फैलाया जाये, थोड़ा-बहुत जो है उसका उपयोग कैसे किया जाये। वह बच्चो को सलाह देता है कि वे उस किसान औरत के पास जाये, जिसे अच्छी किस्मो की बदगोभी उगानी आती है, घडीसाज के पास जाये, शहर से आये सौदागर के पास जाये। दक्षता प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति से जो वह दे सकता है, ग्रहण करे।

आधुनिक सास्कृतिक जीवन मे शिक्षा पाने की सभावनाए कही अधिक हैं। लेकिन सबसे अधिक सुसस्कृत देशो के भी सच्चे व्यावहारिक शिक्षक लड़के-लड़कियो को उसी बात की शिक्षा देते है, जो पेस्तालोत्सी उन्हे सिखाना चाहता था – अपने इर्द-गिर्द के जीवन का योग्य लोगो का ज्ञान पाने के लिए उपयोग करना।

पेस्तालोत्सी से हमे जीवन के प्रति ऐसा बिल्कुल सही दृष्टिकोण सीखना चाहिए, अपने पर्यावरण से आवश्यक ज्ञान और योग्यता पाना सीखना चाहिए। तकनीकी विद्यालय और व्यावसायिक स्कूल अभी काफी समय तक युवाजन के एक अल्पाश को ही शिक्षा दे पायेंगे जबकि शिक्षा सभी को पानी चाहिए।

तो क्या करना चाहिए?

१) सारी जनता मे विशेषत मजदूरो के बीच इस विचार का व्यापक प्रचार करना चाहिए कि हर ऐसा व्यक्ति, जिसे कुछ करना आता है, बच्चो को अपना यह कौशल सिखाये।

२) बच्चो की शिक्षा के सदर्भ मे परस्पर सहायता का सिद्धात
कोई व्यक्ति बच्चो को अमुक बाते सिखाने

का दायित्व लेता है, बच्चे उसके लिए अमुक काम करने का
लेते हैं।

३) स्कूलों और पायोनियर टुकड़ियों के जरिए सभी स
प्रतिष्ठानों को कामकाजी मंडलियां बनाने के विचार का प्रसा
चाहिए।

४) इस प्रश्न पर आवश्यक बाल-साहित्य की रचना की जानी

१९२६

बच्चों का सामूहिक श्रम

हम अक्सर बच्चों को आलस का, निठल्लेपन का उलाहना
है, यह भूल जाते हैं कि बच्चे तो बच्चे ही हैं और हमें जो खेल ल
है वह उनके लिए सच्चा श्रम है।

बच्चा पेड़ की छाल से नाव बनाता है। नाव का मॉडल ब
का यह ध्येय वयस्क को मामूली-सा, बचकाना, अनावश्यक लगता
लेकिन वह स्वयं नई गाड़ियों के मॉडल बड़ी दिलचस्पी से देखता
उधर नाव का मॉडल बनाते हुए बच्चा सीखता है· वह व्यवहार
अनुभव से प्रकृति के कुछ नियमों का ज्ञान पाता है, जिस सामग्री से
बनाई जाती है उसके गुणों की जानकारी वह पाता है, जिस
मे वह काम करता है, उसका उपयोग करना वह सीखता है, सो
जो बेटे की नाव चूल्हे मे फेंक देती है, अपराध करती है, वह
बेटे को कुशल कर्मी नही बनने देती।

कभी-कभी बच्चे मिल-जुलकर कोई काम करते हैं, कुछ बन
कभी वे मिलकर हवाई जहाज का मॉडल बनाते हैं, कभी तस्वीरें
बनाते हैं, कभी क्यारियाँ खोदते हैं, इत्यादि।

बड़े यदि इस खेल-श्रम मे हस्तक्षेप नहीं करेंगे तो यही सबसे
होगा, क्योंकि उनकी साख, उनके हाथों का कौशल बच्चों की
से इतना बढ़कर होता है कि बच्चो की खेल मे सारी दिलचस्पी
रहेगी, लेकिन यदि बच्चे वयस्क से सलाह मांगते हैं, तो उसे

देनी चाहिए, उनके प्रति अपना गंभीर रुख दिखाकर उनकी
चाहिए।

बच्चों के संयुक्त कार्य को खास तौर पर कद्र करनी चाहिए-य
सामूहिक श्रम का अंकुर है। इस सामूहिक श्रम में बच्चे की शक्ति
अधिक अच्छी तरह से मुखरित होती है। मुझे याद है कैसे एक
साल को हम तीन लड़कियों ने छोटे बच्चों के लिए "चिड़ियाघर"
बनाने की सोची. पैसे चाहिए थे, सो हमने कुछ घरों में खाली
बोतलें जमा कीं. उन्हें बेचकर पचास कोपेक पाये—यह हमारी
पूंजी थी। फिर हमने एक औरत के साथ तय किया कि उसे
कढ़ाई कर दिया करेंगी. बड़े जतन से हमने यह काम करके
से ज्यादा कमाया। पुस्तकालय में सारी सन्दर्भ-सूचियां देखकर
पशु-पक्षियों के बारे में किताबें ढूंढ़ीं। दुकानें छान मारीं,
कार्ड ढूंढ़े, कुछ किताबों से तस्वीरें काटीं, उन्हें चिपकाया—इस
काम करते हुए आखिर हमने चिड़ियाघर बना लिया। सही है कि
यह महज एक खिलौना था, लेकिन हमने यह काम करते हुए कितनी
ही उपयोगी बातें सीखीं और इस काम ने हमारी मैत्री कितनी
कर दी।

बच्चों और किशोरों की कम्युनिस्ट शिक्षा दीक्षा

तृतीय शैशव-रक्षा कांग्रेस (१६३०) में
प्रस्तुत रिपोर्ट

साथियो, मेरी रिपोर्ट का विषय है 'बच्चों और किशोरों की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा'। आज समस्त बालगण की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा के प्रश्न का अपार महत्व है। क्रांति के शुरू मे, १६१७ के बाद, हमारा ध्यान इस ओर था कि कुछ प्रायोगिक-आदर्श स्कूलों मे प्रायोगिक-आदर्श बाल-घरों, (अनाथालयो) मे इस बात की तस्वीर पेश की जाये कि नये ढंग से शिक्षा-दीक्षा कैसे दी जानी चाहिए, किस तरह पुराने तरीको से नही, बल्कि नई विधियो से शिक्षा-दीक्षा दी जानी चाहिए। विश्व-युद्ध और गृहयुद्ध के कारण बडी सख्या में अनाथ व बेघर हुए बच्चो के लिए हमें बहुत-से बाल-घर खोलने पडे, लेकिन इनमे कुछेक ही आदर्श बाल-घर थे, जहां लड़के-लड़किया कुछ सीख सकते थे। यदि इस प्रश्न को उसकी पूरी समग्रता मे लिया जाये, तो हमें यह मानना होगा कि यह काम ठीक से नही हो पाया है।

पिछले दिनों देश के सारे सामाजिक जीवन मे, सारी अर्थव्यवस्था मे आये अनेक परिवर्तनों के सिलसिले मे समस्त बालगण की शिक्षा-दीक्षा और चरित्र-निर्माण का प्रश्न विशेषत उग्र हो गया है। कृषि में छोटे-छोटे निजी किसानी फार्मों के बड़े-बडे सामूहिक मशीनीकृत फार्मों मे सक्रमण का जो काम आजकल हो रहा है उससे स्थिति बहुत बदलती है। औद्योगीकरण के व्यापक विकास की बात ही अलग रही—इससे तो चरित्र-निर्माण की एकदम नई सभावनाओ के द्वार खुलते हैं। मेरे विचार में

बच्चो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा का, चरित्र-निर्माण का केंद्रीय प्रश्न है उनके श्रम का सगठन। हम जानते है कि किस प्रकार श्रम-सगठन वयस्को को शिक्षित करता है।

देहात को ले। देहात मे निजी किसानी खेती और कारोबार निश्चित विश्वदृष्टिकोण, निश्चित चरित्र, सभी प्रश्नो के प्रति निश्चित रुख बनाता है। हम "छोटे मिल्की की मनोवृत्ति" की बात करते हैं। इसका क्या अर्थ है? इसका अर्थ यह है कि आदमी घटनाओ के मूलभूत सामान्य सिद्धात नही समझता, बुनियादी सवाल नही पहचानता, वह अपने इर्द-गिर्द थोडी दूर तक, केवल अपने कारोबार को ही देखता है और अपनी छोटी-सी मिल्कियत के मापदड से ही सब कुछ नापता है।

हम जानते हैं कि देहात मे अक्सर कैसे एक मिल्की का दूसरे से झगडा होता है, किस तरह औरते बेबात को ही लडती-झगडती रहती हैं, उनके विचार अपनी चहारदीवारी से आगे नही निकलते और किस तरह लघु किसान सोचता-विचारता है "हर कोई अपना खयाल रखता है, भगवान सबका"। लघु किसानी अर्थव्यवस्था मे यही मनोवृत्ति बनती है। लोग श्रम के नये रूपो, नये सगठन रूपो को नहीं समझ पाते हैं। हर कोई अपनी खातिर जीता है और तब, बेशक भगवान, उसके लिए मानी रखता है। फसल मारी गई, तो यह "भगवान का शाप है हम क्या कर सकते है"।

ऐसा किसान कारखाने मे काम करने आता है। वह किसान मशीनीकृत उत्पादन-कार्य, श्रम-सगठन, श्रम-विभाजन देखता है यह देखता है कि किस प्रकार सारा काम निश्चित योजना के अनुसार नियमबद्ध और सुसगठित ढग से होता है, किस तरह एक आदमी का काम दूसरे आदमी के काम से जुडा होता है। हर कोई अपने को एक सामान्य यत्र का पुर्जा समझने लगता है। तब कारखाने मे काम करने आया किसान यहा के वातावरण मे कुछ दिनो तक पगने के बाद हर चीज को दूसरे ही नजरिये से देखने लगता है। वह अब अपने सीमित दायरे मे नही बल्कि सामान्य हितो की दृष्टि से देखने लगता है। मजदूर वर्ग अग्रणी वर्ग क्यो है? क्योंकि बडे उत्पादन की, कारखाने मे काम की परिस्थितिया उसे सामूहिकतावादी बनाती है। धर्म के मामले मे भी ज्यादातर मजदूर जो काफी अरसे से कारखाने मे काम कर रहे है इतने धर्मपरायण

नही रहते, क्योंकि वे प्रति दिन यह देखते है कि लोहे को, कच्चे माल को मशीनो मे सगाधित करने के, मशीनों की मदद से श्रम-सगठन के क्या परिणाम होते है। उनमे भौतिकवादी विश्वदृष्टिकोण अधिक आसानी से बनता है।

अपने काम के शुरू मे कोई पांच साल तक मैं रविवारीय सध्या स्कूल में अध्यापक रही। मैने वहा देखा था कि किस प्रकार किसान जब स्कूल मे आता है, तो शुरू-शुरू मे वहा जो कुछ बताया जाता है वह सब सुनने तक से डरता है, लेकिन साल भर तक कारखाने में काम कर लेने पर उसका नजरिया बिल्कुल बदल जाता है। . जब आदमी के देखते-देखते लोहे से सूक्ष्मतम औजार, सूक्ष्मतम मशीन बनाई जाती है, *तो वह प्रविधि की, सगठन की, समुदाय की शक्ति समझने लगता है।*

यही कारण है कि कारखानो मे तपा-मजा मजदूर वर्ग ही वह वर्ग है जो सभी सामाजिक सबंधों को भी अधिक अच्छी तरह समझता है और उसमें से ही अग्रणी वर्ग बनता व सुदृढ होता है।

अब यह देखे कि आज क्या हो रहा है। देश का औद्योगीकरण मजदूर वर्ग की शक्ति बढा रहा है। १५ वी काग्रेस के बाद हम सामूहिकीकरण के जिस काम की पूर्ति के द्वार पर पहुच गये हैं, उसका क्या परिणाम है? इसका परिणाम यह है कि पुरानी छोटी-छोटी खेतियो का, बाप-दादाओ से धरोहर में मिले श्रम के पुराने रूपो का विघटन हो रहा है और नई विशाल खेती किसानो का विश्वदृष्टिकोण नये *ढग से* पुनर्गठित कर रही है। अब उदीयमान पीढी के कम्युनिस्ट चरित्र-निर्माण के लिए अत्यत अनुकूल परिस्थितिया बन गई हैं। समय के साथ ये परिस्थितिया और भी अधिक अनुकूल होती जायेगी। लेकिन यह समझने के लिए कि हमें बच्चो की कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा, कम्युनिस्ट चरित्र-निर्माण कैसे करना है, हमे इस काम की अलग-अलग कड़ियो पर गौर करना होगा।

पुराने जमाने मे जब शिल्प, घरेलू उद्यम और लघु किसानी कारोबार का प्रभुत्व था, तब परिवार बहुत बडी भूमिका अदा करता था। किसान परिवार में लड़का छोटी उम्र से ही अपने माता-पिता का, सारे परिवार *का श्रम देखता था। अपना काम दिखाकर उसे शिक्षा दी जाती थी,* लेकिन वह यह नही जानता था कि प्रकृति की किसी परिघटना को कैसे समझा-समझाया जा सकता है। श्रम-कौशल तो वह बचपन से ही

सीखता था—आठ साल की उम्र मे बच्चे को कई काम करने आते थे। घरेलू उद्यम या शिल्प को ले। यहा बेटा बाप को काम करते देखता था और इस तरह यह काम करना सीखता था। पहले परिवार ही श्रम-शिक्षा देता था। और अब? अब मजदूर और सामूहिक फार्म के किसान का श्रम घर से बाहर होता है, हम देखते हैं कि परिवार आर्थिक इकाई नही रह गया। मजदूर कारखाने मे श्रम करता है और बच्चा यह नही देखता कि काम कैसे होता है। घर पर वह बूढ़ी दादी के सरक्षण मे रहता है, जो अक्सर उसे बेसिरपैर की बाते सुनाती है, या मा के प्रभाव मे, जो स्वय भी कारखाने मे काम नही करती, और यदि मा काम करती है तो बच्चा पूरी तरह गली-मोहल्ले के प्रभाव मे रहता है।

इस तरह कारखाने का वयस्क मजदूर पर जो चरित्र-निर्माणकारी प्रभाव पड़ता है वह बच्चे पर नही पड़ता। हम देखते हैं कि किसान परिवार मे भी वही प्रक्रियाए होने लगी हैं। जब किसान बड़े मशीनीकृत सामूहिक या राजकीय फार्म मे शामिल होते है तो परिवार की वह भूमिका नही रहती जो पहले वह श्रम-शिक्षा के मामले मे, श्रम द्वारा चरित्र-निर्माण के मामले मे अदा करता था। यदि हम दफ्तर के कर्मचारी के परिवार को, यानी शहर के ग़ैर-मजदूर परिवार को ले तो ऐसे परिवार मे यदि श्रम-शिक्षा है तो यह गृहस्थी के कामो के गिर्द ही सीमित है: झाड़ू दे दो, खाना बनाने मे मदद करो, सौदा ले आओ, वगैरह। इस प्रकार यह शिक्षा, यह श्रम-शिक्षा एक तरह से आत्मसेवा तक ही सीमित है। अब जबकि हम बड़े भोजनालय, आदि खोल रहे है तो यह श्रम-शिक्षा भी जाती रहती है।

आजकल हमारे यहा ही नही, पूजीवादी देशो, उदाहरणत जर्मनी मे भी यह कहा जा रहा है कि उद्योग के, महिला श्रम के विकास के प्रभाव के कारण परिवार का प्रभाव बहुत क्षीण हो गया है, क्योकि परिवार अब वैसी श्रम इकाई नही रहा, जैसी कि वह पहले था। इसका अर्थ यह नही है कि परिवार का विलोप हो रहा है, लेकिन वह उस तरह की श्रम इकाई नही रहा जैसी कि पहले था, उसका प्रभाव क्षीण पड़ रहा है।

आज बाल-श्रम के सिलसिले मे हम क्या देखते हैं? देहात मे बाल-

श्रम का अध्ययन करते हुए हम पाते हैं कि कुलकों के खिलाफ हम जो संघर्ष कर रहे हैं, निजी खेती मे उजरती श्रम के उपयोग का जो परिसीमन हम कर रहे हैं उसका यह नतीजा हो रहा है कि मंझोला किसान, जो अभी भी अपनी अलग खेती कर रहा है, उजरती श्रम का उपयोग करने से डरता है, मशीनें उसके पास हैं नहीं, सो उसे सभी काम मामूली साज-सामान की मदद से खुद ही करने पड़ते हैं। इसका नतीजा यह है कि बच्चों पर उनकी सामर्थ्य से अधिक काम थोपा जाता है। बच्चों से पूछो कि वे कैसे काम करते हैं, तो पता चलता है सुबह ६ बजे से शाम ६ बजे तक। ऐसा श्रम बच्चे की सामर्थ्य से एकदम बाहर है। परिणामस्वरूप बच्चा घर छोड़कर चला जाता है। इससे भी इस बात की पुष्टि होती है कि श्रम-शिक्षा के मामले मे परिवार का प्रभाव क्षीण हो रहा है।

लेकिन यह प्रभाव दूसरे अर्थों मे भी क्षीण हो रहा है। हमें परिवार के अवांछनीय किस्म के प्रभाव को क्षीण करने के अभूतपूर्व अवसर मिल रहे हैं। उदाहरण के लिए कुलक को लें। पहले ज़माने में वह परिवार में बच्चे को पूरी तरह "अपनी भावना" में पालने की कोशिश करता था। तोलस्तोय ने एक जगह इस बात का बड़ा अच्छी तरह वर्णन किया है कि कैसे कुलक अपने बच्चे को स्कूल नहीं भेजना चाहता था, क्योंकि वह उसे "अपनी भावना में पगाना" चाहता था। अब वह ऐसा नहीं कर पाता है। इसलिए कुलक और उसके परिवार का बच्चे पर, उदीयमान पीढ़ी पर प्रभाव ज्यों-ज्यों घटता जाता है, ज्यों-ज्यों स्कूल का, परिवेश का प्रभाव बढ़ता जाता है।

परिवार के प्रभाव और श्रम-शिक्षा के इस क्षीण होने के विभिन्न पहलू हैं। एक ओर, इसके कारण बेघर बच्चों की संख्या बढ़ती है। प्राय: बच्चा घर छोड़कर चले जाने की कोशिश करता है, क्योंकि परिवार में उसे वह शिक्षा-दीक्षा नहीं मिलती, जो पहले बच्चों को मिलती थी। परिवार का प्रभाव क्षीण होता है। इसके बदले दे क्या मिलता है? अब चरित्र निर्माण परिवार में होता था, परिवार मार्गदर्शन करता था, चाहे वह मिस्त्री का, दस्तकार का या छोटे किसान का परिवार होता था तो स्कूल का केवल एक कार्यभार होता था— शिक्षण। पहले यही कहा जाता था अध्यापक पढ़ाता है, छात्र पढ़ते

है। स्कूल में पढ़ना, लिखना, गिनना, आदि सिखाया जाता था। लेकिन श्रम करना, कोई काम करना वहां नहीं सिखाया जाता था। सो, इस बात की कि आम स्कूल श्रम की शिक्षा नहीं देते थे (केवल व्यावसायिक विद्यालय में श्रम की शिक्षा दी जाती थी) – इस बात की स्कूलों पर और हमारे सभी बाल-प्रतिष्ठानों पर निश्चित छाप पड़ती थी। इस प्रकार स्कूल की वह चरित्र-निर्माणात्मक भूमिका नहीं थी, जो उसे अब प्राप्त होने लगी है।

अब चूंकि उत्पादन के स्वरूप में परिवर्तन के कारण परिवार का प्रभाव क्षीण हो रहा है, सो स्कूल अपार चरित्र-निर्माणात्मक महत्व पा रहा है। हमारे सम्मुख ये प्रश्न उठ रहे हैं कि स्कूलों में, बाल-प्रतिष्ठानों में श्रम का प्रबंध कैसे किया जाये। हम सार्विक शिक्षा की ओर बढ़ रहे हैं। अब यह सार्विक शिक्षा कोई दूर भविष्य की बात नहीं रह गई, यह अब निकट भविष्य की बात है, एक यथार्थ है। सार्विक शिक्षा का अर्थ यह है कि सारे बालगण पर स्कूल का प्रभाव होगा। सो महत्वपूर्ण बात यह है कि न केवल स्कूल के प्रभाव को ध्यान में रखा जाये, स्कूल में न केवल निश्चित ज्ञान दिया जाये, बल्कि स्कूल श्रम-स्कूल हो और उसमें श्रम का अध्यापन इस तरह हो कि वह कम्युनिज़्म की भावना में शिक्षित करे।

यही कारण है कि कम्युनिस्ट पार्टी के कार्यक्रम में जनशिक्षा के परिच्छेद में श्रम-स्कूल के अस्तित्व की आवश्यकता इंगित की गई है, मात्र श्रम-स्कूल की नहीं, बल्कि पोलीटेक्निकल स्कूल की, यानी ऐसे स्कूल की जिसमें श्रम की शिक्षा नये ढंग से दी जाती है।

यह स्कूल किस तरह श्रम की नई शिक्षा देता है? इसे श्रम-शिक्षा कैसे देनी चाहिए? हमारे यहां व्यवहार में जो स्थिति बनी है, मैं उसकी नहीं, बल्कि मार्गदिशा की बात कर रही हूं। इस स्कूल को श्रम-शिक्षा किस प्रकार देनी चाहिए? इसे यह देखना चाहिए कि आज कारखाने में, बड़े फार्म में, विशाल उद्यम में कैसे श्रम की आवश्यकता है, विशाल उत्पादन कार्य में लगे कर्मी में कैसे ज्ञान की, किन योग्यताओं की अपेक्षा की जाती है।

पहले स्थिति कुछ भिन्न थी। बेशक शिल्प का हुनर सीखने के लिए, उसके औज़ार से काम लेना सीखने के लिए सभी शिक्षा की

आवश्यकता थी। यदि हम सामूहिक फार्मों के काम को देखें, तो हम पता चलेगा कि वहा किस बात की कमी है। वहां श्रम के तौर-तरीक का अभाव है, किसानों को उत्पादन के औजारों से काम लेना, श्र समय का नियोजन करना, काम का बटवारा करना, काम के लि आवश्यक गति निर्धारित करना नहीं आता।

सामूहिक फार्मों मे काम करने गये मजदूरों को निम्न बात प खास तौर से हैरानी होती है। एक ट्रैक्टर खड़ा है। जाड़ों के दिन है ट्रैक्टर हिम से ढका खडा है, किसी को यह खयाल नहीं आता कि ट्रैक्टर को छप्पर तले खडा करना चाहिए, कि खुली जगह पर हि मे खड़ा-खडा वह खराब हो जायेगा। किसी को इसकी परवाह नह कि ट्रैक्टर खराब हो जायेगा या नहीं, कोई यह नहीं सोचता कि श्र का विभाजन किस तरह करना विवेकसगत होगा। आजकल 'ट्रैक्ट की सभाल' नाम का अखबार निकलता है। यह अखबार क्यों निकालन पड रहा है? क्योंकि सामूहिक किसान मे अभी श्रम की वह समझ नही है, जो मजदूर मे है, उसके तौर-तरीके उसे नहीं आते। इ आजकल हमारे श्रम-स्कूल मे यह प्रयास किया जा रहा है कि छात्र श्रम के तरह-तरह के औजारों से काम लेना मोटे तौर पर सीख जायें कि वे श्रम-प्रक्रियाओ को समझने लगें यह काम ऐसे क्यो किय जाना चाहिए, किसी और ढग से क्यों नही, इत्यादि।

इस सबध मे मजदूर विराट भूमिका अदा कर सकते हैं, क्योंकि उन्होने कारखाने मे तत्सबधी प्रशिक्षण और अभ्यास पाया है। सो हमें यह कोशिश करनी चाहिए कि हमारे स्कूल, मजदूर समूह के साथ किसान समूह के साथ सबधित हो, ताकि मजदूर और सामूहिक किसान अपना श्रम-अनुभव स्कूल को प्रदान करें। ऐसा होने पर शिक्षा-दीक्षा का सच्चा कार्य हो सकेगा। अब हमें मिलो, कारखानो, बड़े-बड़े और सुव्यवस्थित राजकीय एव सामूहिक फार्मों के मेहनतकशों को स्कूल मे श्रम के अध्यापन के काम में लगाना चाहिए, क्योकि यदि हम स्कूल में बाल-श्रम का प्रबध पुराने ढग से करेगे तो इसमे कुछ हाथ नहीं लगेगा।

पुराने ढग के बाल-घर मे साज-सामान भी है, श्रम का अध्यापन भी है, लेकिन वहा की किशोर छात्रा शिकायत करती है: "मैं छा

साल से बाल-घर की कार्यशाला मे जा रही हू। इतने सालो से बस एक ही काम सिखाया जा रहा है – काज बनाना"। शिल्प विद्यालयो मे ऐसे ही होता था श्रम के किसी एक क्षेत्र की शिक्षा दी जाती थी और बरसो तक एक ही काम करना सिखाया जाता था। बरसो तक लडका कोई एक तस्वीर बनाता था या किसी काम का कोई एक अश करता था।

लेकिन अब ऐसा होना चाहिए कि छात्र भाति-भाति के श्रम के लिए तैयार हो, कि स्कूल मे वह जो शिक्षा पाये उससे वह श्रम सबधी तौर-तरीके सीखे। यह बात बहुत महत्वपूर्ण है कि हमारे स्कूल पुराने ढग के स्कूल न हो, कि वे एक तरह की उत्पादन इकाई हो, लेकिन उस तरह की नही जैसे कि परिवार या लघु किसानी कारोबार या लघु शिल्प उद्योग-धधा था, बल्कि दूसरी ही किस्म की।

स्कूल किसी कारखाने या बडे सामूहिक फार्म या राजकीय फार्म से सलग्न होना चाहिए और वहा छात्रो की मदद से उत्पादन कार्य का निश्चित भाग इस प्रकार किया जाना चाहिए कि स्कूल स्वय अपने आप मे एक उत्पादन इकाई हो। आगे मै इस बात की चर्चा करूगी कि ऐसी उत्पादन इकाइयो की क्या विशिष्टता है, लेकिन अभी हमे स्कूल की किस्म ही बदलनी है।

यदि हम यह सोचते है कि पुराने ढग से स्कूलो मे शिल्प सिखाना ही असल काम है, तो हम चरित्र-निर्माणात्मक श्रम को उचित स्तर पर नही रख पायेगे। यदि जिल्दसाज बैठा खुद जिल्दे बाधता रहता है और लडके देखते रहते है तो इससे कोई लाभ नही होने का, यह कोई श्रम-शिक्षा नही होगी, चरित्र-निर्माणात्मक श्रम नही होगा। आवश्यकता इस बात की है कि श्रम का अध्यापन आधुनिक ढग से हो। यह समझ अक्सर नही पाई जाती।

फैक्टरी-कारखाना शागिर्दी स्कूल कारखाने से जुडा माना जाता है, लेकिन कारखाने के साथ उसका कोई सगठनात्मक सबध नही है। कारखाना स्कूल के लिए पैसे देता है और वहा कारखाने के मजदूरो के बच्चे पढते है – बस यही सारा सबध है। कारखाने का अलग अस्तित्व है, स्कूल का अलग। स्कूल मे बढईगिरी की शिल्प कार्यशाला खोली गई है, जबकि कारखाने मे आधुनिक मशीने है और वहा बिल्कुल

दूसरी ही चीज़ों का उत्पादन होता है।

तो मतलब यह है कि हमे अपने शिक्षा प्रतिष्ठानों को, स्कूलों की कार्यशालाओ को बड़े उत्पादन के साथ जोड़ना है, तब इनका अपार शैक्षिक एव चरित्र-निर्माणात्मक महत्व होगा। मशीनीकृत श्र बखूबी शिक्षित करता है। ज़रा देखिये कि सही ढग से, नये ढग आयोजित श्रम-शिक्षा का कितना महत्व है। मास्को से थोड़ी दूर कोल्नि शहर मे एक स्कूल है। यहां उन किशोरों को लिया जाता है, ज श्रमिक परिवार से निकल गये, आवारागर्दी करने लगे, अपराध कर लगे – टेढे किशोर हैं ये।

तो यहा क्या किया गया है? किया यह गया है। यहा श्रम विद्यालय खोला गया है, मशीनों से सुसज्जित कार्यशालाएं हैं, अनुभव मज़दूरो को निमन्त्रित किया गया है, जो किशोरों को यह दिखा है कि काम कैसे करना चाहिए। इस तरह उनमे शिक्षा की ओर रुझा पैदा हुआ है और निश्चित सगठनबद्धता आई है। सो, जिस किसी यह स्कूल देखा है वह यह मानता है कि यह स्कूल शिक्षा-दीक्षा के चरित्र-निर्माण के काम मे बहुत सफल हो रहा है।

ऐसे स्कूल और भी हैं। यारोस्लाव्ल के इलाके मे एक बाल-घ था। इसका प्रधान एक कम्युनिस्ट था। शुरू मे वह हमें लिखता थ कि बच्चे किसी तरह बस मे नही आते। हमारा पत्र-व्यवहार हो लगा। वह श्रम-शिक्षा का सही प्रबध करने में सफल रहा, बाल-घ मे मशीनो से सुसज्जित वर्कशापे खोली गईं और इसके बाद उसने लिखा कि वह खुद बच्चो को नही पहचान पाता। "वे हर बात के लिए राजी है, सभी काम स्वयं सहर्ष करते हैं।" श्रम बदला, सगठन बदला और स्कूल का शैक्षिक, चरित्र-निर्माणात्मक महत्व भी बदल गया। यह बात बहुत मानी रखती है।

लेकिन बात केवल यही नही है। कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा निश्चित श्रम-शिक्षा मे ही निहित है। छोटा मिल्की हर बात को अपने नज़रिये से देखता है· "यह मेरे लिए फायदेमद है। यह मेरा है।" लेकिन कारखाने का मज़दूर कैसे देखता है? मिसाल के लिए कम्युनिस्ट सुब्बोत्निक या समाजवादी प्रतियोगिता से। यह सब मज़दूर को कैसे शिक्षित करता है? इस तरह कि आज अक्तूबर क्रांति के बारह साल बाद

...जदूरगण कारखाने को अपनी सतान मानते है, वे अपने को इस
...ान के लिए उत्तरदायी समझते है कि कारखाने मे काम कैसे चल
...हा है यानी यह वह बात है, जिसे लेनिन ने सचेतन अनुशासन
...कहा था, डडे का, जबरदस्ती का अनुशासन नही, बल्कि वह सचेतन
...अनुशासन जिसके बिना समाजवाद का निर्माण नही हो सकता।
...ही सच्चा कम्युनिस्ट अनुशासन है।

दूसरी ओर, हम अक्सर देखते है कि सामूहिक फार्म मे अभी
...सा अनुशासन नही है। स्कूलो और समाजवादी प्रतियोगिता
...जैसी लबी शिक्षा की आवश्यकता है, जो सारे सामूहिक किसानो
मे श्रम के प्रति सचेतन रुख विकसित करेगी। यही कम्युनिस्ट शिक्षा-
दीक्षा का मर्म है। श्रम के प्रति सचेतन रुख होने पर ही यह समझ
आती है कि प्रत्येक का श्रम सबके सामान्य श्रम का एक अश है।
यहा परस्पर सहायता दूसरी ही बुनियाद पर बनती है, इस आवश्यकता
की समझ के आधार पर कि श्रम के सही सगठन के लिए यह परस्पर
सहायता होनी चाहिए, क्योकि परस्पर सहायता सामूहिक श्रम का
अभिन्न अग है। सामूहिक श्रम एकजुटता की भावना पैदा करता है।

ऐसा व्यक्ति, ऐसा किशोर, जिसे हम सचेतन सामूहिकतावादी
बना पायेगे, वह हर चीज को दूसरी ही नजरो से देखेगा। कम्युनिस्ट
श्रम-शिक्षा पूर्णत धर्मविरोधी शिक्षा-दीक्षा है। छोटा मिल्की हर बात
से डरता है, उसे हर चीज समझ से परे, रहस्यमय, मायोगिक लगती
...। लेकिन सामूहिकतावादी समझता है कि श्रम का सगठन ही बात
...ा मर्म है। उसे इजीनियर चाहिए, काम के साथी चाहिए, श्रम
...ा सही सगठन चाहिए।

सामाजिक प्रश्नो को भी सामूहिकतावादी व्यक्ति नये ढग मे
देखने लगता है।

सामूहिकता की भावना मे शिक्षित, सचेतन अनुशासनवाला व्यक्ति
सामाजिक दृष्टि से भी अनुशासनबद्ध होता है, सभी सामाजिक प्रश्नो
के प्रति उसका रुख भिन्न होता है। यह एक नितात महत्वपूर्ण चरित्र
निर्माणात्मक कार्यभार है।

इसके अलावा, हमारी समाजवादी अर्थव्यवस्था पूजीवादी अर्थ-
व्यवस्था से किस बात मे भिन्न है?

यह इस तरह नही चलती कि एक पूंजीपति दूसरे से मुक़ाबला करता है, दूसरे से टुकड़ा छीनने की कोशिश करता है, ताकि उ‍ अपना मुनाफ़ा बढ़े।

हमारे यहा ऐसी पूंजीवादी स्पर्द्धा नही है। यह हम जानते अब हम सारी अर्थव्यवस्था के लिए एकीकृत योजना बनाने के पर खड़े है। इस विशाल कदम के महत्व का अवमूल्यांकन नहीं किया जा सकता। लेकिन हमारी योजना से हम और बहुत-सी अपेक्षाए कर सकते हैं। साथियो, बात यह नही है कि हम कहीं बोल्शोई थियेटर मे अपनी योजनाओ पर तालिया बजायें और कहे कि योजनाबद्धता बहुत अच्छी चीज़ है। हमे इस सिलसिले में शिक्षा-दीक्षा का अपना सारा काम सही दिशा मे बढाना है। सो अब शिक्षक नियोजन को बहुत महत्वपूर्ण मानने लगे हैं।

प्राथमिक विद्यालय को ले। कोई छोटा-सा काम करना है। मान लीजिये, उसे एक दिन मे करना है। आठ साल का बच्चा है, वह अकेला काम नही करेगा, बल्कि, मान लीजिए, उनके ग्रुप में पांच बच्चे होगे। यह ग्रुप अपना काम कैसे करेगा? बच्चे अपनी शक्ति का ध्यान नही रखते, उन्हें सदा यही लगता है कि वे सब कुछ कर सकते है। उन्हे अपनी शक्ति की, अपनी सामर्थ्य की समझ नहीं है, वे जोश मे बह निकलते है। लेकिन यदि एक बार वे विफल रहेंगे, दूसरी बार विफल रहेगे, तो देख लेंगे कि उन्होंने अपनी शक्ति का अतिमूल्यांकन किया था कि उनकी योजना ठीक नही है।

यहा बडी कक्षा के बच्चो की मदद चाहिए। दूसरी कक्षा के बच्चो के लिए, हो सकता है, एक दिन के काम की नही, पाच दिन के काम की योजना बनानी चाहिए। और वहा ग्रुप मे पाच नहीं, दस बच्चे होगे। माध्यमिक विद्यालय के छात्रो के लिए कार्यभार कहीं अधिक जटिल हो सकते हैं। यह सोचा जा रहा है कि सारे स्कूली जीवन में नियोजन का स्थान बनाया जाये। इसका अपार शैक्षिक महत्व है क्योंकि इस तरह एक साथ ही कर्मी भी और स्वामी भी शिक्षित होता है, दूसरे शब्दों मे स्कूल के बाद जब छात्र उत्पादन-स्थली पर काम करने आयेगा तो वह निर्देशो का पालन मात्र करनेवाला कर्मी नहीं होगा, जो बस हैंडल घुमाया करेगा, बल्कि वह साथ ही

उत्पादन समिति में काम कर सकेगा, भीतरघात नहीं होने देगा, इत्यादि। यही बात सामूहिक फार्म के लिए भी है। यहां काम करने वाला भूतपूर्व छात्र न केवल बेलचे से काम कर सकेगा, बल्कि ट्रैक्टर का उपयोग भी कर सकेगा, वह ट्रैक्टर को खुले में हिम तले खड़ा नहीं रहने देगा और ऐसा सामूहिक किसान अच्छा स्वामी होगा, जो हर बात के बारे में सोचेगा, अपनी शक्ति, अपनी सामर्थ्य पहचानेगा, जो स्वयं यह जानता होगा कि संगठित सामूहिक श्रम का क्या महत्व है।

यहां यह कहा जाना चाहिए कि श्रम-शिक्षा बच्चों की शक्ति के अनुरूप होनी चाहिए। हर आयु के बच्चों के लिए एक ही मापदंड नहीं हो सकता। ड्राइंग में श्रम की बच्चों की सामर्थ्य बड़ी अच्छी तरह प्रतिबिंबित होती है। देखिये, किंडरगार्टन में और पहली कक्षा में बच्चे कैसे ड्राइंग करते हैं। बनाने लगते हैं एक चीज, बनती है दूसरी। काम भी वे ऐसे ही करते हैं। बच्चा मिट्टी से आदमी बनाने लगता है फिर काम करते-करते वह सोचता है "नहीं, मैं मकान बनाऊंगा।' और वह मकान बना लेता है। बच्चे में न यह समझ [illegible] वह क्या कर सकता है और क्या नहीं, न ही वह कोई लक्ष्य रखके उसे पाने के लिए लगन से काम कर सकता है।

८-६ साल के बच्चे के लिए श्रम वही नहीं है जो वयस्क के। वयस्क के लिए और किशोर के लिए भी श्रम का निश्चित [illegible] लक्ष्य होता है, जबकि बच्चे के लिए श्रम का ध्येय है अपने [illegible] के संसार को जान पाना। इसीलिए उसका श्रम अत्यंत परि-[illegible] होता है। बच्चे का श्रम स्वभाव पर निर्भर श्रम होता है। [illegible] अक्सर श्रम के सभी पहलुओं को नहीं देखता है, सभी पहलुओं [illegible] ओर उसका ध्यान नहीं जाता है। वह कोई काम करने लगता [illegible] इस बीच दूसरी चीज की ओर उसका ध्यान चला जाता है, ध्यान बंट जाता और वह अपना काम भूल जाता है। उसके हाथ में तितली आ [illegible] और वह उसके पंख देखने में लग गया, यह भूल ही गया कि [illegible] क्या काम करना चाहता था, तितली के प्रेक्षण में वह तल्लीन [illegible] गया है।

ये बाल-आयु की विशेषताएं हैं। इन विशेषताओं को ध्यान में रखकर किंडरगार्टन और ८-६ साल के बच्चों को ऐसा काम सौंपना

हो रहा है और सामाजिक शिक्षा-दीक्षा अग्रभूमि में आ रही है, यह बात विशेष महत्व पा लेती है।

हमे अपने बाल-घरो का ढाचा बदलना चाहिए। बाल-घरो का जो जाल है वह किसी काम का नही है। यह बात साफ-साफ कहनी चाहिए। पिछले बरसो के लिए यह बात विशेषत. सच है। हो सकता है कि कुछ अच्छे बाल-घर भी हो, लेकिन कुल जमा बच्चों का जीवन सरस नही है, यह वह जीवन नहीं है, जिसकी उन्हे उम्मीद है। ऐसा सुनने मे आता है कि बच्चे बाल-घर से भाग जाते हैं। ध्यान रहे, ऐसा इसलिए भी होता है कि बच्चा श्रम के मामले में बाल-घर से सतुष्ट नही होता। हमे यह सोचना चाहिए कि किस तरह सभी शिक्षा-प्रतिष्ठानो मे श्रम को स्थान दिलाये, उन्हे अधिक व्यापक बनाये, क्योकि वे अधिकाधिक हद तक उस श्रम-शिक्षा का स्थान लेगे, जो पहले परिवार मे मिलती थी।

यह श्रम-शिक्षा, श्रम द्वारा चरित्र-निर्माण का यह काम कैसे हो? यह विराट कार्यभार है। हमे भाति-भाति के अनेक प्रतिष्ठान चाहिए, केवल बाल-घर नही। हमे कार्यशालाओ, वर्कशापो, तकनीकी केद्रो और बाल-आर्तेलो का प्रबध करना है, बाल-श्रम को अत तक सगठित करना है। यह बुनियादी कडी है। यह वह बात है, जिससे हमे शिक्षा के, चरित्र-निर्माण के इस काम को उच्चतर स्तर पर उठाने मे मदद मिलेगी।

बाल-घरो मे ऐसी बेतुकी बाते क्यो होती है? क्योकि वहा या तो श्रम-शिक्षा है ही नही, या उसका ठीक प्रबध नही है। इस प्रश्न को लेकर बच्चो को ठीक से सगठित नही किया गया है, इत्यादि।

मेरे विचार मे इस सम्मेलन मे हमे इन प्रश्नो पर बहुत ध्यान देना और करना चाहिए। यह याद रखना चाहिए कि मजदूरो और किसानो की मदद के बिना हम कुछ भी नही कर पायेगे।

इन सब बातो को प्रतिबिंबित करना ही मेरी रिपोर्ट का ध्येय था। अब मुझे इतने पर समाप्त करने की आज्ञा दे और यह कामना करने दें कि सम्मेलन के सहभागी इन प्रश्नो पर विशिष्ट ध्यान दे।

केंद्रीय समिति के स्कूल विभाग[1] के, साथी म० प० मालिनोव[2] के नाम पत्र

पहली और दूसरी कक्षाओं मे श्रम बहुत हद तक खेल से, स्वसेवा से संबंधित होगा; तीसरी-चौथी कक्षाओं मे श्रम का स्वरूप उत्पादक होना चाहिए। बच्चे अपने श्रम की उपयोगिता जितनी अधिक स्पष्टता से देख पायेंगे, श्रम उनके लिए उतना ही रोचक होगा। बालोद्यान या शिशुविहार के लिए, पुस्तकालय के लिए, स्कूल के बाग या खेत के लिए काम में बच्चों का मन लगेगा।

प्राथमिक स्कूल के अधीन एक कार्य-कक्ष होना चाहिए। यह स्कूल के पास ही कहीं स्थित होना चाहिए।

नगर मे श्रम-शिक्षा का सारा वातावरण कहीं अधिक जटिल है। नगर में तो कार्य-कक्ष नितांत आवश्यक है। शायद, स्कूल के पास के रिहायशी इलाके में प्राथमिक कक्षा के छात्रों के लिए कार्य-कक्ष खोलने के लिए बातचीत की जा सकती है।

२) बहुत सारी कठिनाइयां इस बात से पैदा हुई हैं कि पिछले बरसो में हमारे स्कूल अपने आप में सिमटने लगे हैं। प्राथमिक स्कूलों पर यदि इसका प्रभाव बहुत अधिक नही पडता है तो अपूर्ण माध्यमिक और माध्यमिक विद्यालयो पर इसका असर बहुत बुरा पड रहा है।

पहले जहा स्कूल का *आधा काम स्कूल की चारदीवारी के बाहर* होता था, वही अब स्कूल सक्रिय जीवन से कट गया है, जिससे कि समाजोपयोगी श्रम का आयोजन बहुत कठिन हो गया है। अब उपयोगी श्रम, उत्पादक श्रम श्रम-कक्षाओं के लिए उपयोगी वस्तुएं बनाने तक ही सीमित हो गया है, इस श्रम की उपयोगिता एक सवाल ही है, आवश्यकता इस बात की है कि श्रम की उपयोगिता स्कूल की चारदीवारी से बाहर हो, कि उपयोगी वस्तुए बालोद्यानो के लिए, पडोसी संगठनो–रिहायशी समिति, वयस्को के विश्राम-कक्ष के लिए, पुस्तकालय, आदि के लिए बनाई जाये।

३) पांचवीं से सातवीं कक्षाओं के लिए स्कूली कार्यशालाएं, वर्कशापें विशेषतः महत्वपूर्ण हैं। उनकी आवश्यकता शैक्षिक ध्येयों द्वारा निर्धारित है। १२ से १५ वर्ष तक की आयु, संक्रमण की यह आयु चरित्र-निर्माण की दृष्टि से निर्णायक आयु होती है। इसमे सही ढग से आयोजित श्रम विराट भूमिका अदा करता है। इस आयु मे श्रम की उत्पादकता, उसका सामूहिक स्वरूप, पुर्जों के समाधन का अभ्यास, श्रम की समस्–

ये सब बातें विशेष भूमिका अदा करती हैं। इस आयु में उत्पादक श्रम को "श्रम-प्रक्रियाओं" का शिक्षण बना देने में श्रम के प्रति नफरत पैदा होती है। इस आयु में श्रम-विभाजन विशेषत महत्वपूर्ण होता है। यह बात बहुत मानी रखती है कि एक ही चीज पर कुछेक लोग काम करें, ताकि काम कर रहा किशोर यह महसूस करे कि उसके काम पर सबकी सफलता निर्भर है। यदि वह काम का अपना हिस्सा ठीक से पूरा नहीं करेगा तो इसका असर सबके काम पर, सारे काम के परिणाम पर पड़ेगा। संक्रमणात्मक आयु विशेष अनुशासनहीनता की आयु होती है और यहां श्रम सामाजिक (जैसा कि लेनिन इसे कहते थे) अनुशासन विकसित करने में अद्वितीय भूमिका अदा कर सकता है। यहां श्रम में समाजवादी प्रतियोगिता के तत्वों का समावेश करना चाहिए (लेकिन बड़ी सावधानी से) और यह प्रतियोगिता अलग-अलग छात्रों की नहीं, बल्कि उनके छोटे-छोटे समुदायों की होनी चाहिए। इस आयु में ही अपने श्रम के लिए उत्तरदायित्व की चेतना और श्रम के सही संगठन के महत्व की चेतना विकसित करनी चाहिए, श्रम-संगठन के प्रश्नों में रुचि जगानी चाहिए। संक्रमणात्मक आयु का लक्षण है ब्योरों में रुचि (बच्चों के चित्र लाक्षणिक होते हैं बारह साल तक की आयु में बच्चे आम तस्वीरें बनाते हैं, परिप्रेक्ष्य, अनुपात को समझना सीखते हैं, संक्रमणात्मक आयु में बच्चे छविचित्र अलग-अलग मकान, वृक्ष, आदि बनाते हैं, चित्र में बारीकी लाने की कोशिश करते हैं), संक्रमणात्मक आयु के बच्चों का श्रम के प्रति रुख अधिक गहन होता है। इस आयु में ही श्रम का दूसरे विषयों (भौतिकी, रसायन, जीवविज्ञान, गणित) के साथ संबंध जोड़ना और श्रम की समझ पाना विशेषत महत्वपूर्ण है। इस आयु में श्रम की विभिन्न शाखाओं में रुचि जगाना, मानसिक और शारीरिक श्रम में संबंध जोड़ना खास तौर से महत्वपूर्ण है।

कार्यशालाओं में काम की योजना शिक्षाशास्त्र की दृष्टि से बहुत सोच-समझकर तैयार की गई होनी चाहिए, वह संयोगिक नहीं होनी चाहिए, वह पोलीटेक्निकल होनी चाहिए, यहां कारीगरी से बचना खास तौर पर मानी रखता है। इन कक्षाओं में श्रम को कारखानों, फार्मों, आदि की यात्राओं से जोड़ा जाना चाहिए, लेकिन ये यात्राएं

गैर-सपाटा नहीं होनी चाहिए, इनका ध्येय श्रम की दृष्टि से, पोली-टेक्निकल शिक्षा की दृष्टि से छात्रों को विभिन्न उत्पादन कार्यों से परिचित कराना होना चाहिए।

पांचवीं-सातवीं कक्षाओं में कार्यशालाओं, वर्कशापों में श्रम का स्थान श्रम-अभ्यास या किसी प्रतिष्ठान में श्रम नहीं ले सकता।

गर्मियों में बच्चों का श्रम विशेष महत्व रखता है, इसे पायोनियर कैम्पों का स्वरूप बदलना चाहिए, इन कैम्पों में उकताऊ, नीरस जीवन को रोचक, दिलचस्प, आकर्षक जीवन का अंश बनाना चाहिए।

पांचवीं-सातवीं कक्षाओं में श्रम की शिक्षा इस काम के विशेषज्ञों द्वारा दी जानी चाहिए। यहां यह जरूरी है कि उन लोगों को जिन्हें सच्चे अर्थों में काम करना आता है, विशेष पाठ्यक्रम में अध्यापन का प्रशिक्षण दिया जाये, अपूर्ण माध्यमिक विद्यालय में श्रम को शैक्षिक दृष्टि से पेश करना सिखाया जाये।

आठवीं-दसवीं कक्षाओं के छात्रों के लिए स्कूल से बाहर काम करना, जैसे कि फ़ैक्टरी-कारखाना शागिर्दी स्कूल के छात्र करते हैं, उस किस्म का काम करना सभव भी है और आवश्यक भी। इस मामले में स्थानीय परिस्थितियां, उत्पादन का स्थानीय स्वरूप विशेषत: महत्वपूर्ण है, और यहां हर स्थान के लिए यह सोचना चाहिए कि वहां खेतों में, इन या उन प्रतिष्ठानों में लडके-लड़कियों के काम का प्रबंध कैसे किया जा सकता है।

वयस्क मजदूरों और किसानों के साथ काम विशेषत: महत्वपूर्ण है, जैसा कि लेनिन ने कोमसोमोल की तीसरी कांग्रेस में ज़ोर देकर कहा था।

अब हमारे पास इस मामले में बहुत अधिक सभावनाएं हैं। बड़ी कक्षाओं के छात्रों के श्रम के सगठन में ट्रेड-यूनियनों को गंभीरतापूर्वक भाग लेना चाहिए। उनके साथ मिलकर इस काम का प्रबंध करना चाहिए।

ये हैं कार्यक्रम के सिलसिले में मेरी टिप्पणियां। मैं सोचती हूं कि विभिन्न शाखाओं के अग्रणी कर्मियों के साथ भी श्रम-शिक्षा के बारे में विचार-विमर्श करना चाहिए। वे अच्छे परामर्श दे सकते हैं।

१६३६

हमारे युवाजन "श्रम-जनतन्त्र" के बारे मे बडे अच्छे गीत गाते हैं। लेकिन देश को ऐसा जनतन्त्र बनाने हेतु हमें कथनी को करनी मे बदलने के लिए परिश्रम करना है, इस बात के लिए काम करना है कि हमारे जनतन्त्र में श्रम अभिशाप का नही, सुख का स्रोत बने।

व्यवसाय के चयन का काम ठीक से आयोजित करना चाहिए।

बुर्जुआ देशो मे यह प्रश्न अत्यंत सकीर्ण होकर रह जाता है, वहा इसे मुख्यत टेस्टो (शारीरिक शक्ति, तीक्ष्ण दृष्टि, दिशाविन्यास क्षमता, आदि के टेस्टो) की मदद से हल किया जाता है। बुर्जुआ विज्ञान मे इस सबध मे बहुत कुछ किया जा चुका है। हमें उसकी उपलब्धियो का अध्ययन करना चाहिए और उनमे हमारे लिए जो स्वीकार्य हैं, उनका उपयोग शुरू करना चाहिए। पूजीवादी देशो में तो वर्ग-विभाजन व्यवसाय के चयन को सीमाओ मे जकडता है। हम इन सीमाओ को तोडने के लिए प्रयत्नशील हैं। कुछ हद तक हम इन्हे तोड भी चुके हैं। मजदूरो और किसानों के बच्चो के लिए मजदूर-फैकल्टियो और उच्च शिक्षा-सस्थानो मे दाखिले का प्रबंध इसमे विशेष सहायक हुआ है। लेकिन इतना ही काफी नही है। व्यवसाय का सही चयन ही श्रम को हर्षदायक बना सकता है। सो, स्कूल का सारा काम इस तरह सगठित होना चाहिए कि छात्र को व्यवसाय चुनने मे मदद मिले। यदि स्कूल मे मात्र पढाई होती है तो वहा बच्चों के रुझानो और रुचियो के प्रकट होने के लिए वहा कोई जमीन नही होती। इन्हे दबा दिया जाता है। व्यापक रूप से होनेवाला स्कूल का सामाजिक और श्रम-कार्य ही बच्चे की शक्ति को "मुक्त" करता है, उसे स्वयं अपना ज्ञान पाने, अपनी अभिरुचि, अपना रुझान समझ पाने मे मदद देता है।

लेकिन महत्त्वपूर्ण बात यह है कि यह सचेतन रुचि प्रबल हो पाये सायोगिक न रहकर स्थायी बन जाये।

मेरे विचार मे स्कूलो के अन्तर्गत मडलियों की व्यवस्था इसमें बहुत बडी भूमिका अदा कर सकती है। मडली मे काम करते हुए किशोर सही-सही यह तय कर सकता है कि इस कार्य से उसे कितना सन्तोष होता है, इस काम मे वह किस हद तक मगन हो सकता है।

परन्तु इन मडलियो का काम वैसा नही होना चाहिए, जैसा कि अब है।

यह कहने की तो आवश्यकता ही नहीं कि मडलियो मे भाग लेना अनिवार्य नहीं हो सकता – ऐसा करने पर इनकी सारी सार्थकता जाती रहती है। मडलियो को कक्षा की पढ़ाई का ही एक रूप कतई नहीं बनने दिया जा सकता।

मडलियो मे छात्रो को स्वेच्छा से भाग लेना चाहिए। इस काम का दूसरा पहलू है मडली के सचालन का स्वरूप। कभी-कभी मडली अतिरिक्त पाठ मात्र होती है, उदाहरण के लिए, रसायन का अध्यापक ही तत्संबंधी विषय की मडली का सचालक होता है। ऐसा सगठन सही नहीं है। मडली मे तो छात्रो द्वारा स्वय किया जानेवाला सामूहिक कार्य ही महत्वपूर्ण है। अधिक जाननेवाला कम जाननेवाले की मदद करे। लेकिन मडली तयशुदा रास्ते पर नहीं चल सकती, उसे अपना रास्ता ढूढना चाहिए, स्वय अपना काम आगे बढ़ाना चाहिए, भले ही वह गलतिया करे, लेकिन इन गलतियो से सीखे। मडली का कोई शासक नहीं होना चाहिए। मडली को सहायता की जरूरत है, सरक्षण
ो।

से बाद मडलियो के स्वरूप का सवाल आता है। हमारे यहा कोटी किस्म की मडलिया है। नाटक मडलिया, क्रीडा मडलिया, यक और प्रकृतिप्रेमी मडलिया है, अब कृषि, सहकारिता और : मडलिया भी बनने लगी हैं।

मै सोचती हू कि अध्यापन मडलिया, विद्युतनकनीकी, यात्रिक, भाति-भाति की तकनीकी मडलिया भी होनी चाहिए और विभिन्न रन-कार्य करनेवाली मडलिया भी। मडलिया जितनी अधिक विविध- ई होगी उतनी ही आसानी से किशोर अपनी पसद की मडली सकेगा और उसमे अपनी क्षमता का विकास कर सकेगा।

सही ढग से आयोजित मडलिया बच्चो की रुचियो के विभेदन मे, ' अधिक गहन बनाने मे सहायक होती है और किशोर के लिए पेशे का चयन बहुत आसान बना सकती है।

इस सिलसिले मे हमने अब तक जो अनुभव पाया है, उसका ! व्यापक स्तर पर सामान्यीकरण करना, उसका मूल्याकन करना और लोगो को उससे परिचित कराना चाहिए। भाति-भाति की अधिक से अधिक मडलिया बनाई जाये, उनके लिए अनुमानित योजनाए तैयार

समाजवाद के निर्माण के सभी कार्यों के लिए कर्मी तैयार करें

व्यवसाय का चयन एक सबसे अधिक महत्वपूर्ण प्रश्न है। प्रत्येक व्यक्ति जो कुछ दे सकता है उसका अधिकतम तभी देता है जबकि वह अपनी रुचि के क्षेत्र में काम करता हो जहां उसकी प्राकृतिक प्रतिभा पूर्ण रूप से मुखरित हो सकती हो। बेशक ऐसे क्षण भी आते हैं जब जिस काम में खास दिलचस्पी नहीं है वह भी करना पड़ता है। हमारे नौजवान कोमसोमोल-सदस्यों का यह गीत बिल्कुल सही है 'वतन जो मांगे तो जवानी भी कुर्बान कर दे।' इसीलिए तो वे असली नौजवान हैं कोमसोमोल-सदस्य हैं। वे ऐसे गीत गाते ही नहीं ऐसा करते भी हैं।

लेकिन यदि हम या उस काम के लिए नियुक्त किये जा रहे युवक अथवा युवती की प्रतिभा और रुचि की ओर हम नियमत ध्यान न दें तो यह एकदम बेतुकी बात होगी।

आजकल सभी नौजवान मिलों-कारखानों में काम करना चाहते हैं, [illegible] आदि बनना चाहते हैं। तथापि [illegible] हैं। यह [illegible] सभी [illegible] हैं। [illegible] और बड़े-बड़े [illegible] व्यवसाय [illegible] ही [illegible] है। [illegible] मिलों-कारखानों [illegible] के निर्माण कार्य का [illegible] है। समाजवादी [illegible] का निर्माण नौजवान को [illegible] करना है। [illegible] के [illegible] कहीं अधिक [illegible] इनके [illegible] जरूरी होगा है। [illegible]

...

नही होगे, अगर अकेले बैठ कर काम करना होता है। और फिर कारखाने में काम करने का मतलब है—तुम सर्वहारा हो, सर्वहारा अग्रणी वर्ग है, जिसके सम्मुख समाज के पुनर्गठन का कार्यभार है। यह बात भी निश्चित भूमिका अदा करती है कि आज मजदूर वर्ग की स्थिति डाक्टरो, शिक्षको, आदि से कही अधिक अच्छी है। यह बात भी मानी रखती है कि आज मजदूर के लिए उच्च शिक्षा पाना, निश्चित पद पाना अधिक आसान है।

लेकिन हमे क्षण भर को भी यह नही भूलना चाहिए कि हम समाजवादी समाज का निर्माण कर रहे देश मे रह रहे हैं। विराट मिलो, मोटर और ट्रैक्टर कारखानो, बिजलीघरो और धातु कारखानो का निर्माण—यह सब समाजवाद के निर्माण का पूर्वाधार है, उसकी नीव है, यह पूर्वाधार आवश्यक है, किंतु पर्याप्त नही। समाजवाद एक नई व्यवस्था है, इसका अर्थ है उज्ज्वल जीवन, जो सारा सामूहिकतावादी सिद्धातो के आधार पर सगठित है।

१८ दिसबर १९१९ को 'स्मेना' ('नई पीढी') नामक पत्रिका के पहले अक मे लेनिन ने पेत्रोग्राद के युवाजन के नाम अभिवादन सदेश मे लिखा था, "लाल सप्ताह के इन दिनो मे मैं पेत्रोग्राद गुबेर्निया के मजदूर-किसान युवाजन का अभिवादन करता हू।

"नौजवान साथियो, इस दिशा मे अपना काम तेज करो, ताकि अपनी नई, युवा शक्ति के साथ नये, उज्ज्वल जीवन के निर्माण मे लग सको।"[1]

इसके महीने भर बाद मास्को के क्रास्नाया प्रेस्न्या इलाके के मजदूरो और लाल सैनिको को सबोधित करते हुए लेनिन ने कहा "हमने एक महान सघर्ष छेडा है, जो जल्दी ही पूरा नही होगा यह भुखमरी, ठंड और टाइफस के खिलाफ, प्रबुद्ध, उज्ज्वल, सतृप्त और स्वस्थ रूस के लिए मेहनतकश सेनाओ का रक्तहीन सघर्ष है, लेकिन हम इस संघर्ष मे भी वैसी ही निर्णायक विजय पायेंगे, जैसी हमने सफेद गार्डों के खिलाफ सघर्ष मे पाई है।"[2]

कोमसोमोल-सदस्य लेनिन के ये शब्द जानते हैं। उनकी पहल पर सास्कृतिक अभियान चलाया गया और निरक्षरता उन्मूलन के क्षेत्र मे भारी विजय पाई गई। लेकिन क्या निरक्षरता मिटा देना ही सब कुछ

? हमें संस्कृति के, स्वास्थ्यरक्षा, सहकारिता, आहार, आदि क्षेत्रों , विज्ञान के अनेक क्षेत्रों में विराट कार्य करना है। समाजवाद की ारी गहन व्यवस्था के लिए संघर्ष करना है।

लेकिन क्या कर्मियों के बिना यह संघर्ष किया जा सकता है? एक उदाहरण लें। देहातों में पुस्तकों के प्रचार के लिए कोमसोमोल बहुत कुछ कर रहा है। लेकिन इससे भी अधिक करने की आवश्यकता है। पुस्तकालय के काम के लिए बहुत अधिक कौशल चाहिए, साहित्य का और विशेषत कम्युनिस्ट साहित्य का ज्ञान होना चाहिए, यह पता होना चाहिए कि इस क्षण जनसाधारण की रुचि किन प्रश्नों में है, पाठकों की मांगों का आदर करना आना चाहिए। गोर्की का 'मेरे विश्वविद्यालय' उपन्यास पढ़िये और आप देखेंगे कि किस तरह गोर्की बुर्जुआ साहित्य से वह सब पा लेते थे, जिसकी उन्हें, एक सर्वहारा को जरूरत होती थी। हमें पुस्तकें जनसाधारण के लिए उपलभ्य बनानी चाहिए, ताकि उनके लिए ज्ञान के द्वार खुलें, वे मानवजाति की सारी उपलब्धियों को आत्मसात कर सकें।

लेकिन कोमसोमोल का सदस्य होना ही काफी नहीं है, ज्ञान होना चाहिए, लगन से शिक्षा पानी चाहिए, यह नहीं सोचना चाहिए कि कोमसोमोल सदस्य हो गये, तो तुम्हें सब कुछ आ गया। हमें अपने सुशिक्षित लाइब्रेरियन चाहिए – एक, दो नहीं, हजारों। जनसाधारण साक्षर हो गये हैं, उन्हें पुस्तकालयों का व्यापकतम जाल चाहिए।

हम सार्विक शिक्षा लागू कर रहे हैं, कम्युनिस्ट शिक्षा-दीक्षा की, लोगों का बहुमुखी विकास करने की बातें कर रहे हैं, भारी-भरकम ूयक्रम बना रहे हैं, लेकिन क्या कोमसोमोल सदस्य स्कूल का शिक्षक ना अपने लिए सम्मान की बात मानते हैं?

हमारे देश को स्वस्थ, सशक्त देश बनना है। क्या डाक्टरों के ना ऐसा करना संभव है? लेकिन क्या कोमसोमोल सदस्य डाक्टरी ाक्षा पाना चाहते हैं, क्या वे इस विज्ञान की सभी उपलब्धियों पर ाधिकार पाने के लिए अथक परिश्रम करते हैं? जनता की आवश्यकाए बहुत बढ़ गई हैं, लोग सुसंस्कृत जीवन व्यतीत करना चाहते ं, गंदगी में नहीं रहना चाहते, वे चाहते हैं कि उनके पास पुस्तकें हों, ज्ञान हो।

हमें वितरण को, व्यापार को नये, समाजवादी ढंग से संगठित करना चाहिए। समाजवादी वितरण के मोर्चे पर बहुत बड़ी संख्या मे कर्मी चाहिए। यह मोर्चा भी उत्पादक मोर्चे से कम महत्वपूर्ण नहीं है। चूंकि हम समाजवाद का निर्माण कर रहे है, इसीलिए, हमारे यहां बौद्धिक व्यवसायों के कर्मियों की अत्यधिक मांग है। ज्ञान के सभी क्षेत्रों मे, विज्ञान के सभी क्षेत्रों मे हमें नई पीढ़ी मे से, कोमसोमोल सदस्यों मे से कर्मी प्रशिक्षित करने है।

कोई भी हमारे बदले समाजवाद नही बना देगा। लेनिन कहते थे अकेले कम्युनिस्टों के हाथों समाजवाद का निर्माण नहीं किया जा सकता, साथ ही वह यह भी कहते थे कि मार्गदर्शन हमें करना चाहिए न कि हमारा मार्गदर्शन होना चाहिए, वरना हम कहीं के कहीं पहुंच जायेगे। मार्गदर्शन करने का अर्थ हुक्म चलाना, आदेश देना नहीं है। हुक्मो, आदेशो से अक्सर बहुत कम बात बनती है। रास्ता वही दिखाता है, जो काम जानता है, उसे समझता है, काम का मर्म समझता है। काम जाने बिना सही नेतृत्व नही हो सकता। हमें ज्ञान के सभी क्षेत्रों मे, सभी तथाकथित बौद्धिक व्यवसायों के अपने कर्मी तैयार करने है। आवश्यकता इस बात की है कि मिलो-कारखानो मे काम करनेवाले युवाजन मे जो उत्साह व्याप्त है वह बौद्धिक व्यवसायो मे कार्यरत युवाजनो पर भी छा जाये। इस मोर्चे पर हमें अपनी सर्वश्रेष्ठ शक्ति लगानी चाहिए। लेकिन शक्ति मात्र लगानी ही नही चाहिए। आवश्यकता इस बात की है कि कोमसोमोल बौद्धिक व्यवसायो के मोर्चे पर काम कर रहे अपने हर सदस्य का ध्यान रखे, मजदूर जनसाधारण के साथ उसका संपर्क क्षीण न होने दे, उसके काम पर सदा नियंत्रण रखे। महत्व की बात यह है कि इस क्षेत्र मे भी, श्रम के दूसरे क्षेत्रों की भांति, श्रम-प्रतियोगिता आयोजित की जानी चाहिए।

अंत मे मैं एक और प्रश्न का उल्लेख करना चाहूंगी। हम वर्गहीन समाज के निर्माण के पथ पर अग्रसर हैं। लेकिन वर्गहीन समाज बनाने के लिए यह अपेक्षित है कि लोगों का मानसिक और शारीरिक श्रम करनेवालों मे विभाजन मिटाया जाये। हमारा पोलीटेकिनकल स्कूल इस ध्येय की पूर्ति करता है। लेकिन वह अपने इस कार्यभार को तब तक पूरा नही कर पायेगा, जब तक कि उसे बाहर से, पुनर्गठित

हो रहे जीवन मे सहायता नही मिलेगी। आवश्यकता इस बात की है कि उन परिणामो की प्रतीक्षा किये बिना, जो इस स्कूली शिक्षा से कमोबेश सुदूर भविष्य मे, दस-बीस साल बाद प्राप्त होगे, कोमसोमोल अभी से बौद्धिक और शारीरिक श्रम के भेदों को मिटाने मे लग जाये। निर्माणाधीन समाजवाद का वातावरण इसमे अधिकाधिक सहायक होगा। शारीरिक श्रम के क्षेत्र में काम करनेवाले कोमसोमोल सदस्यो को अतिरिक्त श्रम के रूप मे कोई मानसिक श्रम का कार्य करना चाहिए और मानसिक श्रम करनेवालो को शारीरिक श्रम का। ऐसे विभिन्नतम और विविधतम सयोजन हो सकते हैं – इस बात के अनुसार कि किसकी क्या रुचि, क्या योग्यता है, कैसे व्यवसाय सयोजन के लिए उपयुक्त हैं और किस तरह के सयोजन से सबसे अच्छे परिणाम निकलते हैं। यह बिल्कुल नया काम है। यहा भटकाव, एक व्यवसाय छोडकर दूसरा हाथ मे लेना कतई नही होना चाहिए। लेकिन इस दिशा मे रास्ता अवश्य प्रशस्त करना चाहिए। आधुनिक प्रविधि व्यवसायो का ऐसा सयोजन करने की आवश्यकता हमारे सामने रख रही है।

कोमसोमोल सदस्यो की ओर से इस दिशा मे जबरदस्त पहलकदमी होनी चाहिए और स्पष्टत निर्धारित लक्ष्य तथा उसकी ओर बढने का दृढ सकल्प। एक व्यवसाय का अध्ययन करने के बाद हो सकता है दूसरा व्यवसाय स्वय, पत्रव्यवहार द्वारा, साथियो की मदद से, मडलियों मे सीखना पडे। गभीर शिक्षा की आवश्यकता है। शुरुआत ही महत्वपूर्ण है। पहले कदम ही कठिन होगे।

१९३२

व्यवसाय का सही चयन

व्यवसाय का सही चयन काम के लिए भी, उत्पादन के लिए भी और स्वयं कर्मी के लिए भी बहुत महत्वपूर्ण है।

कमज़ोर नज़रवाले, कठिन क्षणो में हतप्रभ हो जानेवाले व्यक्ति को ट्राम का ड्राइवर बना दो, तो यकीनन यह कहा जा सकता है कि वह एक न एक दिन ज़रूर दुर्घटना कर बैठेगा। दुर्बल व्यक्ति को ऐसे काम मे लगा दो, जिसके लिए शारीरिक शक्ति की ज़रूरत है, तो इसमे कोई संदेह नही कि वह यह काम पूरा नही कर पायेगा और उसकी रही-सही ताकत भी जाती रहेगी। तंत्रिका-तंत्र के रोग से ग्रस्त और अज्ञानी व्यक्ति को अध्यापक बना दो, तो वह ज़रूर बच्चो को बिगाड डालेगा।

यही कारण है कि लोगों को चुनते समय यह ठीक-ठीक पता होना चाहिए कि किसे किस काम मे लगाया जा सकता है। इस या उस कार्य के लिए कर्मी मे कैसे गुण, ज्ञान और योग्यता होनी चाहिए – यह तय करना नितांत महत्वपूर्ण है। बुर्जुआ वर्ग ने बहुत पहले ही इस सच्चाई को पहचान लिया है और वह इस प्रश्न की ओर बहुत ध्यान देता है। कई ऐसी वैज्ञानिक परीक्षाएं हैं, जिनमे यह पता चलता है कि विमानचालक, ट्रामड्राइवर, इस या उस जटिल खराद पर काम करनेवाले मजदूर, फोरमैन, इंजीनियर, इत्यादि मे कैसे गुण होने चाहिए। विज्ञान की एक अलग शाखा भी है – व्यवसायविज्ञान, जो इस या उस व्यवसाय के कर्मी के लिए आवश्यक गुणों का अध्ययन

करती है। हमें इन वैज्ञानिक रचनाओं का बड़े ध्यान से अध्ययन करना चाहिए ताकि इनमें से वह सब ले सकें, जिसकी हमें आवश्यकता है। आधुनिक, बुर्जुआ भी, व्यावहारिक मनोविज्ञान भी इस संबंध में बहुत कुछ दे सकता है।

बेशक हमें बुर्जुआ व्यावहारिक मनोविज्ञान के प्रति आलोचनात्मक रुख अपनाना चाहिए, क्योंकि वह इस प्रश्न को अपने बुर्जुआ-वर्गाधारित दृष्टिकोण से हल करता है सत्ताधारी लोगों और उनकी संतानों के लिए उसका एक मापदंड है तथा मेहनतकशों के बच्चों के लिए दूसरा। पुरुषों के श्रम को वह एक मापदंड से देखता है और स्त्रियों के श्रम को दूसरे मापदंड से। और फिर यह बात विशेषतः ध्यान देने योग्य है कि बुर्जुआ व्यावहारिक मनोविज्ञान कर्मियों के चयन को केवल उत्पादन की दृष्टि से लेता है, इस या उस काम का कर्मी पर क्या प्रभाव पड़ता है, उसकी शक्ति ऐसे काम में कितनी जल्दी चुक जाती है – इसमें बुर्जुआ मनोविज्ञान खास दिलचस्पी नहीं लेता।

इसके विपरीत सोवियत देश में हमारी रुचि केवल उत्पादन में ही नहीं है, बल्कि मजदूरगण में, इस उत्पादन-स्थल पर काम कर रहे कर्मी में भी है। समाजवादी व्यावहारिक मनोविज्ञान को कर्मी की ओर, इस बात की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए कि कोई व्यवसाय कर्मी के बहुमुखी विकास में कहां तक सहायक है, इस या उस व्यवसाय से उसे कितना संतोष, श्रम का कितना हर्ष मिलता है।

अनुभव यह बताता है कि जिस व्यवसाय से आदमी को सबसे अधिक संतोष प्राप्त होता है, वही प्रायः वह व्यवसाय होता है, जिसमें आदमी उत्पादन में अधिकतम योगदान कर सकता है।

व्यवसाय-चयन के प्रति सही रुख होने पर उत्पादन और कर्मी के हित समान होते हैं, लेकिन ऐसा रुख तय कर पाने के लिए ही सदा कर्मी के हितों को, उसकी रुचियों को ध्यान में रखना चाहिए।

हमारे देश के विकास के वर्तमान चरण में समाजवादी व्यावहारिक मनोविज्ञान के सम्मुख वह प्रश्न अपनी पूरी उग्रता के साथ उठ खड़ा हुआ है, जो एंगेल्स ने ही अपने दिनों में पेश किया था, लेकिन जो सोवियत देश में ही हल किया जा सकता है। यह है व्यवसायों का संयोजन।...

जीवन मे व्यवसायो का सयोजन हम देख रहे हैं: आज मजदूर धातुकर्मी, कल सामूहिक फ़ार्म का अध्यक्ष, परसो कमिसारियत का प्रधान .. आज बुनकर, कल नगर सोवियत की सदस्या, परसो उच्च तकनीकी शिक्षा पा रही छात्रा और फिर इजीनियर।..

सोवियतो मे काम, सार्वजनिक काम मिल-कारखानों मे, सामूहिक फार्म मे काम के साथ मिलकर नये किस्म के कर्मियो का निर्माण कर रहा है। एक ओर, तकनीकी काम, दूसरी ओर, बौद्धिक काम। लेकिन, यदि हम वर्गहीन समाज को ध्यान मे रखते हैं – और हम उसे ध्यान मे रखे बिना, उसके निर्माण के लिए कार्य किये बिना नहीं रह सकते (१७ वे पार्टी सम्मेलन मे यह कार्यभार हमारे सम्मुख अकारण ही नही रखा गया है) – तो हमे यह समझना चाहिए कि व्यवसायो के विवेकसगत सयोजन का प्रश्न एक अत्यत गभीर प्रश्न है, जिस पर पूरी गभीरता से काम होना चाहिए।

इसके साथ ही हमे व्यवसायो मे ऐसा सयोजन करने की चेष्टा करनी चाहिए कि, एक ओर, शारीरिक श्रम के व्यवसाय हो तथा, दूसरी ओर, मानसिक श्रम के। शारीरिक श्रम के व्यवसायो का मानसिक श्रम के व्यवसायो के साथ सही सयोजन यदि बडे पैमाने पर किया जाये, तो उससे बौद्धिक और शारीरिक श्रम करनेवालो मे कर्मियो के सामाजिक विभाजन की जड कट जायेगी।

मजदूर फैकल्टियो, विभिन्न तैयारी पाठ्यक्रमो और मजदूर शिक्षा की सारी प्रणाली ने सोवियत सघ मे कथनी मे नही, बल्कि करनी मे मजदूरो-किसानो के लिए उच्च शिक्षा-सस्थानो के द्वार खोले है। लेकिन इस ओर से आखे नही मूदनी चाहिए कि बहुत-से विद्यार्थी उच्च शिक्षा-सस्थान को अच्छे ओहदे, मान-सम्मान पाने का, शारीरिक श्रम से छुटकारा पाने का रास्ता ही समझते है। यह उन दिनो का अवशेष है, जब लोग ज्ञान को अपना विशेषाधिकार बनाते थे और शारीरिक श्रम हेय माना जाता था। पूजीवादी देशो मे आज भी ज्ञान विशेषाधिकार है, समाजवाद मे ऐसा नही होना चाहिए।

। कार्यभार यह कतई नही है कि अधिक से अधिक मजदूरो . . . होने का, मजदूर न रहने का अवसर प्रदान करे। अपना . . . ना यह है कि श्रम विभाजन बिल्कुल नये आधार पर हो।

इस परिवर्तन का नियमन नहीं हो सकता और नहीं किया जाता यद्यपि नियमन एकदम आवश्यक है। लेकिन इस पुनर्वितरण का सही नियमन करने के लिए, विशेषज्ञों की किस्मों का, उनमें से प्रत्येक से संबंधित मनोवैज्ञानिक विशिष्टताओं का अच्छा ज्ञान होना चाहिए। इसके बिना नियमन का काम अनुमान से होगा, कम कारगर होगा। हम जानते है कि पूजीवादी देशों में कुशल मजदूर अक्सर अपनी विशेषज्ञता बदलते है (शोधकार्यों से पता चला है कि विशेषज्ञताओं में यह परिवर्तन एक आम बात है, एक आदमी चौदह तक विशेषज्ञताएं बदलता है)। लेकिन आम तौर पर ये विशेषज्ञताएं ऐसी होती हैं, जिनके लिए एक ही किस्म के कर्मियों की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, उत्पादन के और स्वयं कर्मियों के हित में समग्र पोलीटेक्निकल ज्ञान होना चाहिए, जिससे हर तरह का काम संपन्न करने की योग्यता आती है। अपनी शक्ति का युक्तियुक्त उपयोग करते हुए, अपने श्रम का सही नियमन करते हुए, रास्ते में आनेवाली कठिनाइयों को दूर करने का उपाय खोजते हुए शारीरिक और मानसिक दोनों तरह के काम करने की सामान्य योग्यता होनी चाहिए।

हमारी सारी शिक्षा – प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक – को पोलीटेक्निकल बनाना शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच खाई पाटने में बहुत बड़ी भूमिका अदा करेगा। पोलीटेक्निकल शिक्षा मानसिक और शारीरिक श्रम के पूजीवादी विभाजन को सदा के लिए दफ़ना देगी। पोलीटेक्निकल शिक्षा की, सार्विक पोलीटेक्निकल शिक्षा की चर्चा करते हुए हम समाजवाद के निर्माण में, पूजीवाद से हमें धरोहर में मिले सामाजिक श्रम-विभाजन को मिटाने में पोलीटेक्निकल शिक्षा की भूमिका पर कम ज़ोर देते है। बेशक, पोलीटेक्निकल स्कूल अपना यह कार्यभार तभी पूरा कर पायेगा, जबकि पोलीटेक्निकल शिक्षा की अवधारणा को सही-सही समझा जायेगा। हमें पोलीटेक्निकल शिक्षा को बढ़ईगिरी और लौहारगिरी तक सीमित करने के विरुद्ध, उसे देश के उत्पादन कार्य से अलग करने, शेष शिक्षा से अलग करने के विरुद्ध डटकर संघर्ष करना चाहिए। यह बात अधिकाधिक स्पष्ट ... जा रही है कि पोलीटेक्निकल शिक्षा में श्रम का वैज्ञानिक संगठन व्यवसाय-चयन संबंधी मार्गदर्शन भी शामिल होना चाहिए। यदि

के लिए संघर्ष का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण मोर्चा।

यही कारण है कि अपनी एक बैठक में समाज ने व्यवसाय-चयन के प्रश्न को विचार-विमर्श के लिए रखा था और आगे भी उसकी ओर आवश्यक ध्यान देता रहेगा।

राजकीय वैज्ञानिक परिषद का स्कूल प्रभाग भी, जिसने इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर कार्य के लिए एक विशेष दल गठित किया है, इस पहलू की ओर ध्यान दे रहा है।

१९३२

काफी सीमित सख्या के लोगो को ही व्यवसाय के चयन की स्वतत्रता प्राप्त हुई।

समाज के श्रेणीगत विभाजन का स्थान उसके वर्गीय विभाजन ने लिया और यह नया विभाजन भी व्यवसाय के स्वतत्र चयन मे बाधक था। कानून हर किसी को अपनी पसद का व्यवसाय चुनने का अधिकार देता था, किंतु वास्तव मे कई बाधाए, कई दीवारे खडी की गई थी। ऐसी एक सबसे मजबूत दीवार थी जनशिक्षा की पूजीवादी पद्धति। प्रविधि के विकास और फैक्टरियो मे सामूहिक कार्य के लिए न्यूनतम साक्षरता अपेक्षित है। यही कारण है कि कतिपय पूजीवादी देशो मे अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा काफी पहले लागू की जा चुकी है, जिसमे धर्म और बुर्जुआ नैतिकता का जहर घुला होता है। सारी शिक्षा इस तरह आयोजित है कि इससे अतीत और वर्तमान की विकृत तस्वीर छात्रो के दिमाग मे बनती है।

इस पद्धति मे प्राथमिक विद्यालय से माध्यमिक मे जा पाना कोई आसान काम नही है, क्योकि प्राथमिक विद्यालय का पाठ्यक्रम माध्यमिक विद्यालय के पाठ्यक्रम से जुडा नही होता है। माध्यमिक विद्यालय छात्रो को ज्ञान से लैस करते हुए सत्ताधारियो के आदेशो का पालन करनेवाले राज्यतत्र के सेवक तैयार करता है। यहा मुख्यतः टुटपुजिया वर्ग के, कगाल हो गये अभिजात वर्ग के, छोटे और मझले व्यापारियो, दफ्तरो के कर्मचारियो, अमीर हो गये किसानो, आदि के बच्चे जाते हैं।

माध्यमिक विद्यालय के विभिन्न रूप हैं, जो अधिक व्यापक ज्ञान देते हैं और किशोरो को किसी निश्चित "बौद्धिक व्यवसाय" के लिए तैयार करते हैं। माध्यमिक विद्यालय से तथाकथित "बौद्धिक व्यवसायो" का रास्ता खुलता था। टुटपुजिया वर्ग अपने बच्चो को माध्यमिक विद्यालय मे दाखिला दिलाने की कोशिश करता था। माध्यमिक विद्यालय मे शिक्षा पा लेने से विवशतापूर्ण भारी शारीरिक श्रम से छुटकारा पाने का, "इज्ज़तदार नौकरी" पाने का अवसर मिलता था। माध्यमिक विद्यालयो से उच्च शिक्षा सस्थानो के भी द्वार खुलते थे, जहा उच्चतर कोटि के, अधिक अच्छा वेतन पानेवाले विशेषज्ञ तैयार किये जाते थे। भावी "उद्योग-कप्तानो" और "राज्य सचालन के कर्णधार" के लिए खास स्कूल भी बने।

की बदौलत शारीरिक और मानसिक श्रम के बीच अंतर घट रहा है पुरानी दीवारे, जो जनसाधारण के लिए ज्ञान का पथ रोके खड़ी थीं ढहा दी गयी हैं।

सोवियत संघ मे अब व्यवसाय के स्वतंत्र चयन के लिए मूलभूत पूर्वाधार बना लिये गये हैं। लेकिन इसका अर्थ यह नही है कि सांस्कृतिक मोर्चे पर हम किसी भी हद तक अपनी सतर्कता कम कर सकते हैं।

हम पलांश को भी यह नही भूल सकते कि निरक्षरता और अल्पज्ञान के अवशेष व्यवसाय के स्वतंत्र चयन के लिए कितनी बड़ी बाधा हैं।

हम पलाश को भी यह नही भूल सकते कि हमे छोटी उम्र से ही स्कूली और स्कूलेतर कार्यो की मदद से उदीयमान पीढ़ी की सामान्य शिक्षात्मक और पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि को व्यापक बनाना है, यह याद रखते हुए कि सामान्य शिक्षात्मक और पोलीटेक्निकल दृष्टि-परिधि की सकीर्णता व्यवसाय के चयन की स्वतंत्रता को सीमित करती है, इस चयन को सायोगिक बनाती है।

हमे इस पुराने दृष्टिकोण के अवशेषों को मिटाना है कि शारीरिक श्रम कोई ऐसा श्रम है, जो कोटि-कोटि अभिशप्त लोगो के भाग्य में ही बदा है। हमें हर हालत मे उच्च शिक्षा संस्थान मे दाखिला पाने, इंजीनियर बनने, "इज्जतदार नौकरी पाने" की चेष्टाओ के विरुद्ध संघर्ष करना है। इन चेष्टाओ मे "खराद पर काम करनेवाले" लोगो के प्रति पुराना दृष्टिकोण, शारीरिक श्रम मे रत लोगो के प्रति हेय दृष्टि प्रतिबिंबित होती है। अग्रणी मजदूर आदोलन इस अंधविश्वास को शीघ्र ही मिटाने मे सहायक होगा।

हमे अपने बच्चो का स्वास्थ्य हर तरह से सुधारना चाहिए, इस बात का खयाल रखना चाहिए कि उन्हे अच्छा आहार मिले, वे ताजी हवा मे रहे अच्छी नींद सोयें, उनका सामान्य शारीरिक विकास ठीक हो, उनकी दृश्य और श्रवण-स्मरण शक्ति विकसित हो, उन्हे श्रम की सामान्य आदते पड़े।

जब शिल्पो का, घरेलू उद्योग-धंधो का प्रभुत्व था, उन दिनों [illegible] का चयन प्राय माता-पिता के व्यवसाय द्वारा निर्धारित होता तब श्रम-कौशल मे श्रम की गुणवत्ता निर्धारित होती थी। यह , श्रम सबंधी ये आदते सीखने के लिए छोटी उम्र मे ही काम

अन्त मे होनहार बच्चो के बारे मे दो शब्द। होनहार बच्चे को
अन्य सभी बच्चो की तरह सामान्य शिक्षा पाने का अधिकार
चाहिए। हमे उसके लिए आम सोवियत स्कूल मे ही बहुमुखी विकास
संभावनाए सुनिश्चित करनी चाहिए, यह याद रखते हुए कि अल
मे ही विशेषज्ञता मे सीमित हो जाने से भविष्य में बच्चे के लिए
योग्यता के उपयोग की संभावनाए भी सीमित हो जायेगी। एक उदाह
ले। बच्चे की दृश्य-स्मरण शक्ति प्रखर है। वह बड़े अच्छे चित्र बना
है। उसे छोटी उम्र मे ही व्यावसायिक विद्यालय मे दाखिल करा दि
जाता है, जहां वह चित्रकारी की विधिया सीखता है, लेकिन उस
दृष्टिकोण व्यापक बनाने की परवाह कोई नही करता, परिघटनाओ
प्रति कम्युनिस्ट रवैया उसमे विकसित नही किया जाता, उसे कोई
सच्चा कम्युनिस्ट, सामूहिकतावादी, समाज का सक्रिय सदस्य नही बनाता
सो बड़ा होकर वह एक प्रतिभावान चित्रकार बनता है–फलो
टोकरी की तस्वीर वह बहुत अच्छी बनाता है, लेकिन आधुनिक समाज
दौर की विशिष्टता प्रतिबिंबित करनेवाला कोई चित्र बनाने मे,
कृत्रिमता के बिना सीधे-सादे ढग से, इस तरह कि चित्र शब्दो मे
अधिक अभिव्यजनात्मक हो–ऐसा चित्र बनाने मे वह असमर्थ है।
आवश्यकता इस बात की है कि सामान्य शिक्षा विद्यालय भी और
व्यावसायिक विद्यालय भी उसे कम्युनिस्ट बनने की शिक्षा दे, तभी वह
अपनी प्रतिभा का सच्चा उपयोग कर सकेगा।

१९३६

का प्रश्न उठा है, यह नितांत महत्वपूर्ण है कि देहात में लड़के-लड़कियों को पढ़ने के लिए पुस्तकें उपलब्ध हों, कि देहातों के स्कूलों में बालोपयोगी पुस्तकें अधिक हों, कि यह साहित्य अच्छा, सच्चा साहित्य हो, जो बच्चों के लिए सचमुच करीबी और समझ में आनेवाला हो, उनका ज्ञान बढ़ाता हो।

बच्चों को पायोनियर कार्य बहुत अच्छे लगते हैं, उन्हें करते हुए वे बहुत कुछ सीखते हैं। मैंने एक बार बच्चों को पुस्तकालयों के बारे में पत्र लिखा था। हमने ग्रामीण पुस्तकालयों की प्रतियोगिता आयोजित की और मुझे तब काफी आश्चर्य हुआ, जब सामूहिक और राजकीय फार्मों में आनेवाले लोगों ने बताया कि उनके यहां पुस्तकालयों के मामले में बच्चे पहल करते हैं।

स्कूलों के पुस्तकालयों के लिए बच्चों की रुचियों और उनके ज्ञान के स्तर को ध्यान में रखकर पुस्तकें चुननी चाहिए, लेकिन इस तरह पुस्तकालय बनाकर बच्चों को पुस्तकें चुनने की छूट देनी चाहिए। ऐसी बातें मुझे कतई नहीं पसंद हैं कि अमुक आयु के बच्चों को केवल अमुक पुस्तकें पढ़नी चाहिए और अमुक आयु के बच्चों को अमुक। बच्चों को हद से ज्यादा संरक्षण में रखना, हर वक्त उन पर नियंत्रण रखना ठीक नहीं। उन्हें चुनाव की, अपनी ओर से पहल करने की निश्चित आज़ादी होनी चाहिए। जब बच्चे कुछ करने की सोचते हैं, तो इस सिलसिले में वे बहुत-से कदम उठाते हैं, संगठित होना सीखते हैं, इससे उनमें अनुशासन आता है। बच्चों को ऐसा काम देना चाहिए, जिसमें उनकी दिलचस्पी हो, जिसे करने में वे मगन हो सकें। और फिर बच्चों के विकास के स्तर को भी ध्यान में रखना चाहिए।

हमारी ऐसी अवधारणा बन गई है कि पुस्तक पढ़ते हुए ही ज्ञान पाया जा सकता है, लेकिन कैसे जीवन को देखा-समझा जाये, कैसे उसका प्रेक्षण, उसका अध्ययन किया जाये, नये ढंग से जीना कैसे सीखा जाये – इस सबके बारे में न पायोनियर लीडर और न ही शिक्षक ढंग से कुछ बताते हैं। जबकि ऐसे खेल हैं जो जीवन को ध्यान से देखना-समझना सिखाते हैं। स्कूलेतर काम में इस बात की ओर ध्यान दिलाना चाहिए कि घूमने या सैर करने, आदि के साथ-साथ कैसे प्रकृति का, लोगों का और आस-पास के सारे जीवन का प्रेक्षण करें।

उसके मा-बाप आये दिन सगीत सभाओ मे ले जाते थे। लेनिन ने कहा, बेचारे बच्चे को मा-बाप से छीन लेना चाहिए, वरना वे उसे मार डालेंगे। लेनिन की बात शब्दश सच निकली। बालक की मा उसे देश-विदेश ले जाती थी, हर जगह उसे दिखाती फिरती थी कि देखिये इसकी सगीत प्रतिभा कितनी असाधारण है। अत यह हुआ कि बालक को मस्तिष्क शोथ हो गया और वह मर गया। बेशक, सदा ऐसा दुखद अत नही होता है, लेकिन यह उदाहरण शिक्षाप्रद है।

हमे होनहार बच्चो के मन मे यह बात नही बिठानी चाहिए कि वे औरो से अलग है, उन्हे कोई विशेष स्थिति नही देनी चाहिए। इस बात का खयाल करना चाहिए कि उन्हे बहुमुखी शिक्षा मिले। यह शिक्षा उनके लिए बाधक नही होगी, बल्कि जब वे बडे होगे, तो इसने उन्हे अपनी शक्ति और पसद के मुताबिक व्यवसाय चुनने मे मदद मिलेगी। छोटी उम्र से ही यह तय नही करना चाहिए कि यह बच्ची बैले नर्तकी होगी और यह बालक इजीनियर।

हमे सभी बच्चो की हितचिंता करनी चाहिए, सभी को हम जो कुछ दे सकते है, उसका अधिकतम देना चाहिए।

स्कूलेतर कार्य अत्यत महत्वपूर्ण है, क्योकि वह बच्चो की सही शिक्षा-दीक्षा मे सहायक हो सकता है, उनके बहुमुखी विकास के लिए उचित परिस्थितिया बना सकता है। हमे बच्चो की पहलकदमी का समर्थन करना चाहिए, उनके रचनात्मक कार्य मे भी उनकी सहायता करनी चाहिए, उनका मार्गदर्शन करना और उनकी रुचियो को दिशा प्रदान करनी चाहिए। अक्सर माता-पिता बच्चो को बहुत बिगाडते हैं, उन्हे आये दिन सिनेमा, थियेटर ले जाते हैं। फिल्मे बच्चो के दिमाग पर बोझ बनती हैं। बच्चो को जरा गौर से देखिये, आप पायेगे कि फिल्म के बाद बच्चा मा से ही उलटी-सीधी बात कह डालेगा, या स्कूल मे दूसरो से भिडने लगेगा, इत्यादि । बच्चो को ऐसी फिल्मे दिखानी चाहिए, जिन्हे वे समझ सकते हो, जिनमे बच्चो को खुशी हो, उनकी दृष्टि-परिधि व्यापक हो। बडो के लिए फिल्म देखते हुए बच्चा अक्सर फिल्म का सार नही समझता है, बस बाहरी रूप को ग्रहण कर लेता है। मुझे किसी ने बताया था कि कैसे चैतनिन की वह फिल्म देखने के बाद जिसमे पेचकश से नाक खोलने का सीन है,

टिप्पणियां

परिच्छेद १। श्रम-शिक्षा और चरित्र-निर्माण की समस्याओं पर मार्क्सवाद-लेनिनवाद के संस्थापकों का दृष्टिकोण

उदीयमान पीढ़ी को कम्युनिज़्म की भावना में शिक्षित करने के बारे में मार्क्स के विचार (१९३३)

[1] का० मार्क्स, फ्रे० एंगेल्स 'कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र', संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को १९७६, पृष्ठ १४८।

[2] वही, पृष्ठ १४९–१५०।

[3] वही, पृष्ठ १५३।

[4] वही, पृष्ठ १५४।

[5] वही, पृष्ठ १४८-१४९।

[6] वही, पृष्ठ १५२।

[7] फ्रेडरिक एंगेल्स, 'ड्यूहरिंग मत-खण्डन', प्रगति प्रकाशन, मास्को १९८०, पृष्ठ १८३-१८४।

[8] का० मार्क्स, फ्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड १ भाग १, पृष्ठ १५१।

[9] कार्ल मार्क्स 'फायरबाख पर निबंध', का० मार्क्स, फ्रे० एंगेल्स संकलित रचनाएं, खंड १, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७६ पृष्ठ १६।

[10] आन्नेन्कोव, प० व० (१८१२ या १८१३–१८८७) – साहित्यिक समीक्षक, संस्मरण लेखक। उन्नीसवीं सदी के चालीसवें दशक में मार्क्स से इनका परिचय रहा।

[11] प्रूदों, प्येर जोजेफ (१८०९–१८६५) – फ्रांस के टुटपुंजिया समाज-

[9] कार्ल मार्क्स, 'फ्रांस में गृहयुद्ध', का० मार्क्स, फ्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड २, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७७, पृष्ठ २८६।

[9] वही, पृष्ठ २९५।

[10] कार्ल मार्क्स, 'गोथा-कार्यक्रम की आलोचना', का० मार्क्स, फ्रे० एंगेल्स, संकलित रचनाएं (तीन खंडों में), खंड ३, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९७८, पृष्ठ ३१।

[11] वही, पृष्ठ २९-३०।

[12] **लासाल, फर्दीनांद** (१८२५–१८६४) – जर्मन निम्नपूंजीवादी समाजवादी, जर्मन मजदूर आंदोलन की नाना अवसरवादी प्रवृत्तियों में से एक – लासाल-पंथ – के जनक।

पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के लिए संघर्ष में लेनिन की भूमिका (१९३२)

[1] **नरोदवाद** – रूसी क्रांतिकारी आंदोलन में एक टुटपुंजिया प्रवृत्ति। यह १९वीं शताब्दी के सातवें और आठवें दशकों में उत्पन्न हुई। नरोदवादियों ने निरंकुश सत्ता की समाप्ति और भूस्वामियों की ज़मीनें किसानों को देने की मांग की।

उन्होंने यह बात अस्वीकार की कि रूस में पूंजीवादी संबंधों का विकास अनिवार्य है। इसीलिए उनकी धारणा थी कि मुख्य क्रांतिकारी शक्ति सर्वहारा नहीं बल्कि किसान है। वे ग्राम समुदाय को समाजवाद का भ्रूण रूप मानते थे। उनकी कार्यविधियां सक्रिय 'नायकों और निष्क्रिय जनसमूह' वाले भ्रांतिपूर्ण सिद्धांत पर आधारित थीं। किसानों को निरंकुशता के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रेरित करने के उद्देश्य से नरोदवादी देहाती इलाकों में, जनता के पास ('जनता' के लिए रूसी भाषा का शब्द 'नरोद' है, इसी कारण से ये "नरोदवादी" कहलाते थे) गए, पर वहां उन्हें कोई समर्थन न मिला।

नरोदवाद का विकास क्रांतिकारी जनवाद से उदारतावाद की दिशा में हुआ।

१६वीं शताब्दी के नौवें और अंतिम दशकों में नरोदवादियों ने जारशाही के प्रति समझौतावादी रुख अपनाया, कुलकों के हित व्यक्त किये और मार्क्सवाद का विरोध किया।

[2] **मुजाकोव से० नि०** (१८४६–१६१०) – रूसी पत्रकार और अर्थशास्त्री। उदारपंथी नरोदवाद के एक सिद्धान्तकार। शिक्षा-दीक्षा के प्रश्नों पर मुजाकोव के नरोदवादी दृष्टिकोण की आलोचना लेनिन ने अपनी रचनाओं 'स्कूल फ़ार्म और नाज़िरी स्कूल' तथा 'नरोदवादी मनसूबेबाज़ी के कमाल' में की।

[3] यहां अभिप्राय **ग्रनात बंधुओं द्वारा** १८६० में प्रकाशित किये जाते रहे '**विश्वकोश**' से है। इस 'विश्वकोश' के सातवें संस्करण (१६१५ खंड २८) में लेनिन का लेख 'कार्ल मार्क्स' सेंसर के कारण अधूरा छपा था।

[4] **व्ला० इ० लेनिन**, 'पार्टी कार्यक्रम पुनरीक्षण संबंधी सामग्री' अप्रैल – मई, १६१७।

[5] यहां चर्चा ३१ दिसंबर १६२० से ४ जनवरी १६२१ तक हुए जनशिक्षा के प्रश्नों पर **पहले पार्टी सम्मेलन** की है। इसमें वाद-विवाद का एक प्रमुख प्रश्न यह था कि "सामाजिक शिक्षा-दीक्षा का आधार क्या हो – पोलीटेक्निकल या मोनोटेक्निकल (व्यावसायिक) शिक्षा। त० फ० ग्रिन्को द्वारा प्रस्ताविक जनशिक्षा के उक्राइनी नमूने को लेकर संघर्ष चला। व्यावसायिक शिक्षा विभाग के उपाध्यक्ष ओ० यू० श्मिद्त इसका समर्थन कर रहे थे। यह नमूना निम्न दो प्रस्थापनाओं पर आधारित था : १) १५ साल तक के बच्चों के लिए "एकीकृत सामाजिक शिक्षा-दीक्षा प्रणाली हो, इसके सभी संगठनात्मक रूप (किंडरगार्टन, बाल-घर, सातवीं कक्षा तक के स्कूल इत्यादि) श्रम-सिद्धांत पर आधारित हों", २) १५ वर्ष के बाद उत्पादन के इस या उस क्षेत्र में विशेष प्रशिक्षण दिया जाये। यह बात रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के कार्यक्रम के खिलाफ़ जाती थी जिसमें कहा गया था कि १७ वर्ष की आयु तक अनिवार्य सामान्य और पोलीटेक्निकल शिक्षा होगी। आयु सीमा को घटाने के पार्टी सम्मेलन के निर्णय को पार्टी ने एक अस्थायी आवश्यकता माना।

ब्ला० इ० लेनिन, 'पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में', नदेज्द कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया की प्रस्थापनाओ पर टिप्पणिया, १६२० (ब्ला० इ० लेनिन, 'सार्वजनिक शिक्षा के बारे मे', प्रगति प्रकाशन मास्को, १६८३, पृष्ठ १३०)।

वही, पृष्ठ १३०।

ब्ला० इ० लेनिन, 'शिक्षा जन-कमिसारियत के क्रियाकलाप के बारे में', १६२१।

फ़ैक्टरी कारखाना शागिर्दी स्कूल कुशल कर्मी तैयार करने के लिए १६२० में खोले गये। १६४० तक बड़ी संख्या में अस्तित्वमान रहे।

[10] ब्ला० इ० लेनिन, 'रूसी कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) के कार्यक्रम के मसविदे के लिए सामग्री', मुद्दा ५, जनशिक्षा के कार्यक्रम के परिशिष्ट का मसौदा, १६१६।

उदीयमान पीढ़ी की सार्विक शिक्षा और पोलीटेक्निकल श्रम के बारे में लेनिन के विचार (१६३२)

('युवाजन के बारे में लेनिन के विचार' लेख से उद्धृत)

[1] ब्ला० इ० लेनिन, 'नरोदवादी मनसूबेबाजी के कमाल', १८६७।

[2] ब्ला० इ० लेनिन, 'पार्टी कार्यक्रम पुनरीक्षण संबधी सामग्री', १६१७।

[3] ब्ला० इ० लेनिन, 'जल परिवहन के कर्मियो की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस मे भाषण', १६२०।

[4] ब्ला० इ० लेनिन, 'प्रथम गुब्योतनिक से अखिल रूसी गुब्योतनिक तक' १६२० (ब्ला० इ० लेनिन, 'समाजवादी आर्थिक संगठन', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६७६, पृष्ठ ३४८-३४६)।

[5] ब्ला० इ० लेनिन, 'युवक संघों के कार्यभार' (रूसी कम्युनिस्ट संघ की तीसरी अखिल रूसी कांग्रेस में २ अक्तूबर, १६२० को

दिया गया भाषण), ब्ला० इ० लेनिन, 'सार्वजनिक शिक्षा के बारे में', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९८३, पृष्ठ ९५।

वही, पृष्ठ १०८-१०९।

वही, पृष्ठ १११-११४।

वही, पृष्ठ ११४।

क्रजीजानोव्स्की, ग० म० (१८७२–१९५९) – सोवियत पार्टी नेता और राजनेता, १८९३ से कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य। ऊर्जाविज्ञानी अकादमीशियन। १९२० में रूस के विद्युतीकरण के राजकीय आयोग के अध्यक्ष रहे, १९२१ से राजकीय योजना आयोग के अध्यक्ष बने १९३०–१९३२ में केंद्रीय ऊर्जा विभाग के अध्यक्ष रहे और १९३० में सोवियत विज्ञान अकादमी के ऊर्जा संस्थान के निदेशक।

ब्ला० इ० लेनिन, सोवियतों की आठवीं अखिल रूसी कांग्रेस में 'अखिल रूसी केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति तथा जन-कमिसार परिषद के क्रियाकलाप के बारे में दी गयी रिपोर्ट', १९२०।

वही।

ब्ला० इ० लेनिन, सोवियतों की आठवीं अखिल रूसी कांग्रेस 'विद्युतीकरण के बारे में रिपोर्ट पर प्रस्ताव का मसौदा', १९२०।

ब्ला० इ० लेनिन, सोवियतों की नवीं अखिल रूसी कांग्रेस 'आर्थिक क्रियाकलाप के प्रश्नों पर सोवियतों की नवीं अखिल रूसी कांग्रेस के निर्देश', २८ दिसंबर, १९२१।

ब्ला० इ० लेनिन, 'शिक्षा जन-कमिसारियत के काम के बारे में' १९२१।

ब्ला० इ० लेनिन, अखिल रूसी कार्यकारिणी समिति की बैठक ४(१७) नवंबर १९१७ 'वामपंथी समाजवादी क्रान्तिकारियों के प्रश्न का उत्तर'।

ब्ला० इ० लेनिन 'मास्को में युवा कम्युनिस्ट [illegible] की [illegible] विश्व कांग्रेस के नाम' १९२२।

ब्ला० इ० लेनिन 'अखिल रूसी मजदूर किसान युवक संघ की [illegible] कांग्रेस के नाम' १९२२।

समाजवादी स्कूल के प्रश्न पर कुछ विचार (१९१८)

[1] **सार्विक प्राथमिक शिक्षा** का प्रश्न १९वीं सदी के सातवें दशक में रूस की प्रगतिशील शक्तियों को निरंतर उद्विग्न कर रहा था। कुछ इलाकों में अपने बल पर इसे लागू करने के प्रयास भी किये गये। बीसवी सदी के आरंभ में अक्तूबर क्रांति से पहले इस दिशा में उठाये गये सीमित व्यावहारिक कदम भी असफल रहे। ज़ारशाही सरकार सार्विक शिक्षा का कानून नही बनाना चाहती थी।

[2] **फ़्रेबेल, फ़्रेडरिक** (१७८२–१८५२) – जर्मन शिक्षाशास्त्री, पेस्तालोत्सी के अनुयायी। इन्होंने स्कूलपूर्व शिक्षा-दीक्षा की मौलिक पद्धति बनाई, जो १९वीं सदी के उत्तरार्द्ध मे काफी प्रचलित हुई। उनकी शिक्षा-पद्धति मे कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। उदाहरणत, इसमें बच्चे की गतिविधियां अनावश्यक हद तक नियमित की जाती है, जिससे उसमें स्वतंत्र कार्य करने की क्षमता का हनन होता है।

[3] **मांटसरी, मरिया** (१८७०–१९५२) – इतालवी डाक्टर और शिक्षा-शास्त्री। इन्होंने स्कूलपूर्व आयु के बच्चों और छोटी कक्षाओं के बच्चों में ज्ञानेन्द्रियों और समन्वित गतियों के विकास की पद्धति तैयार करने की ओर बहुत ध्यान दिया। मांटसरी का शिक्षा संबंधी दृष्टिकोण स्वतंत्र शिक्षा-दीक्षा के विचारों का ही एक रूप था। अपने समय में इन विचारों का शिक्षण-कार्य में कवायद और कठमुल्लापन के खिलाफ संघर्ष पर सुप्रभाव पड़ा था।

[4] छात्रों के कार्यकलाप के जरिए उन्हें ज्ञान प्रदान करना, उनमें निश्चित अभ्यास डालना, दक्षताएं विकसित करना ही शिक्षण की श्रम-विधि कहलाता है। इस विधि से बच्चे अपने चारों ओर के जगत का सक्रिय, रचनात्मक परिचय पाते हैं।

व्यावसायिक शिक्षा के कार्यभार (१६१८)

[1] तीसरे दशक के अंत और चौथे दशक के आरंभ में मजदूर संगठनों की पहलकदमी पर मजदूर विश्वविद्यालय खोले गये थे। प्रौढ़ शिक्षा के नये किस्म के शिक्षा-प्रतिष्ठान खुलने पर ये बंद कर दिये गये।

पोलीटेक्निकल शिक्षा संबंधी प्रस्थापनाएं (१६२०)

[1] जनशिक्षा पर पहले पार्टी सम्मेलन में क्रूप्स्काया की पोलीटेक्निकल शिक्षा पर रिपोर्ट की प्रस्थापनाओं का एक रूपांतर। बीमारी के कारण क्रूप्स्काया इस सम्मेलन में अपनी रिपोर्ट पेश नहीं कर सकी थी। उनकी ये प्रस्थापनाएं अ० व० लुनाचार्स्की ने पेश की थीं। लेनिन ने इन प्रस्थापनाओं के हाशिये पर टिप्पणियां लिखी थीं। १६२६ में 'ना पुत्यास्व क नोवोई श्कोले' (नये स्कूल के पथ पर) नामक पत्रिका के दूसरे अंक में क्रूप्स्काया ने पहली बार ये प्रस्थापनाएं सोवियत पोलीटेक्निकल शिक्षा-पद्धति की स्थापना के एक आधारभूत दस्तावेज़ के रूप में छापीं।

श्रम शक्ति के प्रशिक्षण का प्रश्न (१६२८)

[1] का० मार्क्स, 'पूंजी' खंड १ प्रगति प्रकाशन मास्को १६७५ पृष्ठ ५५०।

[2] वही, पृष्ठ ५४६-५५०।

[3] वही, पृष्ठ ५५०-५५१।

[4] वही, पृष्ठ ५५१।

[5] वही, पृष्ठ ५४६।

पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में (१६२६)

[1] मार्क्स और एंगेल्स की रचनाओं के पहले संस्करण में गलती से लिखा गया है कि यह पत्र ग० ज़िनोवियेव के नाम लिखा गया था। वास्तव में पत्र व० कोरोलियम को लिखा गया था।

[2] व्ला० इ० लेनिन, 'ग० म० क्रजीजनोव्स्की के नाम पत्र', २ जनवरी, १६२०।

[3] व्ला० इ० लेनिन, 'ग० म० क्रजीजनोव्स्की के नाम पत्र', २ दिसंबर, १६२०।

[4] व्ला० इ० लेनिन, 'पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में। 'नदेज्दा कोन्स्तान्तीनोव्ना क्रूप्स्काया की प्रस्थापनाओं पर टिप्पणियां' (व्ला० इ० लेनिन, 'सार्वजनिक शिक्षा के बारे में', प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६८३, पृष्ठ १३१।

[5] वही, पृष्ठ १३१।

[6] व्ला० इ० लेनिन, 'पुरानी समाज-व्यवस्था के विध्वंस से एक नयी समाज-व्यवस्था के सृजन की ओर', १६२० (व्ला० इ० लेनिन, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३, भाग १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६६६, पृष्ठ ४२८।

[7] वही, पृष्ठ ४२७।

पोलीटेक्निकल शिक्षा पद्धति के बारे में (१६२६)

राजकीय वैज्ञानिक परिषद के प्रथम अधिवेशन में
रिपोर्ट के लिए तैयार की गयी प्रस्थापनाएं (१६२६)

[1] देश की अर्थव्यवस्था के समाजवादी पुनर्गठन के काल में शिक्षा जन-कमिसारियत के सम्मुख पोलीटेक्निकल शिक्षा-पद्धति के आगे विकास के मार्ग तय करने का कार्यभार था। राजकीय वैज्ञानिक परिषद के पहले अधिवेशन में इस विषय पर कई [illegible] गईं। क्रूप्स्काया

ने 'पोलीटेक्निकल शिक्षा-पद्धति' रिपोर्ट पेश की। यहा इस रिपोर्ट की प्रस्थापनाए दी गई है, जिनमे श्रम और पोलीटेक्निकल शिक्षा की पद्धति निरूपित है, विभिन्न ज्ञान-शाखाओ के आधारभूत नियमो के अध्यापन मे तथा शिक्षण की श्रम-विधि मे पोलीटेक्निकल रुख अपनाने की आवश्यकता पर तथा स्कूली शिक्षा मे सिद्धात और व्यवहार के सयोजन की आवश्यकता पर जोर दिया गया है।

राजकीय वैज्ञानिक परिषद १६१६–१६३२ मे शिक्षा जन-कमिसारियत का प्रमुख वैज्ञानिक एव प्रणालीतत्रीय केंद्र था। परिषद के वैज्ञानिक-शैक्षिक प्रभाग का, जो १६२१ मे स्थापित हुआ, सचालन कूप्स्काया करती थी। यह प्रभाग शिक्षण के अतर्य और विधियो पर काम करता था, स्कूलो के लिए पाठ्यक्रमो, पाठ्य-पुस्तको और सहायक पुस्तको को स्वीकृति देता था। 'नये स्कूल के पथ की ओर' पत्रिका इस प्रभाग का मुखपत्र थी।

[2] **किसान युवाजन विद्यालय** कोमसोमोल की पहलकदमी पर १६२३ से ग्रामीण इलाको मे प्राथमिक विद्यालयो के आधार पर खोले गये। सामान्य शिक्षा विषयो के अध्यापन के अलावा यहा कृषि का ज्ञान भी दिया जाता था और कृषि के सगठन का कार्य छात्रो को सिखाया जाता था। १६३४ मे नगर-देहात सभी के लिए एक ही तरह के सामान्य शिक्षा विद्यालय खोले जाने के साथ ये विद्यालय बद कर दिये गये।

[3] **फ़ैक्टरी-कारखाना स्कूलों** मे सातवी कक्षा तक सामान्य शिक्षा दी जाती थी। १६२५ से १६३४ तक ऐसे स्कूल थे। इनमे छात्रो को फैक्टरी-कारखाना शागिर्दी स्कूल मे या सामान्य शिक्षा विद्यालय की आठवीं कक्षा मे आगे पढाई जारी रखने के लिए तैयार किया जाता था। ये स्कूल उस फैक्टरी या कारखाने के साथ घनिष्ठ रूप से सबधित होते थे, जिसके आधीन ये खोले जाते थे। १६२७–१६३० मे बहुत बडी सख्या मे ऐसे स्कूल खुले। १६३४ मे इन्हे अपूर्ण माध्यमिक विद्यालय मे पुनर्गठित कर दिया गया।

अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल स्कूल (१९३०)

अखिल रूसी पोलीटेक्निकल शिक्षा कांग्रेस में
रिपोर्ट के लिए तैयार की गई प्रस्थापनाएं

[1] पोलीटेक्निकल शिक्षा पर पहली आखिल रूसी कांग्रेस १० से १६ अगस्त १९३० तक मास्को में हुई। पार्टी की १६वीं कांग्रेस के कर्मियों के प्रशिक्षण के बारे में निर्णयों तथा जनशिक्षा के प्रश्नों पर दूसरे पार्टी सम्मेलन (अप्रैल १९३०) के निर्णयों के अनुसार स्कूली शिक्षा को पोलीटेक्निकल बनाने के क्षेत्र में ठोस कदम तैयार करना ही इस कांग्रेस का प्रमुख कार्यभार था। क्रूप्स्काया एकमत से इस कांग्रेस की अध्यक्षा चुनी गयी थी।

[2] का० मार्क्स 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १९५८, पृष्ठ ५५०।

अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल शिक्षा (१९३०)

पोलीटेक्निकल शिक्षा के विषय पर
पहली अखिल रूसी कांग्रेस में
दिये गये भाषण और रिपोर्ट

नई आर्थिक नीति – पूंजीवाद से समाजवाद की ओर संक्रमण की अवधि में सर्वहारा अधिनायकत्व राज्य द्वारा अनुसृत आर्थिक नीति। सोवियत सत्ता ने विदेशी सैन्य हस्तक्षेप और गृहयुद्ध के दौरान जिस आर्थिक नीति का अनुसरण किया था और जो इतिहास में "युद्धकालीन कम्युनिज्म" की नीति (१९१८-२०) के नाम से ज्ञात है, उससे भेद करने के लिए इस 'नई' आर्थिक नीति कहा [illegible]। युद्धकालीन कम्युनिज्म की नीति व [illegible] [illegible] [illegible]

तथा वितरण का अत्यधिक केंद्रीकरण, मुक्त व्यापार का निषेध और फालतू पैदावार का अधिग्रहण सन्निहित था जिसमें किसानों को अपनी सारी फाज़िल पैदावार राज्य को देनी होती थी।

अनिवार्य अधिग्रहण की जिंसी कर से प्रतिस्थापना हो जाने के बाद किसान अपनी फालतू पैदावार को अपनी मरजी के मुताबिक खुले बाज़ार में बेच सकते थे और अपनी ज़रूरत की उपभोक्ता वस्तुएं खरीद सकते थे।

[2] व्ला० इ० लेनिन, 'सोवियतों की अखिल रूसी तीसरी कांग्रेस समापन भाषण, १८ (३१) जनवरी। व्ला० इ० लेनिन, संकलित रचनाएं, तीन खंडों में, खंड ३ भाग १ प्रगति प्रकाशन मास्को १९६६।

[3] मज़दूर फ़ैकल्टियां १९२० में खोली गई थीं। ३–४ वर्ष के इन पाठ्य-क्रमों का उद्देश्य मज़दूरों और मेहनतकश किसानों को उच्च शिक्षा संस्थानों में दाखिला लेने के लिए तैयार करना था। ये फ़ैकल्टियां १९४० तक रहीं।

[4] स्कूल सहायता परिषदें तीसरे दशक में कार्यरत थीं। ये परिषदें हर साल छात्रों के माता-पिताओं की आम सभा में चुनी जाती थीं। माता-पिता ही इनके सदस्य होते थे। ये परिषदें छात्रों की शिक्षा-दीक्षा में, चरित्र-निर्माण कार्य में सक्रिय भाग लेती थीं।

[5] कार्ल मार्क्स, फ़े० एंगेल्स के नाम पत्र। २८ जनवरी १८६३।

[6] यहां चर्चा क० ग० बेक्कर की पुस्तक 'आधुनिक सांस्कृतिक संकट के प्रकाश में शिक्षा की समस्या' में है।

[7] 'जनसमूह के लिए प्रविधि' – यह अखिलसंघीय स्वैच्छिक संगठन मज़दूरों और किसानों में तकनीकी ज्ञान के प्रसार के लिए १९२८ में स्थापित किया गया था। इसके शिक्षा विभाग की अध्यक्ष क्रूप्स्काया थीं। १९३१ में इसे नवस्थापित आविष्कारक समाज में विलय कर दिया गया।

[8] 'अव्तोदोर' (मोटर-पथ) – रूसी संघात्मक जनतंत्र में मोटर परिवहन के विकास और सड़कों के सुधार के लिए स्थापित समाज (१९२७–१९३५)।

[9] निरक्षरता अन्मूलन समाज—प्रौढ़ आबादी में निरक्षरता के उन्मूलन मे सहयोग प्रदान करता रहा अखिल रूसी स्वैच्छिक समाज (१९२३-१९३६)। मिखाईल कलीनिन इस समाज के अध्यक्ष थे।

[10] मार्क्सवादी शिक्षक समाज सामाजिक विज्ञानों की कम्युनिस्ट अकादमी के अन्तर्गत १९२९ में गठित किया गया था। इस समाज का ध्येय था शिक्षाशास्त्र, चरित्र-निर्माण और शिक्षा के प्रश्नों पर मार्क्सवादी-लेनिनवादी दृष्टिकोण पर काम करना। क्रूप्स्काया इस समाज की अध्यक्ष थीं। समाज स्कूलो का निरीक्षण करता था, शिक्षको के लिए कोर्स और सगोष्ठिया आयोजित करता था, सोवियत शिक्षाशास्त्र और जनशिक्षा-पद्धति के तात्कालिक प्रश्नों पर वाद-विवाद का प्रबध करता था। समाज ने १९३५ तक काम किया।

[11] १९२२ में स्थापित स्कूली कार्य की विधियों का संस्थान जनशिक्षा के इतिहास-सिद्धांत और सगठनों के प्रश्नों का तथा विभिन्न किस्म के शिक्षा प्रतिष्ठानों मे कार्य विधियो और अंतर्य के प्रश्नो का अध्ययन करता था।

पोलीटेक्निकल शिक्षा संबंधी क़ानून के संदर्भ में कुछ विचार (१९३१)

[1] १९३० मे पोलीटेक्निकल शिक्षा पर पहली अखिल रूसी कांग्रेस के बाद कतिपय बैठके हुईं, जिनमे पोलीटेक्निकल शिक्षा संबंधी क़ानून तैयार किया गया। इस कानून की स्वीकृति नहीं दी गयी, किंतु रूसी जनतंत्र की जन-कमिसार परिषद ने स्कूलो को फ़ैक्टरियो, कारखानों और राजकीय फार्मों से सलग्न करने सबधी विशेष निर्णय स्वीकार किया। इसके आधार पर प्रारूपी समझौते तैयार किये गये, जिनमे यह प्रावधान था कि आर्थिक सगठन पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने मे स्कूलो की मदद करेंगे—स्कूलो की वर्कशापो के लिए औज़ार, मशीनें देंगे, छात्रों के उत्पादन अभ्यास का प्रबध करेंगे, शिक्षकों का कौशल बढ़ाने में सहायता करेंगे। ऐसे समझौते मे और पोलीटेक्निकल शिक्षा लागू करने के सारे कार्य में व्यापक जन-मसरो की शिरकत सुनिश्चित की जाती थी।

[2] का० मार्क्स, 'पूजी', खड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को १६७५, पृष्ठ ५४६-५५०।
[3] वही, पृष्ठ ५५०-५५१।
[4] वही, पृष्ठ ५५१।
[5] वही, पृष्ठ ५४६।

सिद्धांत और व्यवहार (१६३१)

[1] यह लेख अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केन्द्रीय समिति का 'प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालय के बारे में' निर्णय (सितबर, १६३१) स्वीकार होने से पहले लिखा गया था। सोवियत स्कूलो मे सामान्य शिक्षा की ओर ध्यान कम दिया जाने लगा था। इस सिलसिले मे क्रुप्स्काया ने जीवन और स्कूल के, सिद्धात और व्यवहार के सबध के महत्व पर ज़ोर देते हुए व्यवहार के अतिमूल्याकन तथा "सिद्धात के प्रति अत्यधिक उपयोगितावादी रुख" के खिलाफ चेतावनी दी।
[2] **तुर्गेनेव, इवान सेर्गेयेविच** (१८१८-१८८३), महान रूसी लेखक।
[3] **नेक्रासोव, निकोलाई अलेक्सेयेविच** (१८२१-१८७८), विलक्षण रूसी कवि।

पोलीटेक्निकल शिक्षा और पायोनियर संगठन (१६३२)

[1] पायोनियर सगठन – सोवियत सघ मे १० से १५ वर्ष तक के किशोर-किशोरियो का स्वैच्छिक सगठन है। इसकी स्थापना १६२२ मे हुई थी।
[2] व्ला० इ० लेनिन, 'नरोदवादी मनसूबेबाजी के कमाल', १८६८।
[3] व्ला० इ० लेनिन, 'युवक सघो के कार्यभार', १६२० (व्ला० इ० लेनिन, 'सार्वजनिक शिक्षा के बारे मे', प्रगति प्रकाशन, मास्को १६८३, पृष्ठ ६६)।

* यहां अभिप्राय अखिल सघीय कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति द्वारा २१ अप्रैल १६३२ को स्वीकृत 'पायोनियर संगठन के काम के बारे में' निर्णय से है। इसमें यह कार्यभार रखा गया था कि पायोनियर टोलियों में भी और अन्य सभी बच्चों में भी शिक्षा, श्रम और समाजोपयोगी व्यवहारिक कार्य के प्रति समाजवादी रवैया बनाना पायोनियर संगठन का केंद्रीय कार्यभार हो। कोमसोमोल के नेतृत्व में स्कूल के संगठनों और जनशिक्षा निकायों के साथ घनिष्ठ सहयोग करते हुए शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने, सचेतन अनुशासन लाने, स्कूली शिक्षा पोलीटेक्निकल बनाने के लिए नियमबद्ध रूप से संघर्ष किया जाये।

बीते चरण पर दृष्टिपात (१६३२)

[1] व्ला० इ० लेनिन, 'पार्टी कार्यक्रम पुनरीक्षण संबंधी सामग्री', अप्रैल – मई, १६१७।

[2] वही।

[3] यहां चर्चा 'मजदूरों का तात्कालिक कार्यभार – बच्चों और किशोरों की श्रम-रक्षा' शीर्षक लेख की है।

[4] युद्धकालीन कम्युनिज्म – विवशतापूर्वक अपनायी गयी वह आर्थिक नीति थी जिसका अनुसरण १६१८–१६२० में किया गया था। उन वर्षों में शत्रु पर विजय पाने के लिए सभी उपलब्ध समाधन जुटाना आवश्यक था। इस नीति की प्रमुख विशेषताएं थीं – मालों के उत्पादन तथा वितरण का चरम केन्द्रीयकरण, स्वतंत्र व्यापार पर प्रतिबंध और हुक्मी वसूली, जिसके अनुसार किसानों को अपने उपभोग के अतिरिक्त शेष सारी कृषि उपज राज्य को देनी होनी थी।

[5] 'अर्थव्यवस्था का पुनर्गठन और पोलीटेक्निकल शिक्षा (१६३०)' लेख पर टिप्पणी १ देखें।

[6] 'उदीयमान पीढ़ी की सार्विक शिक्षा और पोलीटेक्निकल श्रम के बारे में लेनिन के विचार' लेख पर टिप्पणी ११ देखें।

अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति को पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में नोट का मसौदा (१९३६)

क्रूप्स्काया अपने जीवन के अन्तिम दिनो तक पोलीटेक्निकल और श्रम-शिक्षा के प्रश्नो पर काम करती रही। चौथे दशक के मध्य मे उन्होंने उन दिनों स्कूल के जीवन मे करने की प्रवृत्ति के "स्कूलो की कार्यशालाए और छात्रो का समाजोपयोगी श्रम बद किये जाने के" खतरे की ओर ध्यान दिलाया। इस प्रश्न पर उन्होने पार्टी की केंद्रीय समिति को कई पत्र लिखे। 'नोट के मसौदे' मे और इसके बाद के पत्रो मे उन्होंने पोलीटेक्निकल और श्रम-शिक्षा के मूलभूत सैद्धातिक-वैज्ञानिक आधार निरूपित किये, सामान्य शिक्षा विद्यालयो मे पोलीटेक्निकल और श्रम-शिक्षा का युक्तिसगत प्रबध करने के बारे मे सुझाव दिये।

व्ला० इ० लेनिन, युवक सघो के कार्यभार (व्ला० इ० लेनिन 'सार्वजनिक शिक्षा के बारे मे प्रगति प्रकाशन मास्को १९८३ पृष्ठ ९६।

वही, पृष्ठ ९९।

चर्चा केंद्रीय समिति के निम्न निर्णयो की है प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयो के बारे मे' (१९३१) तथा 'प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयो के पाठ्यक्रमों तथा दिनचर्या के बारे मे (१९३२)।

परिच्छेद ३। श्रम-शिक्षा और चरित्र-निर्माण

क्या लड़कों को "औरतों के काम" सिखाने चाहिए? (१९१०)

'वेस्त्निक वोस्पितानिया' (शिक्षा-दीक्षा दूत) – माता-पिताओं और शिक्षको के लिए सुबोध वैज्ञानिक पत्रिका, जो १८९० से १९१७ तक मास्को मे प्रकाशित होती रही।

[1] शात्स्की की अपनी रचनाओं में "स्वतंत्र स्कूल", की चर्चा करते समय क्रुप्सकाया यह स्पष्ट करती थी कि ऐसा स्कूल, ऐसी शिक्षा-पद्धति समाजवादी समाज में मजदूर वर्ग द्वारा ही बनाई जा सकती है।

बाल मंडलियों का काम (१९२६)

[1] **जान हेनरिक पेस्तालोत्सी** (१७४६–१८२७) स्विट्ज़रलैंड के जनवादी शिक्षाशास्त्री, जन विद्यालयों के एक प्रवर्तक। इन्होंने मातृ भाषा, अकगणित, भूगोल और सरल ज्यामिति की प्राथमिक शिक्षा का सामान्य सिद्धांत और विधि सबसे पहले तैयार की। अपने बुनियादी शिक्षा सिद्धांत में पेस्तालोत्सी ने शिक्षण को बच्चे के चरित्र-निर्माण और विकास के साथ जोड़ा। शिक्षा को उत्पादक श्रम से संलग्न करने का विचार विकसित किया। नेइहोफ और स्ताज़ मे अनाथालय तथा इवेरदन मे अध्यापन प्रशिक्षण संस्थान खोला।

केंद्रीय समिति के स्कूल विभाग के, साथी म० प० मालिशेव के नाम पत्र

[1] 'अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति को पोलीटेक्निकल शिक्षा के बारे में नोट का मसौदा' पर टिप्पणी १ देखें।

[2] मालिशेव, म० प० (१८८८–१९७५) – सोवियत सत्ता के पहले वर्षों से ही एक प्रमुख शिक्षाकर्मी। १९३१–१९४३ मे शिक्षा जन-कमिसारियत के अनुसंधान संस्थानो, अखिल संघीय कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) की केंद्रीय समिति के स्कूल विभाग और अध्यापन प्रशिक्षण संस्थानों में काम किया। १९३८ से १९६६ तक 'नचाल्नया स्कोल [illegible] शिक्षा) पत्रिका के संपादक रहे।

परिच्छेद ४। स्कूल छात्रों का व्यवसाय-चयन संबंधी मार्गदर्शन

व्यवसाय का चयन (१६२५)

चर्चा लेनिन के निम्न लेखों की है 'विद्युतीकरण की रिपोर्ट पर प्रस्ताव का मसविदा' तथा 'शिक्षा जन-कमिसारियत के कम्युनिस्ट कर्मियों को केंद्रीय समिति के निर्देश', १६२०।

समाजवाद के निर्माण के सभी कार्यों के लिए कर्मी तैयार करें

व्ला० इ० लेनिन, 'नयी पीढ़ी को', १६१६।

व्ला० इ० लेनिन, 'प्रेस्न्या क्षेत्र के गैर-पार्टी सम्मेलन में भाषण', १६२०।

व्यवसाय का सही चयन (१६३२)

का० मार्क्स, 'पूंजी', खंड १, प्रगति प्रकाशन, मास्को, १६७५, पृष्ठ ५४६-५५०।

व्यवसाय का स्वतंत्र चयन (१६३६)

ज़ां जाक रूसो (१७१२-१७७८) फ्रांसीसी ज्ञानप्रसारक, दार्शनिक, लेखक। यूरोप के प्रगतिशील चिंतन, दर्शन, साहित्य और शिक्षाशास्त्र पर इनका प्रभाव पड़ा। अपनी रचनाओं में इन्होंने सामाजिक असमानता का विरोध किया। 'एमील अथवा शिक्षा-दीक्षा के बारे में' नामक अपने उपन्यास में इन्होंने नैसर्गिक अधिकार के अपने सिद्धांत की भावना में नव मानव के निर्माण की अपनी योजना पेश की। '~